उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था, भूगोल, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र, सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, भारतीय अर्थव्यवस्था, जनसंख्या एवं नगरीकरण, उत्तर प्रदेश : सामान्य-ज्ञान

अध्यायवार सॉल्व्ड पेपर्स

प्रधान सम्पादक
आनन्द कुमार महाजन

सम्पादन एवं संकलन
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स PCS परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
मो. : 9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा
प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने ओम साईं ऑफसेट, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 995/-

विषय-सूची

■ उत्तर प्रदेश बज़ट : 2023-24 (एक नज़र) ----------9-12

भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन

प्राचीन भारत का इतिहास ---------- 13-97

■ भारत की प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ (India's Prehistoric Culture)----------13
■ सिन्धु सभ्यता एवं संस्कृति (Indus Civilization and Culture)----------17
■ ऋग्वैदिक एवं उत्तर-वैदिक काल (Rigvedic and Post Vedic Era)---24
■ धार्मिक आन्दोलन (Religious Movement) ----------33
■ मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire) ----------47
■ मौर्योत्तर कालीन भारत (Post-Mauryan Period of India) -------56
■ प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमण (Foreign Invasion on Ancient India)----------60
■ संगम युग (चेर, चोल, पाण्ड्य) (Sangam Period - Chera, Chole, Pandyan)----------60
■ दक्षिण भारत का इतिहास (चोल, चालुक्य, पल्लव) (History of South (Deccan) India - Chola, Chalukya, Pallava)---------62
■ गुप्त काल (Gupta Period) ----------67
■ गुप्तोत्तर काल (Post-Gupta Period) ----------72
■ प्राचीन भारत में स्थापत्य कला (India's Ancient Architecture)------75
■ प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकार (Ancient Literature and Litterateur)----------81
■ पूर्व मध्य काल (800-1200 ई.) (Pre-Medieval Period) ------87
■ विविध (Miscellaneous) ----------92

मध्यकालीन भारत का इतिहास ----------98-177

■ अरबों का आक्रमण एवं सिन्ध विजय (Invasion of Arabians and Sindh Victory) ----------98
■ मुहम्मद गोरी का आक्रमण एवं दिल्ली सल्तनत की स्थापना (Invasion of Mohammad Gauri & Establishment of Delhi Saltanat) ----------99
■ गुलाम वंश (Slave Dynasty)---------- 100
■ खिलजी वंश (Khilji Dynasty)---------- 104
■ तुगलक वंश (Tughluq Dynasty)---------- 108
■ सैय्यद एवं लोदी वंश (Sayyad and Lodi Dynasty) ---------- 112
■ सल्तनत कालीन स्थापत्य एवं कला (Art and Architecture in Saltanat Period) ---------- 112
■ सल्तनत कालीन साहित्य एवं साहित्यकार (Literature and Litterateur in Saltanate Period) ---------- 114
■ विजयनगर, बहमनी तथा अन्य प्रान्तीय राजवंश (Vijaynagar, Bahmani and other Provincial Dynasty)---------- 118
■ भक्ति एवं सूफी आन्दोलन (Bhakti and Sufi Movement)----- 123
■ सल्तनत काल–विविध (Saltanat Period)---------- 130
■ बाबर का आक्रमण एवं मुगल वंश की स्थापना (Invasion of Babar and Establishment of Mughal Empire) ---------- 135
■ हुमायूं एवं शेरशाह (Humayun and Shershah)---------- 137
■ अकबर (Akbar) ---------- 138
■ जहांगीर एवं शाहजहाँ (Jahangir and Shahjahan) ---------- 144
■ औरंगजेब (Aurangzeb)---------- 150
■ उत्तरवर्ती मुगल (Later Mughal Period) ---------- 152
■ मुगलकालीन स्थापत्य एवं कला (Art and Architecture in Mughal Period)---------- 154
■ मुगलकालीन साहित्य एवं साहित्यकार (Literature and Litterateur in Mughal Period) ---------- 159
■ शिवाजी एवं मराठा साम्राज्य (Shivaji and Maratha Dynasty) ---- 163
■ मुगलकालीन-विविध (Mughal Period - Miscellaneous)------ 170

आधुनिक भारत का इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन -- 178-340

■ मुगल साम्राज्य का पतन एवं यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Decline of Mughal Empire and Advent of European Company)---------- 178
■ स्वायत्त राज्यों का उदय–अवध, मैसूर, पंजाब एवं बंगाल (Emergence of Autonomous States-Awadh, Mysore, Punjab and Bengal) ---------- 182
■ आंग्ल-मराठा संघर्ष (Anglo-Maratha Struggle)---------- 186
■ ईस्ट इण्डिया कंपनी और बंगाल के नवाब (East India Company and the Nawab of Bengal)--------- 187
■ कंपनी की देशी राज्यों के प्रति नीतियाँ (Policies of Company towards Indigenous Kingdom)--- 190
■ ब्रिटिश कालीन राजस्व एवं न्यायिक सुधार (Revenue and Judicial Reforms in British Period) ------- 192
■ ब्रिटिश शासन का भारत पर आर्थिक प्रभाव (Economic Impact of British Government on India)----- 194
■ 1857 का स्वतंत्रता संग्राम (Freedom Struggle of 1857) ------ 198
■ जनजातीय विद्रोह (Tribal Revolt)---------- 204
■ प्रारंभिक नागरिक एवं कृषक विद्रोह (The Early Citizen and Farmer Revolt)---------- 207
■ सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन (Social and Religious Reform Movements)---------- 208
■ आधुनिक भारत में शिक्षा एवं प्रेस का विकास (Development of Education and Press in Modern India)---------- 219
■ 1885 से पूर्व स्थापित राजनीतिक संस्थाएँ (Establishment of Political Entities Before 1885)-------- 224
■ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस-स्थापना, कार्य-प्रणाली एवं महत्वपूर्ण अधिवेशन (Indian National Congress-Establishment, Function and Important Conferences) ---------- 226
■ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदारवादी चरण–1885 से 1905 तक (Moderate Period of Indian National Congress 1885-1905) - 230
■ बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आन्दोलन (Partition of Bengal and Swadeshi Movement) ---------- 232
■ कांग्रेस का सूरत विघटन एवं क्रांतिकारी आन्दोलन (Surat Split of Congress and Revolutionary Movements) -- 235
■ मुस्लिम लीग–गठन एवं कार्य प्रणाली (Muslim League-Formation and Function) ---------- 242
■ दिल्ली दरबार और बंगाल विभाजन का निरस्तीकरण (Delhi Darbar and Revoke of Bengal Partition) ---------- 244
■ लखनऊ समझौता (Lucknow Pact) ---------- 245
■ होमरूल आन्दोलन (Homerule Movement)---------- 245
■ गाँधीवादी युग का प्रारंभ–दक्षिण अफ्रीका से रौलेट सत्याग्रह तक (Startup of Gandhian period-from South Africa to Rowlatt Satyagraha)---------- 247
■ साम्यवादी आन्दोलन एवं विभिन्न दल (Communist Movement and Various Parties) ---------- 254
■ खिलाफत आन्दोलन (Khilafat Movement)---------- 255
■ असहयोग आन्दोलन (Non-cooperation Movement)--------- 256
■ किसान आन्दोलन एवं किसान सभाओं का गठन (Peasant Movements and Formation of Kisan Sabha)--- 260

- भारत के बाहर क्रांतिकारी गतिविधियाँ (Revolutionary Activities Abroad India) ---------- 261
- स्वराज पार्टी का गठन (Formation of Swaraj Party)--------- 262
- साइमन कमीशन एवं नेहरू रिपोर्ट (Simon Commission and Nehru Report) ---------- 264
- कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन एवं पूर्ण स्वराज 1929 (Congress Lahore Conferences and Complete Swaraj 1929)-------- 266
- सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं दांडी मार्च (Civil Disobedience Movement and Dandi March)------ 267
- गाँधी-इरविन समझौता, कराची अधिवेशन एवं गोलमेज सम्मेलन (Gandhi-Irwin Pact, Karachi Session and Round Table Conference) ---------- 269
- साम्प्रदायिक अधिनिर्णय एवं पूना समझौता (Communal Adjudica and Pune Pact) ---------- 271
- कांग्रेस समाजवादी पार्टी (Congress Samajwadi Party)------- 272
- प्रान्तीय चुनाव तथा मंत्रिमण्डलों का गठन (Provincial Elections and Constitution of Cabinet)------ 273
- कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन एवं फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन (Tripuri Convention of Congress and Organisation of Forward Block)---------- 273
- देशी रियासतों में संघर्ष (Struggle Between Desi Riyasate) - 274
- द्वितीय विश्वयुद्ध एवं राष्ट्रीय आन्दोलन-अगस्त प्रस्ताव, पाकिस्तान की मांग एवं व्यक्तिगत सत्याग्रह (Second World war & National Movement–August Offer, Demand of Pakistan and Individual Satyagraha) --------- 274
- क्रिप्स मिशन एवं भारत छोड़ो आन्दोलन (Cripps Mission and Quit India Movement)---------- 275
- आजाद हिन्द फौज (Azad Hind Army)---------- 280
- कैबिनेट मिशन योजना, संविधान सभा एवं अंतरिम सरकार का गठन (Cabinet Mission Plan, Constituent Assembly and Constitution of Interim Government)---------- 281
- माउंटबेटन योजना, भारत का विभाजन एवं स्वतंत्रता (Mountbatten plan, Partition and Independence of India) ---------- 284
- भारत का संवैधानिक विकास (Constitutional Development of India) ---------- 286
- आधुनिक भारत की महत्वपूर्ण संस्थाएं व उनके संस्थापक (Important Institutions and their Founders in Modern India) ---------- 291
- भारत के विभिन्न गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय (Governors, Governor-Generals and Viceroys of India)---- 296
- विभिन्न पत्र/पत्रिकाएं, पुस्तकें एवं उनके लेखक/सम्पादक (Various Newspapers/Magazines, Books and their Writers/Editors)---------- 302
- विविध (Miscellaneous) ---------- 319

भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

भाग-1 : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 341-369

- भारत का संवैधानिक विकास (Constitutional Development of India).....341
- संविधान सभा का गठन, कार्य प्रणाली एवं विभिन्न समितियाँ (The Making of the Constitutional Assembly, its Function and Related Committees) 345
- संविधान पर विदेशी प्रभाव (Foreign Effects on Constitution).....347
- संविधान की प्रस्तावना/उद्देशिका-विषय वस्तु एवं महत्त्व (Preamble of the Constitution - Subject & its Importance) 349
- संविधान में अनुच्छेद, अनुसूची एवं विभिन्न भाग (Articles, Schedule & Parts of the Constitution) 352
- संघ एवं इसका राज्यक्षेत्र (The Union & its Territory) 366

भाग-2 : संविधान के मूल तत्त्व 369-384

- नागरिकता (Citizenship).....369
- मूल अधिकार (Fundamental Rights) 370
- राज्य के नीति निदेशक तत्त्व (Directive Principles of State Policy) 378
- मूल कर्त्तव्य (Fundamental Duties) 382

भाग-3 : सरकार की शासन प्रणाली 384-395

- संसदीय व्यवस्था (Parliamentary System) 384
- संघीय व्यवस्था (Federal System).....387
- केन्द्र-राज्य सम्बंध (Centre-State Relations).....390
- अंतर्राज्यीय सम्बंध (Inter-State Relations).....392
- आपातकालीन उपबंध (Emergency Provisions) 393

भाग-4 : संसद.....395-435

- संरचना एवं कार्यप्रणाली (Structure & Its Function) 395
- राष्ट्रपति (President) 401
- उपराष्ट्रपति (Vice-President).....410
- लोक सभा (Loksabha).....412
- राज्य सभा (Rajya Sabha) 419
- प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद (Prime Minister & Council of Ministers) 422
- संसदीय समितियाँ एवं विभिन्न प्रस्ताव (Parliamentary Committees) 425
- विभिन्न संविधान संशोधन एवं उसकी प्रक्रिया (Various Constitutional Amendments and its Procedure).....429
- वरीयता अनुक्रम (Sequence of Precedence/Seniority)------- 434

भाग-5 : राज्य सरकार की संरचना एवं कार्यप्रणाली --- 435-441

- राज्यपाल/उपराज्यपाल (Governor/Lieutenant Governor) ---- 435
- राज्य विधानमंडल (State Legislature)---------- 437
- मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद (Chief Minister and Council of Ministers) ---------- 439
- कुछ राज्यों हेतु विशिष्ट उपबंध (Special Provisions of some States) ---------- 440

भाग-6 : न्यायपालिका ---------- 441-449

- उच्चतम न्यायालय-गठन, शक्तियाँ एवं क्षेत्राधिकार (Supreme Court- Establishment, Empowerment & Jurisdiction) ---------- 441
- उच्च न्यायालय-गठन, शक्तियाँ एवं क्षेत्राधिकार (High Court-Establishment, Empowerment and Jurisdiction) ---------- 447
- अधीनस्थ न्यायालय एवं प्राधिकरण (Subordinate Court and Tribunals) ---------- 448

भाग-7 : स्थानीय शासन ---------- 449-459

- पंचायती राज का विकास एवं संरचना (Development & Structure of Panchayatiraj) ---------- 449
- नगरीय शासन (Urban Government) ---------- 457

भाग-8 : संवैधानिक निकाय ---------- 459-469

- निर्वाचन आयोग (Election Commission)---------- 459
- वित्त आयोग (Finance Commission) ---------- 462
- भारत का नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (Comptoller and Auditor General of India) ---------- 464
- संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग (Union and State Public Service Commission) ---------- 465

■ अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों हेतु राष्ट्रीय आयोग (National Commission for Scheduled Castes & Scheduled Tribes) ---------- 467
■ भारत का महान्यायवादी एवं राज्य का महाधिवक्ता (The Attorney General of India & The Advocate General of State)---------- 467
■ राजभाषा एवं लोक सेवाएँ (State Language & Public Services) ---------- 468
भाग-9 : गैर संवैधानिक निकाय---------- 469-473
■ योजना आयोग/नीति आयोग (Planning Commission/Niti Commission) ---------- 469
■ राष्ट्रीय विकास परिषद (National Development Council)----- 470
■ राष्ट्रीय एवं राज्य मानवाधिकार आयोग/केन्द्रीय एवं राज्य सूचना आयोग (National & State Human Right Commission) Central & State Information Commission) ---------- 470
■ लोकपाल एवं लोकायुक्त (Lokpal and Lokayukta)---------- 471
■ विभिन्न महत्वपूर्ण आयोग (Various Important Commission) ----- 472
भाग-10 : राजनीतिक गतिशीलता ---------- 473-484
■ राजनीतिक दलों का गठन एवं मान्यता (Structure and Affiliation of Political Parties) ---------- 473
■ दल बदल कानून (Law of Defection)---------- 475
■ विविध (Miscellaneous)---------- 475

भूगोल

भारत का भूगोल---------- 485-590
■ **सामान्य परिचय (General Introduction).....485**
A भारत की भौगोलिक अवस्थिति..... 485
B कर्क रेखा एवं मानक समय..... 486
C राज्य एवं संघ शासित प्रदेश..... 487
D सीमावर्ती देश..... 489
E अन्य तथ्य..... 491
■ **पर्वतीय, पठारी एवं मैदानी क्षेत्र (Mountain, Plateau and Plain Area).....491**
A पर्वतीय एवं पहाड़ी क्षेत्र..... 491
B पठारी एवं मैदानी क्षेत्र..... 496
■ **अपवाह तंत्र (Drainage System).....498**
A सिंधु नदी..... 498
B ब्रह्मपुत्र नदी..... 499
C गंगा नदी..... 499
D यमुना नदी. 501
E नर्मदा नदी..... 502
F तापी/ताप्ती नदी..... 503
G गोदावरी नदी..... 503
H कृष्णा नदी..... 504
I कावेरी नदी..... 504
J दामोदर नदी..... 504
K महानदी..... 505
L अन्य नदियाँ..... 505
■ **तटीय भाग एवं द्वीप समूह (Coastal Part and the Islands) ----------510**
A तटीय भाग---------- 510
B द्वीप समूह---------- 511
C अन्य तथ्य---------- 511
■ **प्रमुख घाटियाँ, जलप्रपात एवं झीलें (Major Valleys, Waterfalls and Lakes) ----------512**
A प्रमुख घाटियाँ---------- 512
B जल प्रपात---------- 512
C झीलें---------- 514
D अन्य तथ्य---------- 516
■ **भारत के प्रमुख दर्रे (Major Passes of India) --------517**
■ **मानसून एवं वर्षा (Monsoon and Rainfall)----------519**
A पश्चिमी विक्षोभ---------- 519
B दक्षिणी-पश्चिम मानसून---------- 519
C उत्तरी-पूर्वी मानसून---------- 521
■ **वन (Forest) ----------521**
A वनावरण---------- 521
B वृक्षावरण---------- 524
C मैंग्रोव---------- 525
■ **प्राकृतिक आपदायें (Natural Disasters)----------526**
■ **चट्टान या शैल एवं मृदा (Rock and Soil) ----------527**
A धारवाड़ शैल---------- 527
B गोण्डवाना शैल---------- 528
C जलोढ़ मृदा---------- 529
D काली मृदा---------- 529
E लाल एवं पीली मृदा---------- 529
F लैटेराइट मृदा---------- 530
G अन्य तथ्य---------- 530
■ **सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएँ (Irrigation and River Valley Projects) ----------531**
■ **खनिज संसाधन (Mineral Resources) ----------539**
A कोयला---------- 539
B लौह अयस्क---------- 543
C ताँबा---------- 544
D बॉक्साइट---------- 545
E अभ्रक---------- 545
F सीसा एवं जस्ता---------- 545
G मैंगनीज---------- 546
H अन्य खनिज---------- 546
■ **ऊर्जा संसाधन (Energy Resources) ----------552**
A पेट्रोलियम---------- 552
B परमाणु---------- 554
C जल विद्युत---------- 555
D ताप विद्युत---------- 556
E पवन ऊर्जा---------- 557
F सौर ऊर्जा---------- 558
G अन्य तथ्य---------- 558
■ **उद्योग एवं व्यापार (Industries and Trade)----------560**
A लौह इस्पात उद्योग---------- 560
B एल्युमीनियम उद्योग---------- 560
C कृषि आधारित उद्योग---------- 561
D औद्योगिक प्रदेश---------- 562
E अन्य उद्योग---------- 563
■ **परिवहन (Transportation) ----------566**
A सड़क परिवहन---------- 566
B रेल परिवहन---------- 568
C जल परिवहन एवं बन्दरगाह---------- 569
D आन्तरिक जल परिवहन---------- 572
■ **मानव प्रजातियाँ (Human Races) ----------572**
■ **प्रमुख अनुसंधान केन्द्र (Major Research Institutes)----- 578**
■ **विविध (Miscellaneous) ----------583**

विश्व का भूगोल---------- 591-685

■ **ब्रह्माण्ड एवं सौरमण्डल**
(The Universe and Solar System) ---------- 591
A सौरमण्डल---------- 591
B ग्रह एवं उपग्रह---------- 594
C अन्य तथ्य---------- 598

■ **अक्षांश एवं देशांतर रेखाएं**
(The Latitude & Longitude Lines)---------- 598
A अक्षांश रेखा---------- 598
B देशान्तर एवं मानक समय---------- 600
C विषुवत रेखा---------- 602

■ **विश्व के देश, राजधानी एवं सीमाएँ**
(The countries of the world, Capital & Boundaries) ---- 603
A महाद्वीप---------- 603
B देश एवं राजधानी---------- 604
C नगर एवं शहर---------- 610
D सीमायें---------- 611

■ **विश्व के प्रमुख नगर एवं भौगोलिक उपनाम**
(Major Cities of the World & Geographical Surnames) ---- 613

■ **भूगर्भिक इतिहास एवं शैलतंत्र**
(Geological History & Rock System) ---------- 614

■ **पर्वत, पठार एवं मरुस्थल ---------- 615**
A पर्वत---------- 615
B पठार---------- 618
C मरुस्थल---------- 619

■ **ज्वालामुखी एवं भूकम्प**
(The Volcano & Earthquakes)---------- 620
A ज्वालामुखी---------- 620
B भूकम्प---------- 622

■ **अपवाह तंत्र एवं नदियों के किनारे स्थित नगर**
(The Drainage System and The Riverside Cities)-------- 623
A एशिया---------- 623
B यूरोप---------- 625
C अफ्रीका---------- 627
D उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका---------- 628
E आस्ट्रेलिया---------- 628
F बाँध---------- 628

■ **महासागर एवं सागर, प्रवाल भित्ति**
(The Ocean & Sea, Coral Reef)---------- 629
A महासागर---------- 629
B सागर---------- 630
C प्रवाल भित्ति---------- 631

■ **महासागरीय जलधारायें (Oceanic Water Currents)------ 632**
A गर्म जलधारायें---------- 632
B ठण्डी जलधारायें---------- 633
C अन्य तथ्य---------- 633

■ **महासागरीय गर्त एवं जलसन्धियाँ ---------- 634**
A महासागरीय गर्त---------- 634
B जलसन्धियाँ---------- 635

■ **खाड़ी एवं द्वीप समूह (The gulf & Island)---------- 636**
A खाड़ी---------- 636
B द्वीप समूह---------- 637

■ **झीलें एवं जल प्रपात (The Lakes & Waterfalls) --------- 640**
A झीलें---------- 640
B जल प्रपात---------- 643

■ **विश्व की प्रमुख घाटियाँ एवं स्थलरूप---------- 643**

■ **वायुमण्डल का संघटन (Composition of the Atmosphere) - 644**

■ **वायुदाब, आर्द्रता एवं पवन संचार**
(Airpressure, Humidity & Wind Blow)---------- 646
A वायुदाब---------- 646
B आर्द्रता---------- 647
C पवन संचार---------- 647

■ **चक्रवात (The Cyclone) ---------- 649**

■ **जलवायु एवं घास मैदान (The Climate and Grasslands) --- 650**
A जलवायु---------- 650
B घास के मैदान---------- 653

■ **वन एवं मृदा (The Forest and Soil) ---------- 654**
A वन---------- 654
B मृदा---------- 656

■ **खनिज संसाधन (The Mineral Resources)---------- 657**
A लौह अयस्क---------- 657
B ताँबा---------- 658
C कोयला---------- 659
D अन्य खनिज---------- 660

■ **ऊर्जा संसाधन (The Energy Resources) ---------- 664**

■ **औद्योगिक क्षेत्र (The Industrial Zone)---------- 665**

■ **मानव प्रजातियाँ (Human Races)---------- 668**

■ **परिवहन (Transportation)---------- 672**
A रेल परिवहन---------- 672
B बन्दरगाह---------- 673

■ **कृषि एवं पशुपालन**
(Agriculture and Animal Husbandry) ---------- 675

■ **विविध (Miscellaneous)---------- 680**

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र

■ पर्यावरण : एक परिचय (Environment : An Introduction) 686
■ जैव मण्डल एवं बायोम (Biosphere and Biome) 687
■ पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्र (Ecology & Eco-system) 689
■ पारिस्थितिकी तंत्र के प्रकार एवं पदार्थों का संचरण (Types of Ecosystem and Transmission of Materials).... 693
■ पर्यावरण प्रदूषण (Environmental Pollution)..... 696
■ जैव-विविधता एवं उसका संरक्षण (Bio-diversity and its Conservation)..... 702
■ ग्रीन हाउस गैसें एवं उनका प्रभाव (Green House Gases and their Effect) 705
■ जलवायु परिवर्तन एवं उससे सम्बन्धित संगठन एवं सम्मेलन (Climatic Change with Organisation and Conferences related to it)..... 708
■ ओज़ोन क्षरण एवं नियंत्रण हेतु अंतर्राष्ट्रीय प्रयास (Ozone Depletion and International attempts related to it) ------- 710
■ वन, वन्य जीव एवं इसका संरक्षण (Conservation of Forests and its Animals) ---------- 712
■ अभ्यारण्य एवं जैव मण्डल रिजर्व (Sanctuaries and Bioreserves)---------- 718
■ ऊर्जा संसाधन (Energy Sources) ---------- 727
■ पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (Various National and International conferences related to conservation of Environment)---------- 729
■ जल संरक्षण (Water Conservation)---------- 732
■ विविध (Miscellaneous) ---------- 733

सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

भौतिक विज्ञान (Physics)----------740-792

- मात्रक/मापन/विभिन्न मापक यंत्र/भौतिक राशियाँ (Units/Measurement/Different Measuring Instruments/Physical Quantities) ---------- 740
- यांत्रिकी, गुरुत्वाकर्षण एवं गुरुत्व के अधीन गति (Mechanics, Gravitation & Motion Under Gravity) ---------- 747
- स्थूल पदार्थों के गुण (Properties of Macro Matters)--------- 753
- ध्वनि एवं तरंग गति (Sound & Wave Motion) ---------- 756
- ऊष्मा एवं ऊष्मागतिकी (Heat and Thermodynamics) -------- 764
- प्रकाश (Light)---------- 770
- विद्युत एवं विद्युतचुम्बकीय प्रेरण/इलेक्ट्रॉनिक्स (Electricity & Electro-Magnetic Induction/Electronics)-------- 780
- चुम्बकत्व (Magnetism)---------- 786
- नाभिकीय भौतिकी/आविष्कार (Nuclear Physics/Inventions) ------ 787
- विविध (Miscellaneous) ---------- 790

रसायन विज्ञान (Chemistry)---------- 793-831

- पदार्थों का वर्गीकरण/अणु/परमाणु भार (Classification Of Matters/Molecule/Atomic Weight)---------- 793
- भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन (Physical And Chemical Changes)---------- 794
- अम्ल/क्षार/लवण/पी.एच. मान (Acid/Base/Salt/Ph Value) --- 794
- परमाणु संरचना (Atomic Structure) ---------- 795
- अधातुएँ/अधात्विक यौगिक (Non-Metals/Non-Metallic Compounds)---------- 797
- धातुएँ/धात्विक यौगिक (Metals/ Metallic Compounds)------ 801
- खनिज एवं अयस्क/उत्प्रेरक (Mineral And Ores/Catalyst) --- 807
- अक्रिय गैसें (Inert Gasses)---------- 808
- मिश्र धातुएँ (ALLOY'S) ---------- 809
- अपमार्जक/उर्वरक/बहुलक/सीमेंट (Detergent/Fertilizer/Polymers/Cement) ---------- 810
- कार्बनिक रसायन (Organic Chemistry)---------- 813
- ईंधन/विस्फोटक पदार्थ/काँच/कीटनाशक (Fules/Explosives/Glass/Insecticide)---------- 816
- रेडियो सक्रियता (Radio Activity) ---------- 821
- विविध (Miscellaneous) ---------- 823

जीव विज्ञान (Biology)----------832-916

- जीव विज्ञान का परिचय एवं विभिन्न शाखाएं/उपशाखाएँ (Introduction of Biology & Its Different Branches/Sub-branches) ---------- 832
- जीव एवं जीवधारियों का वर्गीकरण (Organism and Classification Of Living Organism) ---- 832
- जैव विकास एवं आनुवंशिकी (Organic Evolution & Genetics)---------- 835
- कोशिका, ऊतक एवं अंग (Cell, Tissues & Organs)---------- 837
- मानव शरीर क्रिया विज्ञान (Human Physiology)---------- 839
- प्रोटीन, विटामिन, पोषण एवं इनसे संबंधित रोग (Protein, Vitamins, Nutrition & Related Diseases)------- 857
- सूक्ष्म जीव/अन्य कारकों से होने वाले रोग-उपचार तथा उनसे संबंधित उपकरण (Diseases Caused By Micro-Organisms/ Other Factors - Its Treatment & Related Equipment) ------ -874
- पादप जगत एवं प्रकाश संश्लेषण (Plant Kingdom And Photosynthesis)---------- 890
- जीवाणु, विषाणु एवं कवक (Bacteria, Virus & Fungus)------ 899
- विविध (Miscellaneous)---------- 902

विज्ञान-प्रौद्योगिकी (Science-Technology) -------917-944

- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी (Space Technology)---------- 917
- रक्षा प्रौद्योगिकी (Defence Technology)---------- 922
- आनुवंशिक इंजीनियरिंग एवं जैव प्रौद्योगिकी (Genetic Engineering & Bio-Technology) ---------- 925
- कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी (Computer & Information Technology) ---------- 928
- विविध (Miscellaneous)---------- 938

भारतीय अर्थव्यवस्था

- भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएं.....945
- आर्थिक विकास एवं नियोजन.....946
- राष्ट्रीय आय.....954
- कृषि क्षेत्र.....958
- उद्योग क्षेत्र.....962
- सेवा क्षेत्र.....970
- भारतीय वित्तीय प्रणाली : मुद्रा बाजार एवं पूँजी बाजार.....972
- बीमा क्षेत्र ----------992
- लोक वित्त (बजट एवं कराधान) ----------993
- वैदेशिक क्षेत्र ---------- 1005
- प्राकृतिक संसाधन एवं आधारभूत ढांचा ---------- 1012
- भारतीय अर्थव्यवस्था का सामाजिक क्षेत्र---------- 1014
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठन---------- 1030
- विविध---------- 1040

भारतीय कृषि, वाणिज्य एवं व्यापार

- **भारतीय कृषि, वाणिज्य एवं व्यापार.....1055-1078**

जनसंख्या एवं नगरीकरण

- **जनसांख्यिकी (Demographics)----------1079-1103**
  - भारतीय जनसंख्या (Indian Population)----------1079
  - भारतीय नगरीकरण (Indian Urbanization) ----------1091
  - विश्व जनसंख्या (World Population)----------1098
  - विश्व नगरीकरण (World Urbanization) ----------1100
  - विविध (Miscellaneous)----------1100

उत्तर प्रदेश सामान्य-ज्ञान

- संक्षिप्त अवलोकन----------1104
- भौतिक विन्यास----------1106
- जलवायु एवं मृदा----------1106
- प्राकृतिक वनस्पतियाँ, वन एवं वन्य जीव ----------1107
- नदियाँ, झीलें एवं आर्द्रभूमियाँ----------1110
- कृषि एवं पशुपालन----------1111
- सिंचाई एवं बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएं----------1116
- पर्यटन----------1117
- उद्योग----------1118
- खनिज एवं ऊर्जा संसाधन ----------1128
- परिवहन----------1130
- इतिहास----------1132
- कला एवं संस्कृति, नृत्य, मेले ----------1137
- साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाएं----------1147
- जनजातियाँ----------1148
- शिक्षा व्यवस्था एवं शोध संस्थायें----------1150
- राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था ----------1154
- महत्वपूर्ण योजनाएँ----------1159
- जनगणना-2011 ----------1163

पाठ्यक्रम : सामान्य अध्ययन

• राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनायें • भारत का इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • भारत एवं विश्व का भूगोल-भारत एवं विश्व का भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल • भारतीय राजनीति एवं शासन - संविधान, राजनीतिक व्यवस्था, पंचायती राज, लोकनीति, अधिकारिक मुद्दे (राइट्स इश्यूज) आदि • आर्थिक एवं सामाजिक विकास - सतत विकास, गरीबी, अन्तर्विष्ट जनसांख्यिकीय, सामाजिक क्षेत्र के इनिशियेटिव आदि • पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी सम्बन्धी सामान्य विषय, जैव विविधता एवं जलवायु परिवर्तन इस विषय में विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है • सामान्य विज्ञान

प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की पूर्व परीक्षाओं में पूछे गये सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण चार्ट

क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा वर्ष	कुल परीक्षा प्रश्न
	उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग	
A.	**U.P. P.C.S. (Pre)**	
	वर्ष 1991-1997	8 × 120 = 960
	वर्ष 1998-**2022**	25 × 150 = 3750
	वर्ष 2004 Spl., 2008 Spl., 2015 पुनर्परीक्षा	3 × 150 = 450
B.	**U.P. P.C.S. (Mains) (वस्तुनिष्ठ)**	
	वर्ष 2002-2016 (2002, 2003 में 1-1 प्रश्न-पत्र तथा 2004-2017 में 2-2 प्रश्न-पत्र)	30 × 150 = 4500
	वर्ष 2004 Spl., 2008 Spl. (प्रत्येक के दो प्रश्न-पत्र)	4 × 150 = 600
C.	**U.P. UDA/LDA/RO/ARO (Pre & Mains) Exam.**	
	U.P. UDA/LDA (Pre) 2001	1 × 150 = 150
	U.P. UDA/LDA (Pre) 2006	1 × 100 = 100
	U.P. RO/ARO (Pre) 2010	1 × 120 = 120
	U.P. RO/ARO (Pre) 2010 Spl., 2013, 2014, 2016 (निरस्त), 2017, Re-exam 2016, **2021**	7 × 140 = 980
	U.P. RO/ARO (Mains) 2010, Spl. 2010, 2013, 2014, 2017, 2016 (2020), **2021**	7 × 120 = 840
D.	**U.P. Lower Subordinate (Pre & Mains) Exam.**	
	U.P. Lower Subordinate (Pre) 1998, 2002, Spl. 2002, 2003, 2004, Spl. 2004, 2008, 2009	8 × 100 = 800
	U.P. Lower Subordinate (Pre) 2013, 2015	2 × 150 = 300
	U.P. Lower Subordinate (Mains) 2013, 2015	2 × 120 = 240
E.	**U.P.P.S.C. राजस्व निरीक्षक (प्री.) परीक्षा 2014**	1 × 100 = 100
F.	**U.P.P.S.C. वन संरक्षक अधिकारी परीक्षा**	
	उत्तर प्रदेश वन संरक्षक परीक्षा 2013, 2015, 2017	9 × 150 = 1350
	उत्तर प्रदेश वन संरक्षक परीक्षा 2018, 2019, 2020, **2021**	8 × 150 = 1200
G.	**U.P. PSC खाद्य सुरक्षा अधिनियम परीक्षा, 2013**	1 × 75 = 75
H.	**U.P. PSC खाद्य एवं सफाई निरीक्षक परीक्षा, 2013**	1 × 50 = 50
	U.P.P.S.C. स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी परीक्षा, 2006	1 × 150 = 150
	U.P.P.S.C. कर निरीक्षक अधिकारी परीक्षा, 2003 U.P.P.S.C. कर निरीक्षक अधिकारी परीक्षा, 1997	1 × 150 = 150 1 × 100 = 100
	U.P.P.S.C. सहायक अभियंता परीक्षा, 2004, 2007, 2007(II), 2008, 2011, 2013 U.P.P.S.C. सहायक अभियंता परीक्षा, 2019, **2021**	6 × 100 = 600 2 × 25 = 50
	U.P.P.S.C. खण्ड शिक्षा अधिकारी (BEO) परीक्षा, 2019	1 × 120 = 120
	UPPSC BEO Re-Exam, 2006 PART-I (Exam Date : 04.07.2009)	1 × 100 = 100
	UPPSC BEO Re-Exam, 2006 PART-II (Exam Date : 04.07.2009)	1 × 100 = 100
	UPPSC SDI Exam 2006 PART-I (Exam Date : 27.07.2008)	1 × 100 = 100
	UPPSC SDI Exam 2006 PART-II (Exam Date : 27.07.2008)	1 × 100 = 100
	UPPSC SDI Exam 2003 (Exam Date : 15.11.2005)	1 × 75 = 75
	UPPSC यूनानी स्वास्थ्य अधिकारी परीक्षा, 2016 (Exam Date : 22.01.2020) UPPSC यूनानी स्वास्थ्य अधिकारी परीक्षा, 2018 (Exam Date : 25.07.**2021**)	1 × 30 = 30 1 × 30 = 30
	UPPSC GDC प्रवक्ता परीक्षा, 2020 (15-03-**2022**)	1 × 40 = 40
	UPPSC GDC प्रवक्ता परीक्षा, 2017 (3-11-2019)	1 × 30 = 30
	UPPSC GDC प्रवक्ता परीक्षा, 2013 (27-12-2014)	1 × 30 = 30
	UPPSC सहायक सांख्यिकी अधिकारी परीक्षा, 2014 (11-11-2018)	1 × 30 = 30
	UPPSC ADO परीक्षा, 2014	1 × 30 = 30
	UPPSC मेडिकल ऑफिसर परीक्षा, 2021 (31.07.**2022**), **2022** (08.01.**2023**)	2 × 30 = 60
	UPPSC मेडिकल ऑफिसर परीक्षा, 2018 (30-09-2018)	1 × 30 = 30
	UPPSC डायट (DIET) प्रवक्ता परीक्षा, 2014 (15-03-2015)	1 × 30 = 30

	UPPSC GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2021 (19-09-2021)	1 × 40 = 40
	UPPSC GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2017 (23-09-2018)	1 × 30 = 30
	UPPSC GIC एल.टी.ग्रेड भर्ती परीक्षा, 2018 (29-07-2018)	1 × 30 = 30
	UPPSC GIC प्रवक्ता परीक्षा (शि.वि.), 2015 (25-09-2016)	1 × 30 = 30
	UPPSC GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2015 (15-09-2015)	1 × 30 = 30
	UPPSC पॉलिटेक्निक लेक्चरर परीक्षा, 2020 (22-03-2022)	1 × 25 = 25
	UPPSC पॉलिटेक्निक लेक्चरर परीक्षा, 2020 (12-12-2021)	1 × 25 = 25
	UPPSC आश्रम पद्धति प्रवक्ता परीक्षा, 2021 (26-09-2021)	1 × 40 = 40
	UPPSC आश्रम पद्धति प्रवक्ता परीक्षा, 2015 (04-10-2015)	1 × 30 = 30
	UPPSC GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2012 (14-06-2015)	1 × 30 = 30
	UPPSC आश्रम पद्धति प्रवक्ता परीक्षा, 2012 (02-06-2015)	1 × 30 = 30
	UPPSC GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2009 (22-05-2015)	1 × 30 = 30
	UPPSC आश्रम पद्धति प्रवक्ता परीक्षा, 2009 (12-05-2015)	1 × 30 = 30
	UPPSC राज्य कृषि सेवा परीक्षा, 2020 (01-08-2021)	1 × 40 = 40
	UPPSC स्टॉफ नर्स परीक्षा, 2017 (17.12.2017), 2021 (03-10-2021), 2022 (10.04.2022)	3 × 30 = 90
	UPPSC विधिक्षण अधिकारी परीक्षा, 2020	1 × 40 = 40
	UPPSC APS परीक्षा, 2007, 2013	2 × 100 = 200
	UPPSC पशु चिकित्सा अधिकारी परीक्षा, 2020 (15.05.2022)	1 × 30 = 30
	UPPSC सहायक रेडियो अधिकारी परीक्षा, 2018 (28.08.2022)	1 × 30 = 30
	UPPSC कम्प्यूटर सहायक परीक्षा, 2019 (23.08.2020)	1 × 25 = 25
	UPPSC सहायक प्रबंधक (गैर तकनीकी) परीक्षा, 2016 (22.11.2020)	1 × 100 = 100
	UPPSC माइन्स इंस्पेक्टर परीक्षा, **2021** (18.12.**2022**)	1 × 25 = 25
	UP PSC (J) and APO	
	UP PSC (J) 2003-2022	8 × 150 = 1200
	UP APO 2002-2022	8 × 50 = 400
	वैकल्पिक विषय (Optional Subject) के सामान्य अध्ययन सम्बन्धी महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न	
	उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान) (प्री) परीक्षा 1990-2011	168×120 = 20160
	कुल प्रश्न-पत्र = 380	**41290**

नोट- उपरोक्त प्रश्न-पत्रों के सम्यक विश्लेषण के उपरान्त यथा संभव समान प्रकृति एवं प्रवृत्ति से बचते हुए **सामान्य अध्ययन** से सम्बन्धित कुल **41290** प्रश्नों को अध्यायवार प्रस्तुत किया गया है। दुहराव वाले प्रश्नों का परीक्षा वर्ष एवं परीक्षा नाम यथास्थान निर्दिष्ट कर दिया गया है ताकि प्रश्न पूछने की तकनीकि का प्रतियोगियों को लाभ मिल सके।

Trend Analysis of General Studies Questions Through Pie Chart & Bar Graph

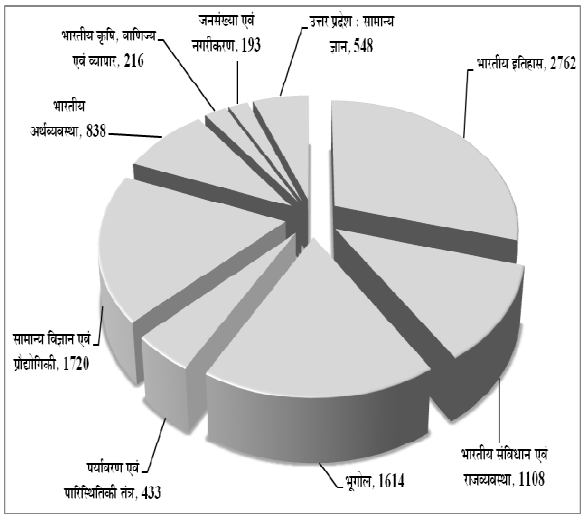

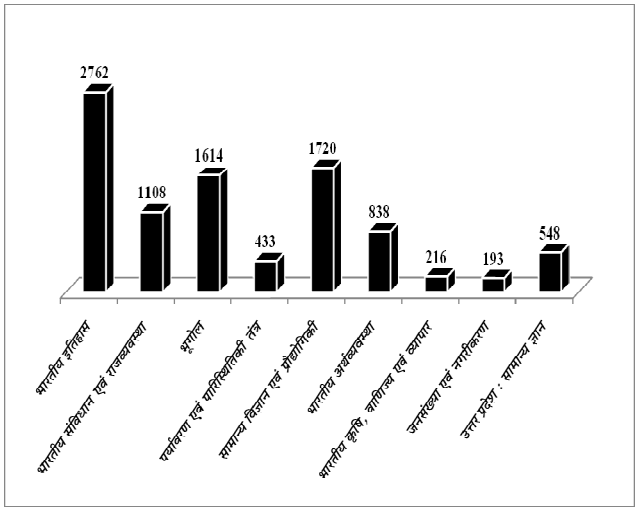

उत्तर प्रदेश बज़ट : 2023-24 (एक नज़र में)

- 22 फरवरी, 2023 को राज्य के वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 का बजट प्रस्तुत किया गया।
- भारत के संविधान के अनुच्छेद 202 के अधीन प्रत्येक वित्तीय वर्ष के संबंध में, जो 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है, राज्य सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और व्यय का जो विवरण विधान-मण्डल के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, उसे संविधान में 'वार्षिक वित्तीय विवरण' की संज्ञा दी गयी है। इस विवरण को ही बोलचाल की भाषा में 'बजट' कहा जाता है।
- वर्ष 2023-24 के बजट का आकार 690242.43 करोड़ रुपये का है। देश की जीडीपी में प्रदेश का योगदान 08 प्रतिशत से अधिक का है।
- वर्ष 2021-22 में प्रदेश के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जी.एस.डी.पी.) में 16.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जो देश के विकास दर से अधिक रही।

• राजस्व बचत-

राज्य की राजस्व बचत वर्ष 2021-2022 में ₹23,210.09 करोड़ अनुमानित किया गया था। वास्तविक आँकड़ों के अनुसार ₹ 33,430.06 करोड़ का राजस्व बचत हुयी है। वर्ष 2022-2023 के बजट अनुमानों के आधार पर राजस्व बचत ₹ 43,123.65 करोड़ अनुमानित था। पुनरीक्षित अनुमानों के अनुसार राजस्व बचत ₹53,907.26 करोड़ होने का अनुमान है। वर्ष 2023-2024 के आय-व्ययक में ₹68,511.65 करोड़ की राजस्व बचत अनुमानित है।

• राजकोषीय घाटा-

वर्ष 2021-2022 के वास्तविक आँकड़ों के अनुसार शुद्ध राजकोषीय घाटा ₹39,286.42 करोड़ है। वर्ष 2022-2023 के बजट अनुमानों के अनुसार राजकोषीय घाटा ₹ 81,177.98 करोड़ था, जो पुनरीक्षित अनुमानों के अनुसार बढ़कर ₹ 81,325.63 करोड़ होना अनुमानित है। वित्तीय वर्ष 2023-2024 में राजकोषीय घाटा ₹84,883.16 करोड़ होने का अनुमान है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद का 3.48 प्रतिशत है।

• पूँजीगत परिव्यय-

पूँजीगत परिव्यय से अवस्थापना सुविधाओं एवं आधारभूत सेवाओं का सृजन होता है। इन सेवाओं का विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान होता है। वास्तविक आँकड़ों के आधार पर वर्ष 2021-2022 में पूँजीगत परिव्यय के अन्तर्गत ₹ 71,442.55 करोड़ का व्यय किया गया है। वर्ष 2022-2023 के बजट अनुमान में पूँजीगत परिव्यय ₹ 1,23,919.85 करोड़ अनुमानित था, जो कि पुनरीक्षित अनुमानों में बढ़कर ₹ 1,26,601.11 करोड़ होना अनुमानित है। वित्तीय वर्ष 2023-2024 के बजट में पूंजीगत परिव्यय ₹1,47,492.29 करोड़ अनुमानित है।

• सकल कर प्राप्तियाँ/सकल राज्य घरेलू उत्पाद-

कर राजस्व का सकल राज्य घरेलू उत्पाद के साथ प्रतिशत वर्ष 2021-22 के वास्तविक आंकड़ों में 16.5 प्रतिशत, वर्ष 2022-23 के पुनरीक्षित अनुमानों में 17.3 प्रतिशत तथा वर्ष 2023-24 के बजट अनुमानों में 18.3 प्रतिशत है।

यह सकल राज्य घरेलू उत्पाद के सापेक्ष कर राजस्व प्राप्तियों में स्थायित्व सुधार इंगित करता है।

• ऋणकोष/सकल राज्य घरेलू उत्पाद-

वर्ष 2022-23 के पुनरीक्षित अनुमानों में 34.2 प्रतिशत और वर्ष 2023-24 के बजट अनुमान में 32.1 प्रतिशत है।

• सरकार की ऋणग्रस्तता-

वर्ष 2022-23 के बजट अनुमान में राज्य की ऋणग्रस्तता रुपये 6,66,153.39 करोड़ आगणित की गयी थी जिसके सापेक्ष पुनरीक्षित अनुमान रुपये 7,00,445.52 करोड़ है। वर्ष 2023-24 में इसके बढ़कर रुपये 7,84,113.65 करोड़ हो जाने का अनुमान है जो जीएसडीपी का 32.1 प्रतिशत है।

- वित्तीय वर्ष 2023-2024 के लिए जी.एस.डी.पी. में वृद्धि की दर 19 प्रतिशत अनुमानित की गई है।
- वर्ष 2017 से पूर्व, प्रदेश की बेरोजगारी दर 14.4 प्रतिशत थी, जो अब घटकर लगभग 4.2 प्रतिशत हो गई है।

वित्तीय वर्ष 2023-2024 के बजट का सार

वर्ष 2022-2023 का संशोधित अनुमान एवं वर्ष 2023-2024 के आय-व्ययक अनुमानों के तुलनात्मक विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित हैं-

(₹ करोड़ में)

	2022-2023 संशोधित अनुमान	**2023-2024 बजट अनुमान**
1. राजस्व लेखे की प्राप्तियाँ	**478816.53**	**570865.66**
2. कर राज्स्व *	354983.28	445871.59
3. करेत्तर राजस्व @	123833.25	124994.07
4. पूँजी लेखे की प्राप्तियाँ	**97312.84**	**112427.08**
5. ऋणों की वसूली	2565.00	3312.18
6. उधार और अन्य देयताएं (जिसमें भारतीय रिजर्व बैंक से अर्थोपाय अग्रिम)	94747.84	109114.90
7. कुल प्राप्तियाँ (1+4)	**576129.37**	**683292.74**
8. राजस्व लेखे पर व्यय जिसमें	424909.27	502354.01
9. ब्याज अदायगियाँ	47865.50	52755.56
10. पूँजी लेखे पर व्यय जिसमें	160363.02	187888.42
11. पूंजीगत परिव्यय	126601.11	147617.29
12. ऋण की अदायगियाँ (जिसमें भारतीय रिजर्व बैंक से प्राप्त अर्थोपाय अग्रिम का प्रतिपादन सहित)	22565.13 0.00	31181.43 10000.00
13. कुल व्यय (8+10)	**585272.29**	**690242.43**
14. राजस्व बचत (1–8)	**53907.26**	**68511.65**
15. राजकोषीय घाटा	**81325.63**	**84883.16**
16. प्रारम्भिक घाटा (15–9)	**33460.13**	**32127.60**

* इसमें राज्य का स्वयं का कर राजस्व एवं केन्द्रीय करों में राज्यांश सम्मिलित है।

@ इसमें राज्य का स्वयं का करेत्तर राजस्व एवं केन्द्र से प्राप्त अनुदान सम्मिलित है।

- 10 से 12 फरवरी, 2023 के मध्य उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2023 में 25000 से अधिक निवेशकों ने प्रतिभाग किया जिसमें 33.50 लाख करोड़ रुपये के 19000 से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किये गये।
- इनमें अधिकांश समझौता ज्ञापन नवीकरणीय ऊर्जा (16 प्रतिशत), इलेक्ट्रॉनिक्स (12 प्रतिशत), औद्योगिक पार्क (11 प्रतिशत), शिक्षा (9 प्रतिशत) तथा लॉजिस्टिक्स (9 प्रतिशत) सेक्टर्स में किए गये।
- 1 दिसम्बर, 2022 से 30 नवम्बर, 2023 के मध्य विश्व के सबसे शक्तिशाली 20 देशों के समूह जी-20 के सम्मेलन की मेजबानी का गौरव भारत सरकार को प्राप्त हुआ है, जिसमें 200 से अधिक बैठकें होंगी। इनमें से उत्तर प्रदेश के चार शहरों - लखनऊ, आगरा, वाराणसी एवं ग्रेटर नोएडा में कुल 11 बैठकों का आयोजन किया जाएगा।
- प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण एवं शहरी के अन्तर्गत आवास निर्माण, ग्रामीण स्वच्छ शौचालय निर्माण, सूक्ष्म लघु मध्यम उद्योगों की स्थापना, स्मार्ट सिटी मिशन के अन्तर्गत ''इंडिया स्मार्ट सिटी अवार्ड कॉन्टेस्ट'' में तथा पी. एफ. एम. एस. पोर्टल द्वारा डी. बी. टी. के माध्यम से लाभार्थियों को धनराशि हस्तांतरण करने के मामले में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है।
- दुग्ध उत्पादन, गन्ना एवं चीनी उत्पादन तथा एथेलॉन की आपूर्ति में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है।

- कृषि निवेशों पर किसानों के देय अनुदान डी. बी. टी. के माध्यम से भुगतान करने वाला देश में उत्तर प्रदेश पहला राज्य बना।
- कोरोना के बचाव हेतु वैक्सीनेशन के 39.20 करोड़ से अधिक डोज लगाने वाला देश में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है।
- उत्तर प्रदेश चिकित्सा शिक्षण संस्थान स्थापित कर संचालित करने वाला देश का अग्रणी राज्य बन गया है।
- भारत सरकार द्वारा स्टार्टअप रैंकिंग के तहत उत्तर प्रदेश को 'इनस्पायरिंग लीडर' के रूप में सम्मानित किया गया है।
- उत्तर प्रदेश कौशल विकास नीति को लागू करने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया है।
- अटल पेंशन योजना के अन्तर्गत पंजीकरण करने में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है।

किसान

- प्रदेश के लगभग 46 लाख 22 हजार गन्ना किसानों को वर्ष 2017 से अब तक 1,96,000 करोड़ रुपये से अधिक का रिकॉर्ड गन्ना मूल्य भुगतान कराया गया जो वर्ष 2012 से 2017 तक की अवधि में किए गये कुल गन्ना मूल्य भुगतान 95,125 करोड़ रुपये से 86,728 करोड़ रुपये अधिक है।
- गन्ना उत्पादकता में 100875 टन प्रति हेक्टेयर की वृद्धि से किसानों की आय में औसतन 349 रुपये प्रति कुन्टल की दर से 34,656 रुपये प्रति हेक्टेयर की वृद्धि हुई है।
- इसके अतिरिक्त गन्ने के साथ अंतः फसली खेती में कृषकों को लगभग 25 प्रतिशत की अतिरिक्त आय हुई है।
- रबी विपणन वर्ष 2022-23 में 2015 रुपये प्रति कुन्टल गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित था। इस विपणन वर्ष के दौरान किसानों के खातों में पी. एफ. एम. एस. पोर्टल के माध्यम से 675 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया।
- खरीफ विपणन वर्ष 2022-23 के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा कॉमन श्रेणी हेतु रुपया 2040 तथा ग्रेड-ए हेतु रुपया 2060 प्रति कुन्टल मूल्य निर्धारित किया गया है। इस विपणन वर्ष के दौरान किसानों के खातों में पी. एफ. एम. एस. पोर्टल के माध्यम से 12 हजार करोड़ रुपये का भुगतान किया गया है।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अन्तर्गत वर्ष 2022-23 में किसानों के खाते में डी. बी. टी. के माध्यम से 51,639.68 करोड़ रुपये से अधिक की धन राशि हस्तांतरित की गयी।
- प्रदेश के डार्क जोन में किसानों को निजी नलकूप कनेक्शन पर लगे प्रतिबंध को हटाने से 01 लाख किसान लाभान्वित हुए है।

महिला एवं बाल विकास

- 'मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना' के अन्तर्गत प्रति लाभार्थी को रूपये 15000 तक की धनराशि से लाभान्वित किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु 1050 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना हेतु 600 करोड़ रूपये धनराशि की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- अन्य पिछड़ा वर्ग के निर्धन व्यक्तियों की पुत्रियों की शादी अनुदान योजना हेतु 150 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- महिला सामर्थ्य योजना के अर्न्तगत वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट में 63 करोड़ रूपयें की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- निराश्रित विधवाओं के भरण-पोषण अनुदान योजना के अन्तर्गत वर्तमान में 32 लाख 62 हजार निराश्रित महिलाओं को पेंशन दी जा रही है। इसके लिए वर्ष 2023-24 के बजट में 4032 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- प्रदेश में नियमित टीकाकरण के अन्तर्गत अक्टूबर, 2022 तक 95 प्रतिशत बच्चों को टीका लगाया गया।
- मिशन इन्द्र धनुष के अन्तर्गत 36 लाख 82 हजार से अधिक बच्चों एवं 10 लाख 31 हजार से अधिक गर्भवती माताओं का टीकाकरण किया गया।
- प्रदेश में कानून एवं शांति व्यवस्था में महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु 03 महिला पी.ए.सी. बटालियन का गठन किया जा रहा है।

युवा

- स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तिकरण योजना के तहत छात्रों को टैबलेट/स्मार्ट फोन देने हेतु वित्तीय वर्ष 2023 - 24 में 3600 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- उत्तर प्रदेश स्टार्टअप नीति - 2020 के तहत इन्क्यूबेटर्स को बढ़ावा देने तथा स्टार्टअप्स के लिए सीड फण्ड हेतु 100 करोड़ रूपये की व्यवस्था की गई है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में 'युवा उद्यमियों' को एग्रीटेक-स्टार्ट-अप्स की स्थापना हेतु एग्रीकल्चर एक्सीलेरेटर फण्ड के लिए 20 करोड़ रूपये प्रस्तावित है।

रुपया आता है
2023-24 (बजट अनुमान)

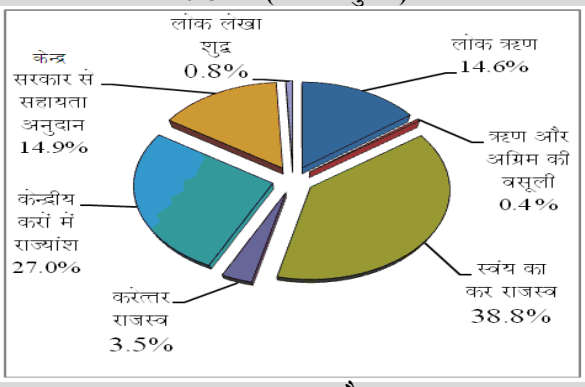

रुपया जाता है
2023-24 (बजट अनुमान)

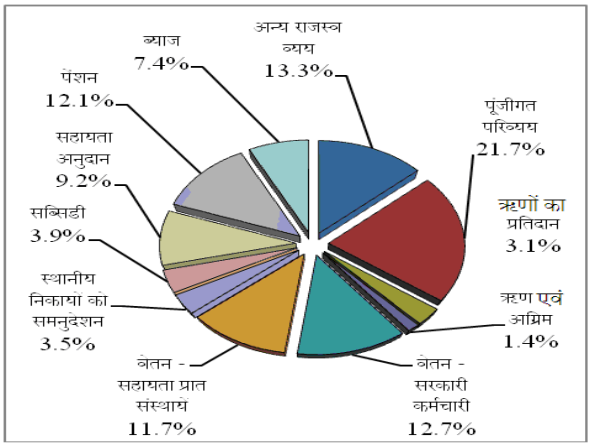

रोजगार

- मनरेगा योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 में अब तक प्रदेश में 26 लाख 29 हजार मानव दिवस सृजित कर प्रदेश द्वारा देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया गया है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 में अब तक लगभग 01 लाख 07 हजार स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है।
- एम.एस.एम.ई. अधिनियम, 2020 के माध्यम से इकाईयों को 1000 दिवस तक किसी भी विभाग से निरीक्षण से छूट प्रदान की गई है।
- एक जनपद-एक उत्पाद वित्त पोषण योजना के अन्तर्गत 01 लाख 35 हजार से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ।
- उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन द्वारा विगत 06 वर्षों में 12 लाख 50 हजार से अधिक युवाओं को विभिन्न प्रकार के अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पंजीकृत किया गया है।
- वित्तीय वर्ष 2023-24 में वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में 40,000 रोजगार सृजन का लक्ष्य है।
- मुख्यमंत्री शिक्षुता प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत 31 हजार युवाओं को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है।

- नई उत्तर प्रदेश पर्यटन नीति - 2022 के अन्तर्गत अगले 05 वर्षों में 10 लाख करोड़ रूपयें का निवेश एवं 20 हजार रोजगार सृजन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

सामाजिक सुरक्षा

- प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अन्तर्गत देश में सर्वाधिक 10.33 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को 1190 करोड़ 49 लाख रुपये का ऋण वितरित कराते हुए उत्तर प्रदेश ऋण वितरण में देश में प्रथम स्थान पर रहा है।
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के फेज - 03, 04 एवं फेज-05 में 81.25 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न निःशुल्क वितरित किया गया।

श्रमिक कल्याण

- कामगार मृत्यु व दिव्यांगता सहायता योजना के तहत कार्यस्थल पर श्रमिक की मृत्यु की दशा में 05 लाख रूपयें, स्थायी दिव्यांगता पर 04 लाख रूपये तथा आंशिक दिव्यांगता पर 03 लाख रूपयें की सहायता प्रदान किए जाने का प्रावधान है।
- असंगठित क्षेत्र के कर्मकारों हेतु संचालित ''मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना'' हेतु 100 करोड़ रूपयें की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- असंगठित क्षेत्र के कर्मकारों हेतु संचालित ''मुख्यमंत्री दुर्घटना बीमा योजना'' के लिए 12 करोड़ रूपयें प्रस्तावित है।
- बाल श्रमिक विद्या योजना के तहत 2000 बच्चों को योजना से आच्छादित किया जा रहा है।

अवस्थापना

- वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट में झांसी लिंक एक्सप्रेस-वे तथा चित्रकूट लिंक एक्सप्रेस-वे की नई परियोजनाओं के प्रारंभिक चरण हेतु 235 करोड़ रूपये प्रस्तावित है।
- बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे के साथ डिफेन्स कॉरिडोर परियोजना के लिए 550 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- यमुना एक्सप्रेस-वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा 1000 एकड़ भूमि पर ''अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म सिटी'' की स्थापना की जा रही है। इसके लिए 10,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश की संभावना है।

कानून व्यवस्था

- साइबर क्राइम की रोकथाम हेतु प्रदेश के प्रत्येक परिक्षेत्र में साइबर क्राइम पुलिस थाना की स्थापना की गई है। परिक्षेत्रीय मुख्यालयों पर बेसिक साइबर फोरेंसिक लैब एवं पुलिस मुख्यालय पर एडवांस्ड डिजिटल साइबर फोरेंसिक लैब की स्थापना करायी जा रही है।
- पुलिस विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध कराए जाने हेतु वित्तीय वर्ष 2023-24 में 1000 करोड़ रूपये की व्यवस्था बजट में प्रस्तावित है।
- नव सृजित पुलिस कमिश्नरेट के कार्यालय एवं अनावासीय भवनों आदि की व्यवस्था हेतु 850 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

- आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आदोग्य योजना के संचालन हेतु 400 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- भारत सरकार द्वारा उप स्वास्थ्य केन्द्रों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को क्रमबद्ध तरीके से क्रियाशील हेल्थ एण्ड वैलनेस सेण्टर्स में परिवर्तित किया जा रहा है।
- ''कन्वर्जन ऑफ रूरल सब हेल्थ सेन्टर्स एण्ड पी.एच.सी टू हेल्थ वेलनेस सेन्टर्स'' हेतु 15वें वित्त आयोग की सिफारिश के अनुरूप वित्तीय वर्ष 2023-24 में लगभग 407 करोड़ रूपयें का व्यय किया जाएगा।

चिकित्सा शिक्षा

- प्रदेश सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना किए जाने का लक्ष्य रखा गया है।
- 14 जनपदों में मेडिकल कॉलेज निर्माणधीन है। असेवित 16 जनपदों में मेडिकल कॉलेज की स्थापना पी.पी.पी. मॉडल पर की जा रही है।
- असाध्य रोगों की चिकित्सा हेतु 100 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- प्रदेश में राजकीय पैरामेडिकल कॉलेजों की संख्या 17 से बढ़ाकर 19 की गई है जबकि निजी क्षेत्र के स्कूलों की संख्या 287 से बढ़ाकर 351 की गई है।

औद्योगिक विकास

- भारत में व्यवसाय की सुगमता की रैंकिंग में 12 स्थानों का उल्लेखनीय सुधार करते हुए उत्तर प्रदेश देश में 'द्वितीय स्थान पर आ गया है।
- प्रदेश में 'फार्मा पार्को की स्थापना एवं विकास हेतु 25 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।
- प्रदेश सरकार द्वारा घोषित नवीन एम.एस.एम.ई. नीति - 2022 में रोजगार सृजन में 15 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि प्रस्तावित है।
- इस नीति के अन्तर्गत प्रथम बार एम.एस.एम.ई. इकाइयों को 4 करोड़ रूपये तक पूंजी उपादान उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था की गई है।
- प्रदेश में ओ.डी.ओ.पी. एवं हस्तशिल्प उत्पादों के विपणन को प्रोत्साहित करने हेतु ''यूनिटी मॉल'' की स्थापना के लिए वित्तीय वर्ष 2023 - 24 के बजट में 200 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।

सिंचाई एंव जल संसाधन

- प्रदेश में 75,090 किलोमीटर लम्बी नहर प्रणालियों, 34,316 राजकीय नलकूपों, 29 पम्प नहरों, 252 लघु डाल नहरों एवं 69 जलाशयों से लगभग 99 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है।
- वित्तीय वर्ष 2023 - 24 में बाढ़ नियंत्रण एवं जल निकास हेतु रूपये 2,803 करोड़ की बजट व्यवस्था प्रस्तावित है।

नमामि गंगें एवं ग्रामीण जलापूर्ति

- वर्ष 2023-24 में जल जीवन मिशन के अन्तर्गत 25,350 करोड़ रूपये की बजट व्यवस्था प्रस्तावित है।

नागरिक उड्डयन

- वर्तमान में प्रदेश में 09 एयरपोर्ट क्रियाशील हैं तथा 80 गंतव्य स्थानों के लिए एयर सर्विस उपलब्ध है।
- प्रदेश में 03 अन्तर्राष्ट्रीय एयर पोर्ट क्रियाशील हैं। जेवर तथा अयोध्या में अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट निर्माणाधीन है। शीघ्र ही प्रदेश में 05 अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट क्रियाशील हो जाएंगे।

ऊर्जा

- वर्तमान में जिला मुख्यालय पर 24 घण्टे, तहसील मुख्यालय पर 20 से 22 घण्टे और गॉवों को 18 से 20 घण्टे बिजली दिए जाने का रोस्टर निर्धारित है।
- वित्तीय वर्ष 2022- 23 में विद्युत की पारेषण तंत्र की क्षमता को बढ़ाकर 30,806 मेगावॉट तक किया जाना लक्षित है।

अतिरिक्त ऊर्जा स्त्रोत

- उत्तर प्रदेश सौर ऊर्जा नीति - 2022 के अन्तर्गत 05 वर्षों में 22000 मेगावॉट विद्युत उत्पादन क्षमता का लक्ष्य रखा गया है।

नगर विकास

- प्रधानमंत्री आवासीय योजना के अन्तर्गत लाभार्थी आधारित व्यक्तिगत आवास निर्माण घटक के अन्तर्गत लगभग 12 लाख से अधिक लाभार्थियों को डी.बी.टी. के माध्यम से 27,748 करोड़ रूपयें हस्तांतरित किया गया।
- महाकुम्भ मेला, 2025 के आयोजन हेतु वर्ष 2022-23 में प्रावधानित 621.55 करोड़ रूपये के सापेक्ष आगामी बजट में 2500 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है।

नियोजन

- बुन्देलखण्ड की विशेष योजनाओं हेतु 600 करोड़ रुपये प्रस्तावित है।
- पूर्वांचल की विशेष योजनाओं हेतु 525 करोड़ रुपये प्रस्तावित है।
- सुदूर ग्रामों को विकासखण्डों एवं कस्बों से जोड़ने हेतु आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना के अन्तर्गत 453 वाहनों का संचालन समूहों के माध्यम से किया जा रहा है।

पंचायती राज

- स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत वर्ष 2023-24 में 665473 व्यक्तिगत शौचालय निर्माण तथा 330 विकास खण्डों में प्लास्टिक प्रबंधन का लक्ष्य रखा गया है।

कृषि

- वर्ष 2023-24 में 17000 किसान पाठशालाओं (द मिलियन फार्मर्स स्कूल) का आयोजन किया जायेगा।
- उत्तर प्रदेश मिलेट्स पुनरुद्धार कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु 55 करोड़ 60 लाख रुपये प्रस्तावित है।

पशु पालन

- प्रदेश के निराश्रित/बेसहारा गोवंश की समस्या के निराकरण हेतु प्रदेश के समस्त जनपदों में 187 वृहद गो-संरक्षण केन्द्र का निर्माण कराया जाना लक्षित है, जिसमें 171 केन्द्रों का निर्माण कार्य पूर्ण है।

उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण

- उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति, 2022 के क्रियान्वयन हेतु 100 करोड़ रुपये प्रस्तावित है।
- सहारनपुर में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर हनी की स्थापना के लिए 10 करोड़ रुपये प्रस्तावित है।

शिक्षा

- ऑपरेशन कायाकल्प (प्राथमिक विद्यालयों की अवस्थापना सुविधाओं का विकास) के लिए 1000 करोड़ रुपये प्रस्तावित है।
- केन्द्र सरकार की सहायता से पीएम श्री (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) नामक नई योजना प्रदेश में क्रियान्वित की जाएगी।
- ग्राम पंचायत एवं वार्ड स्तर पर डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना की नई योजना शुरू की गयी है।
- 'प्रोजेक्ट अलंकार' राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न अवस्थापना सुविधाओं के विकास के लिए चलाया गया है।
- विन्ध्याचल धाम मण्डल में माँ विन्ध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- मुरादाबाद मण्डल में राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- देवीपाटन मण्डल की माँ पाटेश्वरी देवी राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- सहारनपुर, फतेहपुर एवं बलिया में स्पोर्ट्स कॉलेज का निर्माण किया जाएगा।
- निर्माण श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा के लिए प्रत्येक राजस्व मण्डल में 1000 बालक/बालिकाओं के लिये कक्षा-06 से कक्षा-12 तक अध्ययन हेतु अटल आवासीय विद्यालय का संचालन सत्र 2023-24 से किया जाएगा।

राजकोषीय घाटा का विश्लेषण

राजकोषीय घाटा:- राजकोषीय घाटा के तीन घटक हैं- राजस्व घाटा पूँजीगत परिव्यय तथा शुद्ध प्रदत्त ऋण एवं अग्रिम। वर्ष 2022-23 से राजकोषीय घाटा की प्रवृत्ति एवं उसका अपघटन तथा सकल राज्य घरेलू उत्पाद (स.रा.घ.उ.) के साथ अनुपात तालिका में दिया गया है।

(करोड़ ₹ में)

वर्ष	राजस्व बचत	पूंजीगत परिव्यय	शुद्ध प्रदत्त ऋण एवं अग्रिम	राजकोषीय घाटा	सकल राज्य घरेलू उत्पाद
1	2	3	4	5	6
2022-23 बजट अनुमान	43123.65	123919.85	381.78	81177.98	2048324
स.रा.घ.उ. से प्रतिशत	2.11	6.05	0.02	3.96	
2022-23 पुनरीक्षित अनुमान	53907.26	126601.11	8631.78	81325.63	2048234
स.रा.घ.उ. से प्रतिशत	2.63	6.18	0.42	3.97	
2023-24 बजट अनुमान	68511.65	147492.29	5902.52	84883.16	2439171
स.रा.घ.उ. से प्रतिशत	2.81	6.05	0.24	3.48	

सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जी.एस.डी.पी) के प्रतिशत के रूप में संकेतक

					अगले तीन वर्षों के लिये		
क्र.	मद	2022-23 बजट अनुमान	2022-23 पुनरीक्षित अनुमान	2023-24 बजट अनुमान	2024-25	2025-26	2026-27
1	2	3	4	5	6	7	8
1	राज्य का स्वयं का कर राजस्व	**10.8%**	**9.0%**	**10.8%**	**10.8%**	**10.9%**	**11.0%**
2	राज्य का स्वयं का करेत्तर राजस्व	**1.1%**	**0.6%**	**1.0%**	**0.9%**	**0.9%**	**0.8%**
3	राजस्व बचत	**2.1%**	**2.6%**	**2.8%**	**3.0%**	**3.3%**	**3.5%**
4	राजकोषीय घाटा	**3.96%**	**3.97%**	**3.48%**	**3.24%**	**2.95%**	**2.80%**
5	कुल उधार एवं अन्य दायित्व	**32.5%**	**34.2%**	**32.1%**	**31.7%**	**31.0%**	**30.2%**

वित्तीय वर्ष 2023-24 में विभिन्न संस्थाओं को सहायता अनुदान

(₹ लाख में)

क्र. सं.	संस्थायें	कुल सहायता अनुदान	कुल सहायता अनुदान में पूंजीगत परिसम्पत्तियों के सृजन हेतु सहायता अनुदान
1	शहरी स्थानीय निकाय	2427338.56	2007463.56
2	पंचायती राज संस्थायें	754702.00	0.00
3	सार्वजनिक उपक्रम	687070.00	800.00
4	गैर सरकारी संस्थायें	91730.78	3850.00
5	स्वायत्तशासी संस्थायें	1027970.06	43441.14
6	सहकारी समितियाँ व सहकारी संस्थायें	7527.00	0.00
7	सांविधिक संस्थायें व विकास प्राधिकरण	18098.96	5665.01
8	अन्य	3387022.61	10495.00
	योग-	**8401459.97**	**2071714.71**

भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन

प्राचीन इतिहास

(ANCIENT HISTORY)

01. भारत की प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ (Indias Prehistoric Culture)

पुरा पाषाण काल

1. नीचे दो कथन दिए गए हैं एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।

अभिकथन (A) : विन्ध्य क्षेत्र के पाषाण युगीन लोगों ने नूतन भूत-काल के अंत में गंगा घाटी में प्रवजन किया।

कारण (R) : जलवायु परिवर्तन के कारण इस काल में शुष्कता का चरण था।

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है

(b) (A) और (R) दोनों सही है परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

(c) (A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है

(d) (A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है

उत्तर–(a) **UPPSC RO/ARO (Mains) 2016**

व्याख्या– विंध्य क्षेत्र के पाषाण युगीन लोगों ने नूतन भूत-काल के अंत में गंगा घाटी में प्रवजन किया। क्योंकि जलवायु परिवर्तन के कारण इस काल में शुष्कता का चरण था। अतः कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

2. सही कालक्रम में व्यवस्थित कीजिए-

1. पटपरा जमाव 2. खेतौन्ही जमाव
3. बाघोर जमाव 4. सिहावल जमाव

कूट :

(a) 1, 4, 2, 3 (b) 4, 1, 3, 2 (c) 1, 2, 3, 4 (d) 4, 3, 2, 1

उत्तर–(b) **UPPCS (Mains) G.S.-I[st] 2017**
UPPCS (Pre) Opt. History 2006

व्याख्या– सोन नदी घाटी में सबसे पहले 1963ई. में निसार अहमद ने 35 पुरास्थलों और उपकरणों की खोज की। इसके पश्चात गोवर्धन राय शर्मा ने 1975 ई. से 77 ई. के मध्य बर्क विश्वविद्यालय के जे.डी. क्लार्क के साथ विस्तृत सर्वेक्षण कर लगभग 300 पुरास्थलों की खोज की। इसके बाद विलियम्स और कीथ रायस ने इसमें कई जमावों को खोजकर उजागर किया जिनमें कुछ प्रमुख क्रमागत जमाव निम्नलिखित हैं- सिहावल जमाव, पटपरा जमाव, बाघोर जमाव और खेतौन्ही जमाव। सिहावल जमाव सबसे निचला जमाव है जो सिंहाचल नामक पुरास्थल से मिला है। पटपरा जमाव मध्य प्रदेश के सीधी जिले में मिला है। यह लाल रंग का दस मीटर मोटा जमाव है। बाघोर जमाव मध्य सोन घाटी में है जहाँ से दो जमाव प्राप्त हुए हैं। यहाँ से विभिन्न पशुओं के जीवाश्म भी प्राप्त हुए हैं। सोन नदी और रेही नदी के संगम पर खेतौन्ही नामक स्थान से सोन नदी के वर्तमान जलस्तर से काफी ऊंचाई पर खेतौन्ही जमाव प्राप्त हुआ है जो सिल्ट और जलोढ़ मिट्टी का बना है। यहाँ से मध्यपाषाणकालीन लघु उपकरण प्राप्त हुए हैं।

3. निम्न पूर्व पाषाण काल के मानव के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा तथ्य सही है?

(a) वह पालिशदार कुल्हाड़ियों का प्रयोग करता था।
(b) वह कोर-उपकरणों का प्रयोग करता था।
(c) वह पशुपालक था।
(d) वह लघु पाषाण उपकरणों का प्रयोग करता था।

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : पाषाणयुगीन सभ्यता का विकास हिम-युग प्लीस्टोसीन काल में हुआ। भारत में पाषाणयुगीन मानव के मुख्य उद्योग लघु पाषाण उपकरण (कोर-उपकरण), शल्क उपकरण तथा हस्तकुठार तक ही सीमित थे। उपकरण बनाने में मुख्यतः क्वार्ट्ज अथवा स्फटिक का उपयोग किया गया है। ये पाषाण उपकरण सर्वप्रथम सोहन घाटी में पाये गये। अतः इन्हें 'सोहन संस्कृति' के नाम से भी पुकारा जाता है। इस काल में मानव कोर-उपकरणों का प्रयोग करता था। वह न तो किसी धातु का प्रयोग करता था और न ही पशुपालक था, बल्कि जीवन यापन के लिए शिकार पर निर्भर था। इस काल के प्रमुख स्थल सिहावल, पटपरा, बाघोर व खेतौंही है।

4. पूर्व पाषाण कालीन मानव का मुख्य धंधा था :

(a) कृषि (b) मिट्टी के बर्तन बनाना
(c) पशुपालन (d) शिकार खेलना

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल और नवपाषाण काल के अवशेष एक क्रम में पाये गये हैं?

(a) कश्मीर घाटी (b) कृष्णा घाटी
(c) बेलन घाटी (d) गोदावरी घाटी

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : बेलन घाटी, विन्ध्य क्षेत्र एवं नर्मदा घाटी से पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण काल तीनों के अवशेष पाये जाते हैं। यहाँ पर शिकारी मानव सभ्यता से लेकर अन्नोत्पादक मानव सभ्यता के चिन्ह पाये जाते हैं जो किसी सभ्यता के क्रमिक विकास के शृंखलाबद्ध लक्षण हैं। उच्च पुरा पाषाणकाल के सर्वप्रथम साक्ष्य यही से मिले हैं।

6. भारत में प्रागैतिहासिक मानव का प्राचीनतम जीवाश्म, निम्नलिखित में से किस स्थान से मिला है?

(a) भीमबेटका (b) हथनौरा
(c) सराय नाहर राय (d) दमदमा

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**
UPPCS (Pre) Opt. History 2006

व्याख्या : भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के अरुण सोनकिया को 1982 ई. में मध्य नर्मदा घाटी में होशंगाबाद जिले में स्थित हथनौरा नामक पुरास्थल से मानव की एक खोपड़ी का जीवाश्म मिला है। कुछ विद्वानों ने इसे होमोइरेक्टस वर्ग के अन्तर्गत रखा है तथा अन्य इसे 'विकसित होमो सेपियन्स' बताते हैं। इसे 'नर्मदा मैन' भी कहा जाता है।

7. होमोइरेक्टस' का एक कपाल निम्न में से किस स्थल से प्राप्त हुआ था?

(a) नर्मदा घाटी में हथनौरा (b) नर्मदा घाटी में होशंगाबाद
(c) सोनघाटी में बाघोर (d) बेलन घाटी में बांस घाट

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. भारत में प्रथम पुरा प्रस्तर युगीन औजार की खोज का, जिससे देश में प्रागैतिहासिक अध्ययन का रास्ता खुला, श्रेय किसे जाता है?

(a) बर्किट (b) डी टेरा एवं पीटरसन
(c) आर. बी. फुट (d) एच. डी. संकालिया

उत्तर-(c) UPPCS (Pre) Opt. History 2010, 2003
UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008
UPPCS (J) 2015
UP Lower (Pre) 2015

व्याख्या : भारतीय भूतत्त्व सर्वेक्षण विभाग के विद्वान (भू वैज्ञानिक) राबर्ट ब्रूसफुट को भारतीय प्रागैतिहासिक काल का जनक कहा जाता है। 1863 में राबर्ट ब्रूसफुट ने सबसे पहले पुराप्रस्तरयुगीन प्रथम हैण्डएक्स की खोज मद्रास के पल्लवरम् स्थान से की थी। जिसके फलस्वरूप भारत में प्रागैतिहासिक काल के अध्ययन का रास्ता खुल गया।

9. निम्नलिखित में से किसे 'फलक संस्कृति' कहा गया है?

(a) निम्न पुरापाषाणकालीन संस्कृति
(b) मध्य पुरापाषाणकालीन संस्कृति
(c) उच्च पुरापाषाणकालीन संस्कृति
(d) हड़प्पा संस्कृति

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008

व्याख्या : भारत के विभिन्न भागों से जो फलक प्रधान पूर्व पाषाण काल के उपकरण मिलते हैं, उन्हें इस काल के मध्य में रखा जाता है। फलकों की अधिकता के कारण एच.डी. सांकलिया ने मध्य पूर्वपाषाण काल को 'फलक संस्कृति' की संज्ञा दी है। इन उपकरणों का निर्माण अच्छे प्रकार के क्वार्टजाइट पत्थर से किया गया है। इनमें चर्ट, जैस्पर, फ्लिन्ट जैसे मूल्यवान पत्थरों का प्रयोग किया गया है।

10. प्राचीनतम कलाकृतियों का प्रमाण सम्बन्धित है-

(a) निम्न पूर्व पाषाण काल से (b) मध्य पूर्व पाषाण काल से
(c) उच्च पूर्व पाषाण काल से (d) मध्य पाषाण काल से

उत्तर-(c) UPPCS (Pre) Opt. History 2007

व्याख्या : प्राचीनतम कलाकृतियों का सम्बन्ध उच्चपुरापाषाण काल से स्थापित किया जाता है। प्राचीनतम कलाकृतियाँ मध्य प्रदेश के भीमबेटका से शैल चित्रों के रूप में प्राप्त हुई हैं। इस वर्ग की चित्रकला के प्रमुख विषय उच्च पुरापाषाणिक एवं मध्यपाषाणिक मानव के सांस्कृतिक क्रियाकलापों, पशु, पक्षी, मानव, खाद्य-संग्रह एवं आखेट से सम्बन्धित हैं।

11. उच्च पुरापाषाण युगीन हड्डी की बनी मातृदेवी की प्रतिमा कहाँ से प्राप्त हुई है?

(a) गोदावरी घाटी (महाराष्ट्र) (b) नर्मदा घाटी (मध्य प्रदेश)
(c) सोन घाटी (मध्य प्रदेश) (d) बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश)

उत्तर-(d) UPPCS (Pre) Opt. History 2005

व्याख्या : उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले की मेजा तहसील में बेलन घाटी के क्षेत्र में स्थित **लोंहदा** नाम के तृतीय ग्रेवॉल के अपरदित जमाव से हड्डी की बनी हुई मातृदेवी की एक मूर्ति मिली है। भारत में उच्च पुरापाषाण काल के भूतात्विक स्तर से प्राप्त यह एकमात्र मूर्ति है। उच्च पुरापाषाण काल से प्राप्त मातृदेवी की मूर्ति विश्व की प्राचीनतम अस्थिनिर्मित मातृदेवी की मूर्ति है।

12. प्रारम्भिक पूर्ण मानव को किस नाम से जाना जाता था?

(a) निएण्डरथल (b) क्रोमैगनन (c) ग्रिमाल्डी (d) मैग्डलीनियन

उत्तर (b) UPPCS (Pre) Opt. History 2003

व्याख्या : लगभग 3.5 करोड़ से 2 करोड़ वर्ष पूर्व 3 से 4 फुट ऊँचा एक कपि समूह उष्ण कटिबन्ध के घने जंगलों से बाहर निकल आया जहाँ वह वृक्षों पर रहा करता था। लगभग दो करोड़ वर्ष पूर्व यह पूर्वज समूह विभाजन से एक नई शाखा बन गयी, इसे 'रामापिथेकस' कहा जाता है। जो शाखा जंगलों में रह गयी, परन्तु धरती पर रहने के लिए अधिक अनुकूल थी, वह महाकपि वर्ग के रूप में विकसित हुई और जिसने खुले घास के मैदान ढूँढ़ना शुरू किया उसे **'ऑस्ट्रेलोपिथेकस'** कहा जाता है। **'ऑस्ट्रेलोपिथेकस'** मानव का आदि पूर्वज बना और वह पूर्व अत्यंत नूतन काल में प्रकट हुआ। आरंभिक मध्य नूतन काल में विश्व के अनेक भागों में अधिक विकसित मानव जाति का आविर्भाव हुआ, इसे हम **'पिथेकैन्थ्रोपस'** या **'इरेक्टस'** कहते हैं। निएंडरथल मानव होमो वंश का एक विलुप्त सदस्य है। जर्मनी में निएण्डर की घाटी में इस आदिमानव की कुछ हड्डियाँ मिली है इसीलिए इसे निएण्डरथल मानव का नाम दिया गया है। लगभग 30,000 वर्ष पहले 'आधुनिक मानव का विकास हुआ। उसे हम **'होमोसेपियन्स'** या **'प्रज्ञ मानव'** या विशिष्ट अनुसंधान नामों से पुकारते हैं जैसे कि 'क्रोमैगनन', 'ग्रिमाल्डी', ऑरिग्निनयन इत्यादि।

मध्य पाषाण काल

13. निम्नलिखित मध्यपाषाणिक स्थलों को भौगोलिक दृष्टि से पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करें-
1. पैसरा 2. लेखहिया 3. बीरभानपुर 4. महदहा
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-
कूट :

(a) 4, 2, 3, और 1 (b) 1, 4, 3 और 2
(c) 4, 2, 1 और 3 (d) 2, 4, 1 और 3

UPPSC RO/ARO (Mains) 2021

Ans. (c) : मध्य पाषाणिक स्थलों की भौगोलिक दृष्टि से पश्चिम से पूर्व की ओर क्रम महदहा (उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़), लेखहिया (उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर), पैसरा (बिहार), बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल) है।

14. निम्नलिखित में से किस भारतीय पुरातत्ववेत्ता ने पहली बार 'भीमबेटका गुफा' को देखा और उसके शैलचित्रों के प्रागैतिहासिक महत्त्व को खोजा?

(a) माधोस्वरूप वत्स (b) एच.डी. संकालिया
(c) वी.एस. वाकणकर (d) वी.एन. मिश्रा

उत्तर–(c) UPPCS (Pre) G.S. 2020, 2008
UPPCS (Pre) Opt. History 2007, 1999

व्याख्या– वर्ष 1957 ई. में पुरातत्वविद् वी.एस. वाकणकर ने विश्व प्रसिद्ध भीमबेटका के शैल चित्रों को खोजा था। यहां से सम्पूर्ण प्रागैतिहासिक काल के मानव आवास के साक्ष्य मिले हैं। यहां से प्राप्त लगभग 700 गुफा आश्रयों में से 475 में शैचचित्र देखे जा सकते हैं। यहां चित्रों का निर्माण उच्च पूर्व पाषाण काल में प्रारम्भ हुआ, लेकिन सर्वाधिक संख्या में मध्य पाषाण काल के चित्र मिलते हैं। भारत के भीमबेटका शिलाश्रय से ही सर्वाधिक चित्र प्राप्त हुए हैं। भीमबेटका के अतरिक्त मिर्जापुर, पंचमढी व सुन्दरगढ से भी शैल चित्र प्राप्त हुए हैं।

15. उत्खनित प्रमाणों के अनुसार पशुपालन का प्रारम्भ हुआ था-

(a) निचले पूर्व पाषाण काल में (b) मध्य पूर्व पाषाण काल में
(c) ऊपरी पूर्व पाषाण काल में (d) मध्य पाषाण काल में

उत्तर-(d) UPPCS (Mains) G.S.-2006
UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2008
UPPSC BEO GS 2006
UPPCS (Pre)-2018

व्याख्या : प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार पशुपालन का प्रारम्भ मध्यपाषाण काल में माना जाता है। भारत में मध्यपाषाण काल में पशुपालन के साक्ष्य मध्यप्रदेश के आदमगढ़ एवं राजस्थान के बागौर से प्राप्त हुये हैं। मध्यपाषाण काल का प्रारंभ 10 हजार से 6 हजार ई.पू. के आसपास माना जाता है। लघु उपकरणों का प्रयोग इस काल की प्रमुख विशेषता है।

16. मध्यपाषाणिक संदर्भ में वन्य धान का प्रमाण कहाँ से मिला था?

(a) चोपानी माण्डो (b) सराय नाहर राय (c) लेखहिया (d) लंघनाज

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008

व्याख्या : मध्यपाषाणिक संदर्भ में वन्य धान का प्रमाण 'चोपानी माण्डो' से मिला है। यह पुरास्थल प्रयागराज जिले की मेजा तहसील में बूढ़ी बेलन नदी के बायें तट पर स्थित है। इस पुरास्थल को खोजने का श्रेय 1967 ई. में श्री बी.डी. मिश्र को है।

17. सराय नाहर राय और महदहा सम्बन्धित है -

(a) विन्ध्य क्षेत्र की नव-पाषाण संस्कृति से
(b) विन्ध्य क्षेत्र की मध्य-पाषाण संस्कृति से
(c) गंगा घाटी की मध्य-पाषाण संस्कृति से
(d) गंगा घाटी की नव-पाषाण संस्कृति से

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : सराय नाहर राय और महदहा गंगा घाटी की मध्य पाषाण संस्कृति से सम्बन्धित है। इसमें से सराय नाहर राय प्रतापगढ़ जिले में स्थित है जिसकी खोज के. सी. ओझा ने की थी। यहां से 11 मानव समाधियाँ तथा 8 गर्त चूल्हे पाये गये हैं। यहाँ एक समाधि ऐसी है जिसमें एक साथ चार-चार मानवों को दफनाया गया है। 'महदहा' नामक मध्य पाषाणिक स्थल भी प्रतापगढ़ जिले में स्थित है जिसकी खोज इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग तथा पट्टी तहसील के तत्कालीन परगनाधिकारी लाल बिहारी पाण्डेय के सौजन्य से हुई थी। यहां से भी मानव समाधियां प्राप्त हुई हैं। यहाँ से मानव समाधियों के अतिरिक्त पशुओं की अधजली हड्डियाँ, श्रृंग आदि भी प्राप्त हुई है जिसके कारण इसे वध-स्थल कहा गया है।

18. निम्नलिखित में से किस मध्य पाषाणिक स्थल से हड्डी के बने आभूषण प्राप्त हुए हैं?

(a) बागोर (b) बाघोर II (c) बीरभानपुर (d) महदहा

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**
UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2010
UPPSC RO/ARO (Mains) 2013

व्याख्या: उत्तर प्रदेश का विन्ध्य तथा ऊपरी एवं मध्य गंगा घाटी क्षेत्र मध्य पाषाणकालीन उपकरणों के लिए अत्यन्त समृद्ध है जिसमें महदहा, सराय नाहर राय, तथा दमदमा महत्वपूर्ण स्थल है। महदहा से सींग (श्रृंग) के बने उपकरण और आभूषण सराय नाहर राय की तुलना में अधिक संख्या में मिले हैं। सींग तथा श्रृंग के उपकरणों में बाणाग्र, बेधक, खुरचनी, आरी, रुखानी, चाकू आदि हैं। श्रृंग के आभूषणों में कुण्डल तथा मुद्रिकाएँ उल्लेखनीय हैं। महदहा से बलुआ पत्थर से बने सिल एवं लोढ़े, तथा स्तम्भ गर्त के भी साक्ष्य मिले हैं। सिल-लोढ़ों की प्राप्ति से यह इंगित होता है कि संभवतः जंगली घास के दानों को पीसकर भोज्य-सामग्री के रूप में उपयोग किया जाने लगा था। पुरापुष्पपराग के विश्लेषण से हरे-भरे घास के मैदान के विषय में संकेत मिलता है।

19. एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल निकले हैं:

(a) सराय नाहर राय से (b) दमदमा से
(c) महदहा से (d) लंघनाज से

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2016, UPPSC AE-2013**

व्याख्या : दमदमा नामक मध्यपाषाणिक पुरास्थल उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित है। 1982 ई. से 1987 ई. तक यहाँ हुए उत्खनन के फलस्वरूप 41 मानव शवाधान मिले हैं जिनमें से 35 कब्रों में एकल शवाधान, 5 कब्र में दो-दो मानव शवाधान तथा एक कब्र में एक साथ 3 मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि विन्ध्य क्षेत्र में स्थित लेखहिया शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं।

20. विन्ध्य क्षेत्र के किस शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल मिले हैं?

(a) मोरहना पहाड़ (b) घघरिया (c) बघही खोर (d) लेखहिया

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 2016**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

नव पाषाण काल

21. झील के किनारे प्रारंभिक कृषि वाला स्थल है

(a) मेहरगढ़ (b) लहुरादेव (c) चिरांद (d) टी. नर्सीपुर

उत्तर–(b) **UPPSC AE 2019**
UPPCS (Pre) G.S. 2008, UPPCS (J) 2006

व्याख्या– उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर में स्थित लहुरादेव बखीरा झील के किनारे स्थित प्रारम्भिक कृषि वाला स्थल है। यहां से चावल की कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है, जिसकी कालावधि 8000-9000 ई. पूर्व है। लहुरादेव से गोलाकार फर्स, स्तंभगर्त एवं चूल्हों का भी प्रमाण मिलता है।

22. खाद्यान्नों की कृषि सर्वप्रथम प्रारम्भ हुई थी-

(a) नव-पाषाण काल में (b) मध्य-पाषाण काल में
(c) पुरा-पाषाण काल में (d) प्रोटो-ऐतिहासिक काल में

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S. I[st], 2005**

व्याख्या : वैश्विक संदर्भ में नवपाषाण युग 9000 ई.पू. में आरम्भ होता है, परन्तु भारत में नवपाषाण कालीन सभ्यता का प्रारंभ ईसा पूर्व 4000 के लगभग हुआ। बलूचिस्तान के मेहरगढ़ में एक ऐसी प्राचीन बस्ती (वर्तमान पाकिस्तान) मिली है, जिसका समय 7000 ई.पू. बताया जाता है। नवपाषाणकालीन अर्थव्यवस्था का आधारभूत तत्व खाद्य उत्पादन और पशुओं को पालतू बनाने की जानकारी है, जिसका तकनीकी आधार पाषाण उपकरण है। नवपाषाण काल की प्रथम और प्रमुख उपलब्धि खाद्य उत्पादन (कृषि कार्य) का आविष्कार, पशुओं के उपयोग की जानकारी तथा स्थिर ग्राम्य जीवन का विकास है। कृषि के आविष्कार के साथ बर्तनों की आवश्यकता महसूस हुई जिसके कारण कुम्भकारी सर्वप्रथम इसी युग में परिलक्षित होती है।

23. राख के टीले किस क्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति से सम्बन्धित हैं?

(a) पूर्वी भारत (b) दक्षिण भारत
(c) उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र (d) कश्मीर घाटी

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**
UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2009

व्याख्या : दक्षिण भारत में स्थिर ग्राम्य जीवन की आधार-रेखा नव-पाषाणकालीन संस्कृति से प्राप्त होती है। खेती की फसलों में बाजरे और चने का अवशेष मिला है। मवेशियों, भेड़-बकरियों के विस्तृत अवशेष तथा अन्य पशुओं की अस्थियां मिली हैं, जिनसे अर्थव्यवस्था में पालतू-पशुओं के महत्व का संकेत मिलता है। इस संस्कृति के लोग अपने मवेशियों को संभवतः प्रत्येक वर्ष की किसी कालावधि में अपने घरों के बाहर बाँध देते थे। जिस इलाके में मवेशी रखे जाते थे, उसमें लकड़ी के डंडों की बाड़ लगा दी जाती थी। बाड़ के भीतर जो गोबर एकत्र होता था उसे प्रतिवर्ष बाड़ के डंडों के साथ ही जला दिया जाता था। यह जलाने का कार्य संभवतः पोंगल समारोह के आस-पास किया जाता था, जो मकर-संक्रान्ति को पड़ता है। प्रतिवर्ष इस प्रक्रिया की लगातार पुनरावृत्ति का परिणाम यह हुआ कि जिस जगह वह होली जलाई जाती थी, वहाँ राख का एक टीला बन गया। दक्षिण भारतीय पुरातत्व में इन टीलों को भस्म टीला (Ash mounds) कहा जाता है। ऐसा ही राख का ढेर कर्नाटक के पिक्लीहल एवं संगनकल्लू से प्राप्त हुआ है।

24. नवपाषाण कालीन गर्त-निवासों के अवशेष कहाँ से मिले थे?

1. बुर्जहोम 2. गुफकराल 3. कुचई 4. महगड़ा

नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) 1 एवं 4 (b) 2 एवं 3 (c) 3 एवं 4 (d) 1 एवं 2

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008, 2003, 2005**
UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2011
UPPCS BEO GS 2006

व्याख्या : उत्तरी भारत में नवपाषाण काल के पुरावशेष जम्मू-कश्मीर प्रदेश में झेलम की घाटी में स्थित विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं। बुर्जहोम और गुफकराल के उत्खनन से गर्त-निवासों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। कश्मीर के इन दोनों नवपाषाणिक स्थलों की मुख्य विशेषता गर्तावास, विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड, पत्थर व हड्डी के औजार तथा सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का पूर्णतः अभाव है। बुर्जहोम की खोज 1935 ई. में डी. टेरा तथा पीटरसन ने किया था। मानव शवाधान में कुत्ते दफनाने का साक्ष्य बुर्जहोम से मिला है।

25. मानव शवाधानों में कुत्ते दफनाये गये थे :

(a) गुफकराल में (b) बुर्जहोम में (c) मार्तण्ड में (d) मेहरगढ़ में

उत्तर-(b) **UPPCS (J) 2015**
UPPCS (Pre) Opt. History 2006
UP Lower (Pre) 2008

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. निम्नलिखित में से किस स्थान पर नवपाषाण स्तर पर गेहूँ एवं जौ की खेती के सर्वप्रथम प्रमाण मिलते हैं?

(a) रंगपुर (b) लोथल (c) मेहरगढ़ (d) कोलडिहवा

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : सिन्ध और बलूचिस्तान की सीमा पर कच्ची का मैदान में बोलन नदी के किनारे मेहरगढ़ नामक स्थल से कृषि का पहला स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त हुआ है। इस स्थल का उत्खनन 1974 ई. से प्रारम्भ हुआ। लगभग ईसा पूर्व 7000 के आसपास में कृषिजन्य गेहूँ और जौ की विभिन्न किस्में प्राप्त हुई हैं। मेहरगढ़ से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए है। नवीनतम शोधों के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि का प्राचीनतम् साक्ष्य उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में स्थित लहुरादेव से प्राप्त होता है जहाँ से 9000 ई.पू. से 8000 ई.पू. के मध्य के चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
नोट—यदि मेहरगढ़ और लहुरादेव दोनों विकल्प में हो तो लहुरादेव उचित विकल्प होगा।

27. भारत में व्यवस्थित कृषि का प्राचीनतम् प्रमाण कहाँ से प्राप्त होता है–

(a) मेहरगढ़ (b) कालीबंगा (c) लोथल (d) कोटदीजी

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2010, 2007**
UP Lower (Pre) 2004, 2008
UPPCS (Pre) Opt. History 2009

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. निम्न में से किस एक पुरा स्थल से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं?

(a) आम्री (b) मेहरगढ़ (c) कोटदीजी (d) कालीबंगा

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. उस स्थल का नाम बताइये जहाँ से प्राचीनतम् स्थायी जीवन के प्रमाण मिले हैं?

(a) धौलावीरा (b) किले गुल मोहम्मद (c) कालीबंगा (d) मेहरगढ़

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. I[st] 2008**

व्याख्या : नवपाषाणकालीन प्राचीनतम् बस्ती मेहरगढ़ से मानव जीवन के स्थायी साक्ष्य मिलते हैं। यह बस्ती पाकिस्तान में स्थित बलूचिस्तान प्रान्त में है जहाँ पर कृषि करने एवं लोगों के स्थायी निवास हेतु कच्चे घरों का भी साक्ष्य मिलता है। मेहरगढ़ से ही भारतीय उपमहाद्वीप में पालतू भैस का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

30. भारतीय उपमहाद्वीप में पालतू भैंस का प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(a) धोलावीरा (b) मेहरगढ़ (c) मोहनजोदड़ो (d) राखीगढ़ी

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003, 2005**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज था–

(a) गेहूँ (b) चावल (c) जौ (d) बाजरा

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या : मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज जौ था। नवपाषाणकालीन सभ्यता के प्रारम्भ में मेसोपोटामिया क्षेत्र में सर्वप्रथम जौ को खाद्यान्न के रूप में प्रयोग किया गया, जिसका प्रमाण सातवीं सदी ईसा पूर्व से मिलने लगता है।

ताम्र पाषाण काल

32. ताम्राश्म काल में महाराष्ट्र के लोग मृतकों के शरीर को फर्श के नीचे किस तरह रखकर दफनाते थे?

(a) उत्तर से दक्षिण की ओर (b) पूर्व से पश्चिम की ओर
(c) दक्षिण से उत्तर की ओर (d) पश्चिम से पूर्व की ओर

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या: भारत में सिन्ध क्षेत्र के बाहर अनेक विकसित ग्रामीण संस्कृतियों के दर्शन होते हैं। इन्हे ताम्रपाषाणिक कहा गया है क्योंकि इन संस्कृतियों के लोग पत्थर के साथ–साथ तांबे की वस्तुओं का प्रयोग करते थे। ताम्र पाषाणिक संस्कृति के सबसे अधिक स्थल पश्चिमी महाराष्ट्र में मिलते हैं। गोदावरी की सहायक प्रवरा नदी के बायें तट पर स्थित जोर्वे इसका प्रतिनिधि स्थल है। अतः इसे जोर्वे संस्कृति भी कहते हैं। इसकी सामान्य तिथि ई.पू. 1400 से 1000 के बीच है। यहाँ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि बहुत सारे शवाधान कलश में किये गये हैं। ये कलश घरों के फर्श के नीचे उत्तर-दक्षिण दिशा में रखे गये हैं।

33. नवदाटोली किस राज्य में अवस्थित है?

(a) गुजरात (b) महाराष्ट्र (c) छत्तीसगढ़ (d) मध्य प्रदेश

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2009**
UP Lower (Pre) Spl. 2008

व्याख्या : नवदाटोली, मध्य प्रदेश में स्थित ताम्रपाषाणिक मालवा संस्कृति का स्थल है। इसका उत्खनन एच.डी. सांकालिया ने 1957-59 ई. में करवाया था। यह मालवा की ताम्रपाषाणिक सांस्कृति का प्रतिनिधि स्थल व सबसे बड़ा केन्द्र है। नवदाटोली भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे विस्तृत उत्खनित ताम्रपाषाणिक ग्राम स्थल है। इनामगाँव जोर्वे ताम्रपाषाण काल का स्थल है जो महाराष्ट्र के पुणे जिले में स्थित है।

34. इनामगाँव भारत के किस राज्य में स्थित है?

(a) मध्य प्रदेश (b) आन्ध्र प्रदेश (c) महाराष्ट्र (d) गुजरात

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. भारत के किस स्थल की खुदाई से लौह धातु के प्रचलन के प्राचीनतम प्रमाण मिले हैं?

(a) तक्षशिला (b) अतरंजीखेड़ा (c) कौशाम्बी (d) हस्तिनापुर

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1998**

व्याख्या : अतरंजीखेड़ा (एटा, उत्तर प्रदेश) की खुदाई से कुछ लोहे के उपकरण प्राप्त हुए हैं। विद्वानों ने इसका समय ई. पू. प्रथम सहस्राब्दि निर्धारित किया है। इससे सिद्ध होता है कि उत्तर भारत में 1000 ई. पू. से लोहे के उपकरणों का प्रयोग होने लगा था, इसे अभी तक का प्राचीनतम साक्ष्य माना जाता था।

पाषाण काल विविध

36. दक्षिण भारत की वृहद पाषाण समाधियाँ सम्बन्धित हैं :

(a) पूर्व पाषाण काल से (b) नव पाषाण काल से
(c) ताम्र पाषाण काल से (d) लौह काल से

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**
UPPCS (Mains) G.S. I[st], 2005

व्याख्या : दक्षिण भारत में पाषाण युग के बाद दक्कन के पठार तथा सुदूर प्रायद्वीप में महापाषाण संस्कृति का उदय हुआ। यह संस्कृति एक हद तक भारत के पूर्वी मध्य तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में भी पाई जाती है किन्तु दक्षिणी भारत के संदर्भ में इसका विशेष महत्व है। महापाषाणीय संस्कृति की ऐतिहासिक महत्व की दो विशेषताएं हैं-(1) इसका लौह युग से अविरल रूप से जुड़ा होना तथा (2) काले एवं लाल मृदभाण्डों के आविर्भाव से संयुक्त होना। यहाँ ध्यातव्य है कि दक्षिण भारत की बृहद पाषाण समाधियों (स्मारकों) की पहचान मृतकों को दफनाने के स्थान के रूप में किया जाता था।

37. गैरिक मृद्भाण्ड पात्र (ओ.सी.पी.) का नामकरण हुआ था-

(a) हस्तिनापुर में (b) अहिच्छत्र में (c) नोह में (d) लाल किला में

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S.-2006**

व्याख्या : गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति की खोज पहली बार 1949 ई. में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विसौली (बदायूँ) तथा राजपुरपरसू (बिजनौर) नामक स्थलों पर बी.वी.लाल द्वारा की गई। हस्तिनापुर के उत्खनन से इनका नामकरण हुआ। उत्खनन के आधार पर OCP का काल 2650 से 1180 ई. पूर्व निर्धारित किया गया।

38. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. पुरापाषाण काल	1. कच्चे एवं पक्के मकान
B. मध्यपाषाण काल	2. नदीतट अधिवास
C. नवपाषाण काल	3. शैलाश्रय अधिवास
D. ताम्रपाषाण काल	4. गर्त अधिवास

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)	(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**

व्याख्या :

A. पुरापाषाण काल	- नदी तट अधिवास
B. मध्यपाषाण काल	- शैलाश्रय अधिवास
C. नवपाषाण काल	- गर्त अधिवास
D. ताम्रपाषाण काल	- कच्चे एवं पक्के मकान

39. निम्नलिखित में से कौन-सा सही सुमेलित नहीं है?

(a) कायथा - कर्नाटक (b) चिरांद - बिहार
(c) पाण्डुराजारढिबि - बंगाल (d) दायमाबाद - महाराष्ट्र

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : कायथा नामक पुरास्थल मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले में स्थित है। भारतीय साहित्य में इसे वाराहमिहिर की जन्मभूमि 'कपित्थक' के रूप में पहचाना गया है। यहाँ उत्खनन से 'ताम्रनिधियाँ' प्राप्त हुई हैं। 'चिरांद' बिहार के सारण जिले में स्थित एक नवपाषाणिक स्थल है जहाँ उत्खनन से आवास, मिट्टी के बर्तन तथा कुल्हाडियाँ प्राप्त हुई है। अन्य प्रस्तर उपकरणों में सिल-लोढ़े, हथौड़े तथा गोफन-पाषाण आदि का उल्लेख किया जा सकता है। यहाँ की एक अन्य विशेषता हड्डी तथा श्रृंग पर बने उपकरण हैं। पाण्डुराजारढिबि पश्चिम बंगाल में स्थित एक प्रमुख आद्य-ऐतिहासिक पुरास्थल है जहाँ से आद्य-ऐतिहासिक काल के कुछ प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं। दायमाबाद महाराष्ट्र में स्थित एक प्रमुख पुरास्थल है जहाँ के उत्खनन से गैंडा, एक हाथी, एक भैंसा, एक रथ आदि प्राप्त हुए हैं।

40. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. बीरभानपुर	1. बनास संस्कृति
B. उज्जैन	2. ताम्र निधि
C. कायथा	3. गैरिक मृद्भाण्ड परम्परा
D. अहाड़	4. लघुपाषाण उपकरण

कूट:

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	4	2	1	(b)	4	3	2	1
(c)	2	3	4	1	(d)	1	4	2	3

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
बीरभानपुर	लघुपाषाण उपकरण
उज्जैन	गैरिक मृद्भाण्ड परम्परा
कायथा	ताम्र निधि
अहाड़	बनास संस्कृति

41. कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री से पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीय विभाजन किया था

(a) थॉमसन ने (b) लुब्बाक ने (c) टेलर ने (d) चाइल्ड ने

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2010**

व्याख्या : डेनमार्क के कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री का पाषाण, कांस्य और लौह युग में त्रियुगीय विभाजन थॉमसन ने 1820 ई. में किया था।

02. सिन्धु सभ्यता एवं संस्कृति (Indus Civilization and Culture)

42. हड़प्पा सभ्यता के निम्नलिखित में से किस स्थान से जल संरक्षण के साक्ष्य मिले हैं?

(a) कालीबंगा (b) मोहन जोदड़ों (c) लोथल (d) धौलावीरा

UPPCS (J) 2022 (12-02-2023)

Ans. (d) : हड़प्पा सभ्यता के पुरास्थल धौलावीरा से जल संरक्षण के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। यह मनहर व मनसर नदियों के संगम पर डैम बनाकर किया गया था। गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1967-68 ई. में जे.पी. जोशी ने किया था, किन्तु उत्खनन कार्य 1990 - 91 ई. में आर.एस. बिष्ट द्वारा किया गया। यह आयताकार नगर दुर्ग, मध्यम नगर तथा निचला नगर जैसे तीन भागों में विभाजित था। यहाँ से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य-पत्थरों पर पालिश, स्थापत्य में कच्ची ईंटों के साथ बलुआ पत्थर प्रयुक्त, 10 बड़े अक्षरों वाला साइन बोर्ड, खेल स्टेडियम, घोड़े की कलाकृति नहर प्रणाली, सात सांस्कृतिक चरण इत्यादि।

43. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए -

	सूची-I (हड़प्पा पुरास्थल)		सूची-II (फसल)
A.	चान्हूदड़ों	**1.**	तिल
B.	हड़प्पा	**2.**	कोदो
C.	कुन्ताशी	**3.**	धान
D.	हुलास	**4**	सरसों

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	4	1	2	3	(b)	3	2	4	1
(c)	1	2	3	4	(d)	2	4	1	3

UPPCS (J) 2022 (12-02-2023)

Ans. (a) : दोनों सूचियों का सही क्रम -

सूची-I (हड़प्पा पुरास्थल)	सूची-II (फसल)
1. चान्हूदड़ो	सरसों
2. हड़प्पा	तिल
3. कुन्ताशी	कोदो
4. हुलास	धान

44. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में उत्खनित प्रथम सैन्धव स्थल है

(a) रोपड़ (b) कालीबंगा (c) बनवाली (d) लोथल

UPPCS (J) 2015

Ans. (a) : रोपड़ पुरातात्विक स्थल रोपड़ (पंजाब) जिला में सतलज नदी के बाये तट पर स्थित है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इसका सर्वप्रथम उत्खनन किया गया था। इसका आधुनिक नाम रूपनगर है। इसकी खोज बी.बी. लाल ने 1950 ई. में की थी।

45. हड़प्पा संस्कृति के निम्नलिखित स्थलों में कौन से सिन्ध में स्थित है?

1. हड़प्पा 2. मोहनजोदड़ो 3. चन्हूदड़ो 4. सुरकोटदा

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर निर्दिष्ट कीजिए:

(a) 1 एवं 2 (b) 2 एवं 3 (c) 3 एवं 4 (d) 1, 2, 3 एवं 4

UPPCS (J) 2013

Ans. (b) : हड़प्पा संस्कृति के मोहनजोदड़ो (सिंध के लरकाना जिले), चन्हूदड़ो (सिंध प्रांत) सिंध में स्थित है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त - विशाल स्नानागर, अन्नागार, सभाभवन सिंधु सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल है। चन्हूदड़ो से प्राप्त वक्रकार ईट, मनका निर्माण का कारखाना महत्वपूर्ण है। हड़प्पा पंजाब (पाकिस्तान) के मांटगोमरी जिले में तथा सुरकोटदा गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है।

46. निम्न हड़प्पाई स्थलों में से किस एक से विस्तृत क्रीड़ा क्षेत्र (स्टेडियम) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
(a) कुराल (b) मोहनजोदड़ो (c) माण्डा (d) देसलपुर
UPPCS (J) 2006

Ans. (a) : हड़प्पाई स्थल जूनी-कुराल से क्रीड़ा क्षेत्र (स्टेडियम) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

47. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (हड़प्पीय स्थल)	सूची-II (उपज)
A. बनावली	1. बादाम
B. हुलास	2. गोधूम (गेहूँ)
C. शिकारपुर	3. कोदो
D. कुन्तासी	4. रेशम-सूती वस्त्र

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	2	1	4	3
(c)	3	1	4	2	(d)	2	3	4	1

उत्तर-(a) UPPSC ACF/RFO (Mains) 2019 Paper I

व्याख्या : सही सुमेलन है:–

सूची-I (हड़प्पीय स्थल)		सूची-II (उपज)
(a) बनावली	–	बादाम
(b) हुलास	–	गोधूम (गेहूँ)
(c) शिकारपुर	–	कोदो
(d) कुन्तासी	–	रेशम-सूती वस्त्र

48. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए –

सूची-I (हड़प्पा संस्कृति की बस्ती)	सूची-II (नदी जिस पर अवस्थित है)
(a) हड़प्पा	1. भोगवा
(b) कालीबंगा	2. घग्गर
(c) लोथल	3. रावी
(d) रोपड़	4. सतलज

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	2	1	4	(b)	3	4	1	2
(c)	4	2	3	1	(d)	1	3	2	4

उत्तर-(a) UP UDA/LDA (M) 2010

व्याख्या :

सूची-I (हड़प्पा संस्कृति की बस्ती)	सूची-II (नदी जिस पर अवस्थित है)
हड़प्पा	रावी
कालीबंगा	घग्घर
लोथल	भोगवा
रोपड़	सतलज

49. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये–

सूची-I (हड़प्पीय स्थल)	सूची-II (स्थिति)
A. माण्डा	1. राजस्थान
B. दैमाबाद	2. हरियाणा
C. कालीबंगा	3. जम्मू-कश्मीर
D. राखीगढ़ी	4. महाराष्ट्र

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	2	3	4	1
(c)	3	4	1	2	(d)	4	1	2	3

उत्तर-(c) UPPCS (Pre) G.S. 2012, 2020
UP APO 2011, UP UDA/LDA (Pre) 2006

व्याख्या : सही सुमेल है –

माण्डा	–	जम्मू कश्मीर
दैमाबाद	–	महाराष्ट्र
कालीबंगा	–	राजस्थान
राखीगढ़ी, बालू	–	हरियाणा
पाडरी	–	गुजरात
हुलास	–	उत्तर प्रदेश

50. सूची I को सूची- II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
(a) हड़प्पा	1. शवाधान R-37
(b) लोथल	2. गोदी
(c) कालीबंगा	3. नर्तकी की मूर्ति
(d) मोहनजोदड़ो	4. जुता हुआ खेत

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	2	1	4	3
(c)	3	1	4	2	(d)	1	2	4	3

उत्तर-(d) UPPCS (Pre) Opt. History 2003, 2005
UPPCS (Mains) G.S.-I[st] 2017

व्याख्या : (a) हड़प्पा- शवाधान (R-37), कर्मचारियों का निवास
(b) लोथल- गोदी
(c) कालीबंगा- जुता हुआ खेत
(d) मोहनजोदड़ो- नर्तकी की आकृति

51. निम्नलिखित में से किन पुरास्थलों से मनका (मणिका) बनाने के कारखानों का प्रमाण मिलता है ?
1. चन्हूदड़ो 2. मोहनजोदड़ो 3. कोटदीजी 4. लोथल
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए :
कूट :
(a) 1 तथा 2 (b) 2 तथा 4 (c) 1 तथा 4 (d) 2 तथा 3
उत्तर– (c) UPPSC ACF (Pre) 2017

व्याख्या– सैन्धव सभ्यता में स्वर्णकार आभूषणों के निर्माण में दक्ष थे। शंख, शीप एवं हाथी दांत से विभिन्न प्रकार की वस्तुएं और आभूषण बनाये जाते थे। चन्हूदड़ो तथा लोथल से मनके बनाने के कारखाने प्राप्त हुए है।

52. निम्न में से सिंधु सभ्यता से सम्बन्धित कौन-से केन्द्र उत्तर प्रदेश में स्थित हैं?
नीचे दिए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
I. कालीबंगा II. लोथल III. आलमगीरपुर IV. हुलास
कूट :
(a) I, II, III, IV (b) I, II (c) II, III (d) III, IV
उत्तर-(d) UPPSC Ayurvedacharya 2022
UPPCS (Pre)-2018

व्याख्या– विकल्प में दिये गये केन्द्रों में से दो केन्द्र आलमगीरपुर और हुलास उत्तर प्रदेश में स्थित हैं, जबकि लोथल गुजरात के अहमदाबाद जिले में तथा कालीबंगा, राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित है।
आलमगीरपुर–मेरठ जिले में हिण्डन नदी के तट पर स्थित है। इस स्थल की खोज 1958 ई. में भारत सेवक समाज द्वारा की गई। इसका उत्खनन कार्य 1958 ई. में यज्ञ दत्त शर्मा ने कराया। यह सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल है।
हुलास–यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में स्थित है।

53. मोहनजोदड़ो में वृहत् स्नानागार परिसर के तालाब में सीढ़ियाँ थीं-
1. उत्तरी पार्श्व में 2. दक्षिणी पार्श्व में
3. पूर्वी पार्श्व में 4. पश्चिमी पार्श्व में

नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) केवल 1 (b) केवल 3 (c) 1 एवं 2 (d) 3 एवं 4

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

UPPCS (Pre) G.S. 1992

व्याख्या : मोहनजोदड़ो का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थल विशाल स्नानागार था। जो उत्तर से दक्षिण 54.86 मीटर तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 33 मीटर का है। इसमें उतरने के लिए उत्तर तथा दक्षिण की ओर सीढ़ियाँ बनी है। स्नानागार के केन्द्रीय भाग में अवस्थित जलाशय 14.5 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है। स्नानागार की फर्श पक्की ईंटों की बनी है, फर्श तथा दीवारों की जुड़ाई जिप्सम से की गई है। इसका प्रयोग संभवतः सार्वजनिक रूप से धार्मिक अनुष्ठान संबंधी स्नान के लिए होता था।

54. हड़प्पा संस्कृति के निम्नलिखित में से कौन से स्थल कच्छ प्रदेश में स्थित हैं?

1. देसलपुर 2. धौलावीरा 3. लोथल 4. रोजदी

नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) 1 एवं 2 (b) 3 एवं 4 (c) 1, 2 एवं 3 (d) 1, 2, 3 एवं 4

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

व्याख्या : हड़प्पा संस्कृति से जुड़े स्थलों में देसलपुर, सुरकोटदा एवं धौलावीरा कच्छ क्षेत्र में स्थित है, जबकि रोजदी, रंगपुर एवं लोथल खम्भात क्षेत्र में स्थित है। हड़प्पा सभ्यता के स्थल राखीगढ़ी और बनावली हरियाणा में स्थित है। यहाँ ध्यातव्य है कि सिंधु सभ्यता सिन्धु, चिनाब व झेलम नदियों के तट पर बसी थीं।

55. हड़प्पा संस्कृति के निम्नलिखित में से कौन से स्थल हरियाणा में स्थित हैं?

1. बनावली 2. कालीबंगा 3. राखीगढ़ी 4. रोपड़

निम्नलिखित कूट से अपना उत्तर निर्दिष्ट कीजिए –

(a) 1 एवं 2 (b) 2 एवं 3 (c) 1 एवं 3 (d) 3 एवं 4

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. सिन्धु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे थीं-

1. सिन्धु 2. चिनाब 3. झेलम 4. गंगा

नीचे दिये गये कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3 (c) 2, 3 और 4 (d) सभी चारों

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2009**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

57. निम्नलिखित युग्मों पर ध्यान दें :

साइट	**स्थान**
(1) चन्हूदड़ो	सिन्ध
(2) लोथल	गुजरात
(3) कालीबंगा	पंजाब
(4) बनावली	हरियाणा

उपरोक्त में कौन सा युग्म गलत है?

(a) केवल 3 (b) केवल 1 और 3 (c) केवल 2 और 4 (d) केवल 4

उत्तर-(a) **UPPSC Vetting Officer 2020**

UPPCS (Pre) G.S. 1996

व्याख्या :

चन्हूदड़ो	–	सिन्ध
लोथल	–	गुजरात
कालीबंगा	–	राजस्थान
बनावली	–	हरियाणा
रोपड़	–	पंजाब
सुरकोटदा	–	गुजरात
आलमगीरपुर	–	उत्तर-प्रदेश
रंगपुर	–	गुजरात
हड़प्पा	–	पाकिस्तान के पंजाब प्रांत
दैमाबाद	–	महाराष्ट्र
राखीगढ़ी	–	हरियाणा

58. सिन्धु सभ्यता के लोग किससे परिचित नहीं थे-

(i) बाघ (iv) अज (ii) अश्व (v) शेर (iii) हाथी

कूट :

(a) सिर्फ (ii) से (b) सिर्फ (v) से

(c) (i), (iii) (iv) से (d) (ii) व (iii) से

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009, 2010**

व्याख्या : सिन्धु सभ्यता के लोग बैल, भेड़, बकरी, सुअर पालते थे। सैन्धव मुहरों पर बाघ, हाथी, गैंडा, भैंसा, हिरन, एक शृंगी पशु की आकृति अंकित है। सुरकोटदा पुरास्थल से घोड़े की अस्थियों के प्रमाण मिले हैं। शेर के बारे में कोई जानकारी हमें सैन्धव सभ्यता से नहीं मिलती।

59. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित नहीं है?

(a) हड़प्पा	-	दयाराम साहनी
(b) लोथल	-	एस. आर. राव
(c) सुरकोटदा	-	जे.पी. जोशी
(d) धौलावीरा	-	बी.के. थापड़

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) G.S. Ist, 2006**

UPAP-2011

व्याख्या : धौलावीरा स्थल गुजरात प्रान्त में अवस्थित है। यहाँ के टीलों की खोज 1967-68 ई. में डा. जे. पी. जोशी ने सर्वप्रथम की थी, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी थे। इसके उत्खनन का कार्य विस्तृत तौर पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के ही एक अन्य अधिकारी डॉ आर. एस. बिष्ट के मार्गदर्शन में 1990-91 ई. में किया गया था। यहाँ से सुरक्षा-गृह का प्रमाण प्राप्त हुआ है।

60. नीचे दो वाक्यांश दिये हैं -

कथन (A) : मोहनजोदडो तथा हड़प्पा नगर अब विलुप्त हो गये हैं।

कारण (R) : वह खुदाई के दौरान प्रकट हुये।

उपर्युक्त के संदर्भ में निम्न में से कौन एक सही है?

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही स्पष्टीकरण है (A) का

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, किन्तु (R) सही स्पष्टीकरण नहीं है (A) का

(c) (A) सही है, किन्तु (R) गलत

(d) (A) गलत है, किन्तु (R) सही है

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2009**

व्याख्या : मोहनजोदड़ो की खोज उत्खनन के दौरान राखालदास बनर्जी ने 1922 ई. में की थी जो वर्तमान में पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएं तट पर तथा हड़प्पा की खोज उत्खनन के दौरान दयाराम साहनी ने 1921 ई. में की थी। जो वर्तमान के पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के साहीवाल (मांटगोमरी) जिले के रावी नदी के बाएँ तट पर स्थित है। वर्तमान में नगर मृत (विलुप्त) स्थिति में है। इस प्रकार कथन और कारण दोनों सही है किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

61. निम्नलिखित वक्तव्यों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

कथन (A) : हड़प्पीय धर्म के एक लक्षण के रूप में मातृदेवी की पूजा हड़प्पा संस्कृति के सभी प्रमुख नगरों में प्रचलित थी।

कारण (R) : हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से पकी मिट्टी की स्त्री आकृतियाँ बड़ी संख्या में प्राप्त हुई हैं।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, किन्तु (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है

(c) (A) सही है, किन्तु (R) गलत है

(d) (A) गलत है, किन्तु (R) सही है

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : सिन्धु सभ्यता के सिन्ध तथा पंजाब के क्षेत्रों में स्थित अनेक पुरास्थलों से नारी मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। विद्वानों ने इन मृण्मूर्तियों को मातृ-शक्ति की उपासना से सम्बद्ध किया है। नारी मृण्मूर्तियां कालीबंगा, लोथल, सुरकोडटा और मिताथल जैसे प्रमुख नगरों में नहीं मिली हैं।

62. वस्त्रों के लिए कपास की खेती का आरम्भ सबसे पहले किया–
(a) मिस्र में (b) मेसोपोटामिया में
(c) मध्य अमरीका में (d) भारत में
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 2006**

व्याख्या : वस्त्रों के लिए कपास की खेती का आरम्भ सबसे पहले भारत में किया गया।सिन्धु सभ्यता में इसके अवशेष मिले है। सिन्धु सभ्यता का प्रमुख उद्योग सूती वस्त्र उद्योग था।

63. सिन्धु सभ्यता सम्बन्धित है–
(a) प्रागैतिहासिक युग से (b) आद्य-ऐतिहासिक युग से
(c) ऐतिहासिक युग से (d) उत्तर-ऐतिहासिक युग से
उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1996**

व्याख्या : इतिहास का विभाजन **प्रागैतिहासिक, आद्य ऐतिहासिक** तथा **ऐतिहासिक** तीन भागों में किया गया है। **प्रागैतिहासिक** से तात्पर्य उस काल से है जिसका कोई लिखित साक्ष्य नहीं है। **आद्य ऐतिहासिक** वह है जिसमें लिपि के साक्ष्य तो हैं किन्तु उनके अपठ्य या दुर्बोध होने के कारण इनसे कोई ऐतिहासिक निष्कर्ष नहीं निकलता। जहाँ से लिखित साक्ष्य मिलने लगते हैं, वह **ऐतिहासिक काल** कहलाता है। इस दृष्टि से पाषाणकालीन सभ्यता प्रागैतिहासिक तथा सिन्धु एवं वैदिक सभ्यता आद्य–ऐतिहासिककाल के अंतर्गत आती है। ई.पू. छठी शताब्दी से ऐतिहासिक काल आरम्भ होता है। सिन्धु सभ्यता एक ताम्र पाषाणिक सभ्यता है जो आद्य ऐतिहासिक युग से संबंधित है। सिन्धु सभ्यता की लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

64. निम्नलिखित में से किस स्थल से, प्रारम्भिक हड़प्पा काल में दुर्गीकरण के साक्ष्य मिले हैं?
(a) बनावली (b) रोपड़ (c) लोथल (d) आम्री
उत्तर-(d) **UPPSC AE- 2013**

व्याख्या : आम्री का उत्खनन 1929 ई. में एन.सी. मजूमदार ने किया था। यहाँ प्राक हड़प्पा के 4 पुरातत्विक स्थल मिले हैं। आम्री से प्रारम्भिक हड़प्पा काल में दुर्गीकरण के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से मृदभाण्डो पर प्रथम बार पशु अंकन के साक्ष्य, बारहसिंघा का साक्ष्य आदि मिले।

65. सैन्धव मुद्राओं का सर्वाधिक प्रचलित अभिप्राय निम्नलिखित में से कौन है?
(a) गज (b) वृषभ (c) गैंडा (d) एकशृंगी पशु
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009, 2010**

व्याख्या : सैन्धव मुद्रा का सर्वाधिक प्रचलित अभिप्राय एकशृंगी पशु है। जबकि धार्मिक पवित्रता की दृष्टि से कूबड़ वाला बैल सबसे महत्वपूर्ण था। मोहनजोदड़ो से मिली एक मुद्रा पर पशुपति शिव की आकृति के साथ हाथी, बाघ, गैंडा, भैंसा दिखाये गये हैं। इसी प्रकार एक अन्य मुद्रा पर उपरोक्त चार पशुओं के साथ एक बिच्छू भी दिखाया गया है जबकि कालीबंगा से प्राप्त एक मुद्रा पर व्याघ्र का भी अंकन किया गया है। सिन्धु घाटी की अधिकांश मुद्राएँ सेलखड़ी से निर्मित की जाती थी।

66. हड़प्पा सभ्यता की अधिकांश मुद्राएँ बनी हुई है
(a) चर्ट की (b) सेलखड़ी की (c) ताँबा की (d) लोहा
उत्तर-(b) **UPPSC ACF/RFO (Mains) 2020 Paper I**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

67. सिन्धु घाटी संस्कृति वैदिक सभ्यता से भिन्न थी क्योंकि–
(a) इसके पास विकसित शहरी जीवन की सुविधाएं थीं
(b) इसके पास चित्रलेखीय लिपि थी
(c) इसके पास लोहे और रक्षा शस्त्रों के ज्ञान का अभाव था।
(d) उपर्युक्त सभी
उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. 2004**
UPPCS (Pre) G.S. 1992

व्याख्या : सिन्धु घाटी की सभ्यता वैदिक सभ्यता से भिन्न थी क्योंकि इसके पास विकसित नगरीय जीवन की सुविधाएं थी; इसके पास चित्रलेखीय लिपि थी तथा इसके पास लोहे और रक्षा शस्त्रों के ज्ञान का अभाव था। ध्यातव्य है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता थी जबकि वैदिक सभ्यता ग्रामीण सभ्यता थी।

68. भारत का सबसे बड़ा हड़प्पन पुरास्थल है–
(a) आलमगीरपुर (b) कालीबंगा (c) लोथल (d) राखीगढ़ी
उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. 2004**

व्याख्याः हड़प्पा सभ्यता का पुरास्थल राखीगढ़ी हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है। इस स्थल की खोज प्रो. सूरज भान और रफीक मुगल ने 1969ई. में की थी। यहाँ से सिंधु पूर्व सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। भारत में हड़प्पा सभ्यता के विशालतम नगरों में राखीगढ़ी एक है। यहाँ ध्यातव्य है कि बुर्जहोम एक नवपाषाणकालीन स्थल है जो सिन्धु सभ्यता से सम्बद्ध नहीं है।

69. निम्नलिखित में से कौन पुरातात्विक स्थल सिन्धु सभ्यता से सम्बद्ध नहीं है?
(a) दधेरी (b) हुलास (c) माण्डा (d) बुर्जहोम
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

70. किसने 'सिन्धु सभ्यता' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किया था?
(a) सर जॉन मार्शल (b) मॉर्टीमर ह्वीलर
(c) अर्नेस्ट मैके (d) एम.एस. वत्स
उत्तर-(b) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : सर्वप्रथम जान मार्शल ने 1924 ई. में प्रकाशित अपने लेख में इसे 'सिंधु घाटी सभ्यता' नाम दिया। जब इस सभ्यता का परिचय सिंधु घाटी के बाहर भी मिलने लगा तब मार्टिमर ह्वीलर ने अपनी पुस्तक में से इसे सिंधु सभ्यता नाम दिया। हड़प्पा सभ्यता के जानकारी के प्रमुख स्रोत पुरातात्विक खुदाई है।

71. हड़प्पा संस्कृति की जानकारी का प्रमुख स्रोत है–
(a) शिला लेख
(b) पक्की मिट्टी की मुहरों पर अंकित लेख
(c) पुरातात्विक खुदाई
(d) उपरोक्त सभी
उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1996, 1994, 1993**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

72. निम्नलिखित कथन के रिक्त शब्द को इंगित कीजिए- हड़प्पा, मोहनजोदड़ों तथा कालीबंगा में दुर्ग नगर के .... में स्थित है।
(a) पूर्व (b) पश्चिम (c) उत्तर (d) दक्षिण
उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 1998**

व्याख्या : सैन्धव सभ्यता के नगरों में दो टीले प्राप्त हुये हैं। जहाँ दुर्ग का टीला पश्चिम में तथा नगर पूर्व में स्थित था जो कि एक सुरक्षा प्राचीर से घिरे हुये थे। यही नगर विन्यास हड़प्पा, मोहनजोदड़ों एवं कालीबंगा में भी है। यहाँ ध्यातव्य है कि अधिसंख्य हड़प्पा स्थल सिंधु घाटी में स्थित है।

73. अधिसंख्य हड़प्पा स्थल स्थित हैं
(a) सिन्धु घाटी में (b) गंगा घाटी में
(c) सरस्वती घाटी में (d) नर्मदा घाटी में
उत्तर-(a) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

74. भारत में स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक संख्या में हड़प्पन स्थलों की खोज हुई है–
(a) राजस्थान
(b) गुजरात में
(c) पंजाब और हरियाणा में
(d) उत्तरी-पश्चिमी उत्तर प्रदेश में
UPPSC A.E. 2007

Ans. (b) : हड़प्पा संस्कृति का उदय ताम्र पाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ। हड़प्पा सभ्यता का केन्द्र स्थल पंजाब और सिन्ध में मुख्यतः सिन्धु घाटी में पड़ता है। भारत में स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक संख्या में हड़प्पन स्थलों की खोज गुजरात राज्य में हुई यहाँ शवों को जलाने और दफनाने की दोनों पद्धतियाँ प्रचलित थी। भारत में मूर्ति पूजा का प्रारम्भ हड़प्पा काल (पूर्व आर्य काल) से माना जाता है।

75. मूर्ति पूजा का आरम्भ कब से माना जाता है–
(a) पूर्व आर्य (b) उत्तर वैदिककाल (c) मौर्यकाल (d) कुषाण काल
उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1992**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. हड़प्पा संस्कृति की उत्तरी सीमा का निर्धारण करता है।
(a) राखीगढ़ी (b) माण्डा (c) रोपड़ (d) हड़प्पा
UPPSC BEO Re Exam- 2006

Ans. (b) : हड़प्पा संस्कृति की उत्तरी सीमा पर 'माण्डा' नामक हड़प्पीय स्थल स्थित है। 'माण्डा' जम्मू और कश्मीर में स्थित है, जबकि इसकी पूर्वी सीमा आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश), दक्षिणी सीमा दैमाबाद या दायमाबाद (महाराष्ट्र) एवं पश्चिमी सीमा सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान) पाकिस्तान में है।

77. हड़प्पा का उत्खनन करने वाला प्रथम पुरातत्वविद् जो इसके महत्व को समझ पाया था
(a) ए. कनिंघम (b) सर जॉन मार्शल
(c) मार्टिमर व्हीलर (d) जॉर्ज एफ. डेल्स
उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) G.S.-2006**
UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2004

व्याख्या: हड़प्पा पूर्वोत्तर पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का एक पुरातात्विक स्थल है। सिन्धु घाटी सभ्यता के अनेक अवशेष यहां से प्राप्त हुए है। 1921 ई. मे जब सर जान मार्शल भारत के पुरातात्विक विभाग के निर्देशक थे तब इन्हीं के नेतृत्व में 1921 ई. में ही दयाराम साहनी ने खुदाई कराई और हड़प्पा सभ्यता के अनेक साक्ष्य प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि यह सभ्यता प्राचीन काल में सिन्धु नदी के किनारे विकसित थी। हड़प्पा से ही शवपेटिका (ताबूत R-37) के प्रमाण प्राप्त हुए है।

78. निम्न में से किस हड़प्पा स्थान (स्थल) से शवपेटिका (ताबूत) के प्रमाण मिले है?
(a) मोहन जोदड़ो (b) हड़प्पा (c) रोपड़ (d) लोथल
UPPSC AE- 2007 (I)

Ans. (b) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. सिन्धु घाटी की सभ्यता के किस पुरास्थल से नाव के चित्र या मॉडल प्राप्त हुये हैं?
(a) कालीबंगा और रोपड़ (b) हड़प्पा एवं कोटडिजी
(c) मोहनजोदड़ों एवं लोथल (d) धौलाबीरा एवं भगत्राव
UPPCS (Pre) 2022

Ans. (c) : मोहनजोदड़ों से नाव की आकृति वाली मोहर प्राप्त हुई। लोथल से नाव का टेराकोटा प्राप्त हुआ है। नाव की आकृति वाली मोहरों और टेराकोटा से सिन्धु घाटी सभ्यता के समुद्री व्यापार पर प्रकाश पड़ता है। मोहनजोदड़ों जाने वाला प्रथम व्यक्ति राखालदास बनर्जी थे जिन्होंने 1922 ई. में मोहनजोदड़ों की खोज की थीं। यहाँ ध्यातव्य है कि मोहनजोदड़ों से कब्रिस्तान के प्रमाण नहीं मिले है।

80. निम्नलिखित में से हड़प्पा संस्कृति के किस स्थल से कब्रिस्तान के प्रमाण नहीं मिले हैं?
(a) हड़प्पा (b) राखीगढ़ी (c) रोपड़ (d) मोहनजोदड़ो
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

81. निम्नलिखित में से मोहनजोदड़ो जाने वाला व्यक्ति कौन था?
(a) राखालदास बनर्जी (b) सर आरेल स्टाइन
(c) डी.आर. भण्डारकर (d) एन.जी. मजूमदार
उत्तर (a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

82. मोहनजोदड़ों से प्राप्त पशुपति की मुहर पर निम्न में कौन अंकित नहीं है?
(a) हाथी (b) गैण्डा (c) बाघ (d) बैल
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**
UPPCS ACF/RFO Paper I[st] 2021

व्याख्या : मोहनजोदड़ों से प्राप्त 'पशुपति शिव' की मुहर विशेष प्रसिद्ध है। इस मुहर में एक त्रिमुखी पुरुष को एक चौकी पर पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए दिखाया गया है। उसके सिर में सींग है तथा कलाई से कन्धे तक उनकी दोनों भुजाएँ चूड़ियों से लदी हुई हैं। मूर्ति के दाहिनी ओर एक हाथी तथा एक बाघ और बाई ओर एक गैंडा एवं एक भैंसा खड़ा हुआ है। चौकी के नीचे दो हिरण खड़े हुए दिखाए गये हैं जिनमें से एक की आकृति खण्डित है। यहाँ ध्यातव्य है कि मोहनजोदड़ों से ही वृहद स्नानागार तथा विकसित अवस्था में घरों में कुँओं के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

83. सिन्धु घाटी सभ्यता की विकसित अवस्था में निम्नलिखित में से किस स्थल से घरों में कुओं के अवशेष (Remains) मिले हैं?
(a) हड़प्पा (b) कालीबंगा (c) लोथल (d) मोहनजोदड़ो
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 2004**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. मोहनजोदड़ो की प्रसिद्ध पशुपति मुहर पर देवता किन पशुओं से घिरा है?
(a) भैंसा, गैंडा, भेंड़ तथा चीता
(b) चीता, सर्प, गैंडा तथा बैल
(c) सिंह, गैंडा, बैल तथा घड़ियाल
(d) चीता, गैंडा, भैंसा तथा हाथी
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. किस स्थल से युगल स्त्री-पुरुषों के शवाधानों का साक्ष्य प्राप्त हुआ है?
(a) कालीबंगा (b) हड़प्पा का कब्रिस्तान
(c) मोहनजोदड़ो (d) लोथल
उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History, 1997, 1998**

व्याख्या : गुजरात के अहमदाबाद जिले में स्थित लोथल की उत्खनन 1957 ई. से 1958 ई. के मध्य में एस. आर. राव ने की थी। लोथल एवं कालीबंगा से युगल शवाधान के प्रमाण मिले हैं। जहाँ दोनों शव को एक-दूसरे से लिपटा कर गाड़ा गया है। सुरकोटदा से कलश शवाधान का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। हड़प्पीय स्थल लोथल, कालीबंगा हड़प्पा से चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। लोथल से ही मृण-पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता तथा हाथी दाँत का पैमाना प्राप्त हुआ है।

86. किस हड़प्पीय स्थल से चावल का साक्ष्य प्राप्त हुआ है?
(a) चन्हूदड़ो (b) लोथल (c) मोहनजोदड़ो (d) मुंडीगाक
उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007, 2001, 1998**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. मृण-पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की आकृति प्राप्त हुई है?
(a) बनावली से (b) कालीबंगा से (c) लोथल से (d) सुरकोटदा से
उत्तर-(c) **UP Lower (Pre) Spl. 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. हाथी दाँत का पैमाना हड़प्पीय संदर्भ में मिला है?
(a) कालीबंगा में (b) लोथल में (c) धौलावीरा में (d) बनावली में
उत्तर-(b) **UPPSC RO/ARO (Mains) 2014**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

89. सिंधु घाटी सभ्यता का पोर्ट टाउन (बंदरगाह) निम्न में से कौन था?
(a) कालीबंगा (b) रोपड़ (c) लोथल (d) मोहनजोदड़ो
UPPCS (J) 2015
UPPCS (Pre) Opt. History 2010
UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2012, 2016, 2008
UPPSC AE-2008
UPPCS (Pre) G.S. 1999

Ans. (c) : लोथल का टीला अहमदाबाद (गुजरात) जिले में सरगवल नामक ग्राम के समीप स्थित है। 1957-58 ई. के मध्य यहाँ एस. आर. राव के निर्देशन में उत्खनन किया गया है। इस स्थल से पक्की ईटों का बना हुआ विशाल आकार (214×36 मीटर) का एक घेरा प्राप्त हुआ, जिसे राव महोदय ने 'जहाजों की गोदी' (Dock Yard) बताया है। यह एक नहर के द्वारा 'भोगवा नदी' से जुड़ा हुआ था। यह विश्व का प्राचीनतम ज्ञात गोदीवाड़ा था। इस नगर की सभी विशेषताएँ मोहनजोदड़ो एवं हडप्पा से मिलती हैं। इसलिए एस. आर. राव ने इस स्थल को लघु हड़प्पा या लघु मोहनजोदड़ो कहा।

90. सिन्धु सभ्यता का कौन-सा स्थान भारत में स्थित है -
(a) हड़प्पा (b) मोहनजोदड़ो
(c) लोथल (d) उपरोक्त में कोई नहीं
उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1995**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

91. एक जुते हुए खेत की खोज की गई थी-
(a) मोहनजोदड़ों में (b) कालीबंगा में
(c) हड़प्पा में (d) लोथल में
उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2005**

व्याख्या : कालीबंगा से हड़प्पा के साथ-साथ प्राक् हड़प्पा सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित है। यहाँ शहर के दोनों भाग दुर्गीकृत है तथा दुर्ग और नीचे का नगर दोनों अलग-अलग प्राचीर से घिरे हुए हैं। यहां के घर कच्ची ईंटों के बने हैं। कालीबंगा का अर्थ काले रंग की मिट्टी की चूड़ियां होता है। यहां से लकड़ी के हल तथा जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं। जिनके कूड़ों के बीच का फासला पूर्व से पश्चिम की ओर 30 सेमी. और उत्तर से दक्षिण 1.10 मीटर पर है। कालीबंगा से खुदाई में ऊँट की हड्डियाँ भी प्राप्त हुई है।

92. निम्नलिखित में से कौन प्राक्-हड़प्पा/प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति से सम्बन्धित है?
(a) कालीबंगा (b) लोथल (c) रोपड़ (d) आलमगीरपुर
उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007, 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

93. हड़प्पीय स्थलों की खुदाइयों में ऊँट की हड्डियाँ कहाँ से प्राप्त हुई हैं?
(a) कालीबंगा (b) लोथल (c) हड़प्पा (d) रोपड़
उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

94. हड़प्पा संस्कृति का वह कौन सा पुरास्थल है, जहां दुर्ग तथा नीचे का नगर दोनों अलग-अलग प्राचीर से घिरे हुए हैं?
(a) हड़प्पा (b) मोहनजोदड़ो
(c) कालीबंगा (d) उपरोक्त में कोई नहीं
उत्तर (c) **UPPCS (Pre) Opt. History 1998**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

95. हड़प्पन संस्कृति के संदर्भ में शैलकृत स्थापत्य के प्रमाण कहाँ से मिले हैं?
(a) कालीबंगा (b) धौलावीरा (c) कोटदीजी (d) आम्री
उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2006**

व्याख्या : हड़प्पन संस्कृति के संदर्भ में शैलकृत स्थापत्य के प्रमाण धौलावीरा से मिले हैं। धौलावीरा गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ तालुका में खादिर नाम के एक द्वीप, जिसे स्थानीय भाषा में `बैठ' कहते हैं, के उत्तरी पश्चिमी कोने पर बसा हुआ एक छोटा गांव है। इसके चारों ओर कच्छ का रेगिस्तान फैला हुआ है। मनसर एवं मनहर यहां की बरसाती नदियां हैं। धौलावीरा के कोटड़ा नामक टीले के उत्खनन से सिन्धु सभ्यता के अवशेष मिले हैं। धौला का अर्थ सफेद तथा वीरा का कुआं है। धौलावीरा के टीलों की खोज सन् 1967-68 ई. में करने का श्रेय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के जे. पी. जोशी को है। यहां के उत्खनन से आयताकार नगर विन्यास योजना के साक्ष्य प्रकाश में आये हैं। किले के अन्दर नगर को तीन भागों में विभाजित किया गया है-(1) किला (दुर्ग), 2. मध्य नगर, (3) आम नगर। इनमें से प्रथम दो की तो पत्थर की दीवारों द्वारा आयताकार रूप से मजबूत किलेबन्दी की गई थी। यहाँ से पालिशदार श्वेत पाषाण खण्ड बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। यहाँ से एक उन्नत जल प्रबन्धन प्रणाली का भी पता चलता है।

96. निम्नलिखित में से हड़प्पा सभ्यता का कौन सा नगर तीन भागों में विभाजित है?
(a) कालीबंगा (b) लोथल (c) चन्हूदड़ो (d) धौलावीरा
उत्तर-(d) **UPPCS (J) 2018**
UPPSC RO/ARO (M) 2013
UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2010
UPPCS (Pre) Opt. History 2009

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

97. हड़प्पा सभ्यता का स्थल माण्डी, भारत के किस राज्य में स्थित है?
(a) गुजरात (b) हरियाणा
(c) राजस्थान (d) उत्तर प्रदेश
उत्तर-(d) **UPPSC (Pre) 2021**

व्याख्या– माण्डी उत्तर प्रदेश का मुजफ्फनगर स्थित एक उत्तर हड़प्पा कालीन स्थल है। यह नवीन उत्खनित स्थल है। यहाँ से प्रथम बार बहु संख्यक स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए हैं। संभवतः यहाँ हड़प्पा सभ्यता का टकसाल गृह स्थित था। इसके अलावा हुलास व आलमगीरपुर स्थल भी उत्तर प्रदेश में स्थित है। संघोल पंजाब में, बनावली हरियाणा में स्थित हड़प्पा कालीन स्थल है। दधेरी पंजाब में स्थित परवर्ती हड़प्पीय स्थल है। उत्तर प्रदेश के बागपत में स्थित सनौली से मानव शवाधान की प्राप्ति हुई है।

98. निम्नलिखित में से कौन-सा सिन्धु घाटी सभ्यता का स्थल उत्तर प्रदेश में स्थित है?
(a) रोपड़ (b) मांडा (c) बनवाली (d) हुलास
UPPSC A.H.M. Officer 2021

Ans. (d) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

99. पुरातात्विक स्थल संघोल स्थित है–
(a) हरियाणा में (b) पंजाब में (c) राजस्थान में (d) उत्तर प्रदेश में
उत्तर-(b) **UPPSC Asst.Forest Conservator Exam. 2013**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

100. हड़प्पन स्थल सनौली के अभी हाल के उत्खननों से प्राप्त हुए हैं-
(a) मानव शवाधान (b) पशुओं के शवाधान
(c) आवासीय भवन (d) रक्षा दीवार
उत्तर-(a) **UP Lower (Pre) 2004**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. हड़प्पा सभ्यता का कौनसा स्थल हरियाणा में स्थित है?
(a) कालीबंगा (b) रोपड़ (c) धौलावीरा (d) बनावली
उत्तर-(d) **UPPSC Asst. Forest Conservator Exam. 2013**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

102. दधेरी एक परवर्ती हड़प्पीय पुरास्थल है –
(a) जम्मू का (b) पंजाब का
(c) हरियाणा का (d) उत्तर प्रदेश का
उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) I[st] Paper GS, 2014**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

103. बनावली में निम्नतम जमाव निम्नलिखित में से किस संस्कृति से संबंधित है?
(a) प्राक्-हड़प्पा ग्राम्य संस्कृति (b) प्रारंभिक हड़प्पा संस्कृति
(c) विकसित हड़प्पा संस्कृति (d) उत्तरवर्ती हड़प्पा संस्कृति
उत्तर-(a) **UPPSC ACF/RFO (Mains) 2019 Paper I**
UPPSC AE- 2007 (I)

व्याख्या : बनावली में निम्नतम् जमाव प्राक्-हड़प्पा ग्राम्य संस्कृति से संबंधित है। बनावली हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है। इसकी खोज वर्ष 1974 रविन्द्र सिंह बिष्ट ने की थी। इस स्थान से हल के खिलौने और लघु नारी मूर्तियाँ व जौ के दानें के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

104. पुरातात्त्विक साक्ष्य से प्रकट हुआ है कि सिन्धु घाटी सभ्यता के निम्नलिखित प्राचीन सभ्यता से सम्बन्ध थे-

(a) चीन (b) ग्रीस (c) इराक (d) श्रीलंका

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : सैन्धव निवासियों का भारतीय प्रदेशों के अतिरिक्त विश्व के अन्य देशों के साथ भी व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध थे। मध्य एशिया, उत्तरी पूर्वी अफगानिस्तान, ईरान, बहरीन द्वीप, मेसोपोटामिया (इराक), मिस्र, क्रीट आदि देशों के साथ सैन्धव निवासियों का घनिष्ठ व्यापारिक सम्पर्क था। हड़प्पा सभ्यता के लोग लाजवर्द मुख्यतः अफगानिस्तान से प्राप्त करते थे। हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक लोकप्रिय मुहर चौकोर मुहर थी।

105. हड़प्पा संस्कृति में किस प्रकार की मुहरें सर्वाधिक लोकप्रिय थीं?

(a) बेलनाकार (b) अण्डाकार (c) गोलाकार (d) चौकोर

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

106. हड़प्पा संस्कृति के लोग लाजवर्द निम्नलिखित में से किस देश से प्राप्त करते थे?

(a) ईरान (b) इराक (c) मिस्र (d) अफगानिस्तान

उत्तर (d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

107. हड़प्पाकालीन ताम्र रथ प्राप्त हुआ था :

(a) कुणाल से (b) राखीगढ़ी से (c) दैमाबाद में (d) बनावली से

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : हड़प्पाकालीन ताम्र रथ दैमाबाद से प्राप्त हुआ हैं। यह पुरास्थल महाराष्ट्र प्रान्त में स्थित है।
कुणाल पुरास्थल हरियाणा प्रान्त के हिसार जिले में स्थित है। यह सरस्वती नदी के किनारे स्थित था। कुणाल प्राक् हड़प्पाकालीन पुरास्थल है। यह एकमात्र ऐसा स्थल है। जहाँ से चाँदी के दो मुकुट मिले हैं।

108. निम्नलिखित में से किन हड़प्पाई स्थलों पर घोड़े के अवशेष प्राप्त हुए हैं?

(a) सुरकोटदा, कालीबंगा और धौलावीरा
(b) कालीबंगा, माण्डा और सुरकोटदा
(c) सुरकोटदा, धौलावीरा और माण्डा
(d) सुरकोटदा और कालीबंगा

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History, 1997, 2003**

व्याख्या: हड़प्पा सभ्यता में मोहनजोदड़ों से घोड़े की मृण्मूर्ति, लोथल से घोड़े से मृण्मूर्ति तथा दायें जबड़े का साक्ष्य, रानाघुण्डई के प्राक हड़प्पा के स्तर से घोड़े के दांत, सुरकोटड़ा से घोड़े की अस्थि पंजर तथा कालीबंगा, नौसारो, कुंतासी, बनावली से घोड़े की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई।

109. हड़प्पा संस्कृति से जुड़ा पुरास्थल सुत्कागेनडोर किस नदी के तट पर स्थित है?

(a) सिन्धु (b) झेलम (c) सरस्वती (d) दाश्क

उत्तर (d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : हड़प्पा संस्कृति से जुड़ा पुरास्थल सुत्कागेंडोर पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त में स्थित है। बलूचिस्तान के स्थल साधारणतः व्यापार मार्गों के साथ-साथ पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए मकरान तट प्रदेश पर ऐसे अनेक स्थल हैं। यहाँ दो भौगोलिक तत्व महत्वपूर्ण हैं। पहले इस इलाके में अनेक नदियाँ समुद्रों में मिलती हैं। इन नदियों का मुहाना सुविधाजनक स्थान माना जा सकता है। आज जो बस्तियाँ समुद्र से कुछ मील दूर पायी जाती हैं वे समुद्र के किनारे पर थीं। अतः इन बस्तियों को दोहरा लाभ प्राप्त था, क्योंकि ये नदी के मुहाने पर भी स्थित थी और समुद्र के किनारे पर भी। पुरातात्विक दृष्टि से इनमें तीन स्थल महत्वपूर्ण हैं- सुत्कागेंडोर (दाश्क नदी के मुहाने पर), सोत्काकोह (शादी कोर के मुहाने पर) और बालाकोट (सोन मियामी खाड़ी के पूर्व में कुन्हार नदी के मुहाने पर)। सुत्कागेंडोर स्थल की खोज 1927 ई. में आरेल स्टाइन ने की थी। इस शहर का किला पत्थर की दीवार से घिरा था तथा यह सैन्धव कालीन बंदरगाह के रूप में जाना जाता है।

110. चन्हूदड़ो के उत्खनन का निर्देशन किया था-

(a) जॉन मार्शल ने (b) जे.एच. मैके ने
(c) आर.ई.एम. व्हीलर ने (d) ऑरेल स्टाइन ने

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**
UP Lower (Pre) 2015

व्याख्या : 'अमेरिकन स्कूल ऑफ इण्डिक एण्ड ईरानियन स्टडीज' तथा 'बॉस्टन म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट्स' के संयुक्त तत्वावधान में ई.जे.एच. मैके ने सन् 1935-36ई. में चन्हूदड़ो का उत्खनन कराया। चन्हूदड़ो की खोज 1931 ई. में एन. जी. मजूमदार ने की थी। यह पुरास्थल मोहनजोदड़ो से 80 मील दूर सिन्धु के बाएँ किनारे पर अवस्थित है। यह एक मात्र ऐसा स्थल है जहां से वक्राकार ईंटो के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से झूकर एवं झांकर संस्कृति के भी साक्ष्य मिले हैं।

111. निम्नलिखित में से किसने हड़प्पा संस्कृति के विघटन के लिए 'इन्द्र' को उत्तरदायी माना था?

(a) सर जॉन मार्शल (b) सर मार्टिमर ह्वीलर
(c) सर आरेल स्टाइन (d) एम.एस. वत्स

उत्तर (b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**

व्याख्या : सैन्धव सभ्यता के विघटन में बाह्य आक्रमण को एक कारण माना जाता है। जिस पर ध्यान सर्वप्रथम सन् 1934 में गार्डन चाइल्ड ने दिया था। मार्टीमर ह्वीलर ने इसका समर्थन किया था। ह्वीलर के अनुसार यद्यपि द्वितीय सहस्राब्दी ई. पू. के मध्य तक सैन्धव सभ्यता विद्यमान थी तथापि अपने उत्तर काल में यह क्रमिक पतन की ओर अग्रसर हो रही थी। लगभग 1500 ई.पू. में इस सभ्यता का सहसा एवं आकस्मिक अंत किसी बाह्य आक्रमण का परिणाम था। मोहनजोदड़ों के ऊपरी धरातल से अस्त-व्यस्त दशा में प्राप्त मानव कंकालों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया था कि सैन्धव सभ्यता के अन्तिम दौर में बाह्य आक्रमण हुआ था। अधिकांश कंकाल अस्त-व्यस्त दशा में बिना विधिवत् अन्तिम संस्कार किये घरों तथा सार्वजनिक मार्गों पर पड़े हुए मिले थे। इन साक्ष्यों के आधार पर ह्वीलर ने यह निष्कर्ष निकाला कि मोहनजोदड़ो नगर पर सहसा आक्रमण हो गया और ये लोग भाग नहीं सके थे। ह्वीलर ने ऋग्वेद के अन्तः साक्ष्यों का इस संदर्भ में अत्यन्त बुद्धिमत्ता से उपयोग किया था। ऋग्वेद की कतिपय ऋचाओं में असुरों के 'अयस' निर्मित पुरों के 'पुरन्दर' (इन्द्र) द्वारा विनष्ट किये जाने का उल्लेख मिलता है। इसलिए ह्वीलर ने इस नरसंहार के लिए इन्द्र को दोषी ठहराया था।

112. निम्नलिखित में से किसकी पूजा हड़प्पा संस्कृति में नहीं होती थी?

(a) शिव (b) मातृ देवी (c) पीपल (d) विष्णु

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : हड़प्पा संस्कृति में विष्णु देवता की पूजा नहीं की जाती थी। हड़प्पा सभ्यता से सम्बद्ध पुरास्थलों से प्राप्त मृण्मूर्तियों एवं मुहरों पर अंकित नारी आकृतियों के साक्ष्य को विद्वानों ने मातृशक्ति की उपासना से सम्बद्ध किया है। मार्शल और मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार सैंधव सभ्यता के देव परिवार में मातृदेवी का स्थान सर्वश्रेष्ठ था। सिन्धु सभ्यता के पुरास्थलों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि यहाँ के निवासी शिव, पीपल, नाग आदि की पूजा करते थे।

03. ऋग्वैदिक एवं उत्तर-वैदिक काल (Rigvedic and Post Vedic Era)

113. ऋग्वेद में उल्लिखित ''दशराज सुद्ध '' किस नदी के तट पर लड़ा गया था?

(a) शुतुद्रि (b) विपाशा
(c) परूष्णी (d) वितस्ता

UPPCS (J) 2022 (12-02-2023)

Ans. (c) : ऋग्वेद के सातवें मण्डल में दशराज्ञ युद्ध अर्थात दस राजाओं का युद्ध का वर्णन किया गया है। यह युद्ध परूष्णी (रावी) नदी के तट पर हुआ था। इसमें राजा पुरू के नेतृत्व में अलिन, पक्थ, भलानस, शिव, विषाणिन, अनु, द्रह्यु, पुरू तथा तुर्वस जैसे दस कबीले शामिल थे। इन कबीलों में सर्वाधिक शक्तिशाली पुरू जन था, जिसके पुरोहित विश्वामित्र थे। इनका पड़ोसी भरत जन था। इनके पुरोहित ऋषि वशिष्ठ थे। दशराज्ञ युद्ध उत्तराधिकार के लिए लड़ा गया था। इसमें राजा सुदास (भरत जन) की विजय होती है तथा पुरूओं की संयुक्त सेना पराजित होती है।

114. निम्नलिखित में से किसका उल्लेख ऋग्वेद में नहीं है?

(a) जनपद (b) जन
(c) ग्राम (d) कुल

UP APO-2015

Ans. (a) : ऋग्वेद में कुल, ग्राम, विश, जन तथा राष्ट्र का उल्लेख है किन्तु जनपद का नहीं।

115. निम्नलिखित में से कौन सा अभिलेख वैदिक देवताओं का उल्लेख करता है?

(a) मानसेहरा (b) शाहबाज गढ़ी
(c) बोगजकोई (d) जूनागढ़

UPPCS (J) 2015

Ans. (c) : बोगजकोई एशिया माइनर में स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है, जिसका समय 1400 ई.पू. है। इस अभिलेख में राजाओं के मध्य एक संधि का उल्लेख है। इन राजाओं ने वैदिक युगीन देवताओं (इन्द्र, वरुण, मित्र, नासत्य) को साक्षी माना है। यह अभिलेख संस्कृत भाषा में है।

116. गंगा एवं यमुना नदी का साथ-साथ उल्लेख सर्वप्रथम कहाँ मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद
(c) शतपथ ब्राह्मण (d) छान्दोग्य उपनिषद्

UPPCS (J) 2013

Ans. (a) : ऋग्वेद सबसे प्राचीनतम और पवित्र वेद है। ऋग्वेद में अग्नि, इंद्र, वायु, वरुण आदि देवताओं की स्तुतियाँ संग्रहीत है। ऋग्वेद में यमुना नदी का उल्लेख तीन बार एवं गंगा (जाह्नवी) का उल्लेख एक बार (10वें मंडल में) मिलता है। ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करने वाला पुरोहित होतृ कहलाता था।

117. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची–I/ (वेद)	**सूची–II/ (ब्राह्मण)**
A. ऋगवेद	**1. गोपथ ब्राह्मण**
B. यजुर्वेद	**2. कौशितकी ब्राह्मण**
C. सामवेद	**3. शतपथ ब्राह्मण**
D. अथर्ववेद	**4. पंचविश ब्राह्मण**

कूट :

	A	**B**	**C**	**D**		**A**	**B**	**C**	**D**
(a)	2	3	4	1	(b)	3	4	2	1
(c)	2	1	3	4	(d)	1	2	4	3

UPPSC Mines Inspector 2022
UPPSC Poly. Lecturer 2021

Ans.(a) : सही सुमेल इस प्रकार है।

सूची-I/(वेद)		**सूची-II/ (ब्राह्मण)**
ऋग्वेद	–	कौशितकी और ऐतरेय ब्राह्मण
यजुर्वेद	–	शतपथ तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	–	पंचविश, षडविंश, अद्भुत तथा जैमिनी ब्राह्मण
अथर्ववेद	–	गोपथ ब्राह्मण

118. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए–

सूची-I	**सूची-II**
A. ऋग्वेद	1. संगीतमय स्रोत
B. यजुर्वेद	2. स्रोत एवं कर्मकाण्ड
C. सामवेद	3. तन्त्र-मन्त्र एवं वशीकरण
D. अथर्ववेद	4. स्रोत एवं प्रार्थनाएँ

कूट :

	A	**B**	**C**	**D**		**A**	**B**	**C**	**D**
(a)	4	2	1	3	(b)	3	2	4	1
(c)	4	1	2	3	(d)	2	3	1	4

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2001**

व्याख्या : सही सुमेलित हैं–

A. ऋग्वेद	स्रोत एवं प्रार्थनाएँ
B. यजुर्वेद	स्रोत एवं कर्मकाण्ड
C. सामवेद	संगीतमय स्रोत
D. अथर्ववेद	तन्त्र-मन्त्र एवं वशीकरण

119. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I (नदियों के प्राचीन नाम)	**सूची-II (आधुनिक नाम)**
A. सरस्वती	1. रावी
B. परुष्णी	2. व्यास
C. शुतुद्री	3. सतलज
D. विपाशा	4. झेलम
	5. घग्घर-हाकरा

कूट :

	A	**B**	**C**	**D**		**A**	**B**	**C**	**D**
(a)	3	2	4	1	(b)	5	1	3	2
(c)	3	1	2	4	(d)	5	4	3	1

उत्तर (b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**
UPPCS (Pre) G.S. 2012

व्याख्या : सही सुमेलित हैं-

(नदियों के प्राचीन नाम)	**(आधुनिक नाम)**
A. सरस्वती	घग्घर-हाकरा
B. परुष्णी	रावी
C. शुतुद्री	सतलज
D. विपाशा	व्यास
E. कुभा	काबुल
F. सदानीरा	गंडक

120. निम्नलिखित कथनों पर विचार किजिये तथा नीचे दिये गये कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिये।

1. ऋग्वेद में 1028 संस्करण हैं।

2. ऋग्वेद को 'अष्टक' भी कहा जाता है।

(a) केवल 1 सही है

(b) केवल 2 सही है

(c) 1 तथा 2 दोनों सही हैं

(d) न तो 1 सही है और न ही 2 सही हैं

UPPSC GDC 2021

Ans. (c) : सम्पूर्ण ऋगवेद 10 खण्डों में विभक्त है जिसे मण्डल कहते है। ऋगवेद का एक अन्य विभाजन अष्टक (8) अध्याय (64) वग्र (2112) व मंत्र (10552) के रूप में किया गया है। ऋगवेद में सुक्तो की संख्या 1017 है। यदि बालखिल्य या परिशिष्ट भी जोड़ दिया जाय तो ऋगवेद में सूक्तों की कुल संख्या 1028 है।

121. ऋग्वेद में निम्नलिखित में से किन नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों के निकट सम्बन्ध का परिचायक है?

1. कुभा 2. क्रुमु

3. गोमती (गोमल) 4. शुतुद्रि

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए-

कूट :

(a) केवल 1, 2 तथा 4 (b) केवल 1 तथा 4

(c) केवल 1, 2 तथा 3 (d) केवल 2, 3 तथा 4

उत्तर-(c) **UPPCS (J) 2013, 2016**

UPPCS (Pre) Opt. History, 2002

व्याख्या : ऋग्वेद में अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख हुआ है जो आर्यों के अफगानिस्तान के साथ निकट सम्बन्ध का परिचायक है। ऋग्वेद में उल्लिखित अफगानिस्तान की नदियों में कुभा, क्रुमु, गोमती (गोमल) और सुवास्तु प्रमुख है।

122. वैदिक देवता इन्द्र के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गये कूट से सही उत्तर चुनिए:

1. झंझावत के देवता थे।
2. पापियों को दण्ड देते थे।
3. नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे।
4. वर्षा के देवता थे।

कूट :

(a) 1 एवं 2 सही है। (b) 1 एवं 3 सही है।

(c) 2 एवं 4 सही है। (d) 1 एवं 4 सही है।

उत्तर–(d) **UPPCS (Mains) G.S.-Ist 2017**

व्याख्या– इन्द्र झंझावत एवं वर्षा के देवता थे। वरुण नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे। इन्हें ऋतस्य गोपा कहा जाता था।

123. वैदिक राजाओं एवं राज्यों के निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा एक सही सुमेलित नहीं है?

(a) अजातशत्रु – काशी

(b) अश्वपति – कैकेय

(c) जनक – विदेह

(d) जनमेजय – मद्र

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : उपनिषद काल में अनेक राजा ऐसे हुए जो ब्रह्म ज्ञान तथा अध्यात्म चिंतन में तत्पर थे। विदेह के जनक, कैकेय के अश्वपति, काशी के अजातशत्रु और पांचाल देश के प्रवाहण जाबालि इत्यादि प्रसिद्ध हैं, जबकि जनमेजय शतपथ ब्राह्मण के अनुसार कुरु वंश का एक राजा था जिसकी राजधानी का नाम **आसन्दिवत** था। अनेक अश्वों के स्वामी इस राजा ने शौनक ऋषि के पुरोहित से अश्वमेध यज्ञ करवाया था।

124. गायत्री मंत्र के नाम से प्रसिद्ध मंत्र सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में मिलता है?

(a) भगवद् गीता (b) अथर्ववेद

(c) ऋग्वेद (d) मनुस्मृति

उत्तर-(c) **UP APO 2015**

UPPCS (Pre) G.S. 2013

UPPSC Tax Inspector Exam 1997

UPPSC BEO Re Exam- 2006

UPPCS (Mains) G.S. Ist 2005

व्याख्या : चारों वेदों में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद है। ऋग्वेद अर्थात् ऐसा ज्ञान जो ऋचाओं में बद्ध हो, इस वेद में कुल 10 मण्डल एवं 1028 सूक्त हैं। इसके तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है जो सूर्य देव को समर्पित है। ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राह्मी लिपि है तथा गोत्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में ही मिलता है। इसके 2–7 मंडल को वंश मंडल कहा जाता है। ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र अग्नि को समर्पित है। विष्णु का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है।

125. ऋग्वेद की मूल लिपि थी –

(a) देवनागरी (b) खरोष्ठी

(c) पाली (d) ब्राह्मी

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2004**

व्याख्या: उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

126. ऋग्वेद के किन मण्डलों को वंश मण्डल के नाम से जाना जाता है?

(a) प्रथम एवं द्वितीय मण्डलों को

(b) द्वितीय से सप्तम मण्डलों को

(c) नवें एवं दशम मण्डलों को

(d) आठवें एवं नवें मण्डलों को

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

127. ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र सम्बन्धित हैं –

(a) अग्नि से (b) वरुण से

(c) विष्णु से (d) यम से

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S. Ist 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

128. विष्णु का प्राचीनतम उल्लेख कहाँ मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) सामवेद

(c) शतपथ ब्राह्मण (d) गोपथ ब्राह्मण

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

129. ऋग्वेद का सर्वाधिक लोकप्रिय छन्द कौन-सा है?

(a) गायत्री (b) अनुष्टुप (c) त्रिष्टुप (d) जगती

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : वैदिक साहित्य में गायत्री, त्रिष्टुप,जगती, वृहती, अनुष्टुप आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। ऋग्वेद में सर्वाधिक लोकप्रिय छन्द त्रिष्टुप (4253 बार) है। इसके बाद गायत्री छन्द (2467 बार) और जगती छन्द (1358 बार) का प्रयोग हुआ है।

130. निम्नलिखित में से कौन सा वेद सबसे प्राचीन है?

(a) सामदेव (b) यजुर्वेद (c) ऋग्वेद (d) अथर्ववेद

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1995**
UP Lower (Pre) 2009–10
UPAPO 2015

व्याख्या : भारतीय धार्मिक साहित्य के अंतर्गत चार वेदों का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। इसमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन है, जिसमें 1028 सूक्त मिलते हैं। इसमें 10 मण्डल, 10552 ऋचाएं मिलती है। वेद के ऋचाओं को पढ़ने वाले को होतृ कहा गया है। इसके माध्यम से आर्यों के राजनीतिक/सामाजिक इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। ऋग्वेद में हमें गायत्री मंत्र का पाठ भी मिलता है जिसके रचयिता विश्वामित्र थे। ऋग्वेद में मुख्यतया स्त्रोतो का संकलन है। 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में ही प्राप्त होता है। लोपा, घोषा, अपाला आत्रेयी आदि के मंत्र ऋग्वेद में ही प्राप्त होते है।

131. अपाला आत्रेयी के मन्त्र किसमें संगृहीत हैं?

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद (c) सामवेद (d) अथर्ववेद

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

132. किस वैदिक ग्रंथ में 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम नामोल्लेख मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद (c) सामवेद (d) यजुर्वेद

उत्तर-(a) **UP Lower (Pre) 2014–15**

व्याख्या उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

133. निम्नलिखित में से किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है?

(a) यजुर्वेद (b) सामवेद
(c) अथर्ववेद (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या : सामवेद में कुल 1549 ऋचायें हैं। इनमें मात्र 75 ही नयी हैं अन्य ऋग्वेद से ली गयी हैं। भगवान कृष्ण ने वेदों में अपने को 'सामवेद' कहा है। साम का अर्थ 'गान' होता है। इसके मंत्रों को गाने वाले 'उद्गाता' कहे जाते थे। प्राचीन ग्रन्थों में सामवेद में गौरव की गाथा मिलती है। भारतीय संगीत पर यह प्राचीनतम् ग्रंथ है।

134. निम्न में से कौन-सा वेद गद्य एवं पद्य दोनों में लिखा है?

(a) ऋग्वेद (b) सामवेद (c) यजुर्वेद (d) अथर्ववेद

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre)-2018**
UPPCS (Pre) Opt. History 1998, 2003, 2006

व्याख्या : यजुर्वेद-यह यज् शब्द से बना है। इसका संकलन यज्ञ संपादन हेतु किया गया हैं अतः इसे पद्धति ग्रन्थ भी कहते हैं। यह गद्य एवं पद्य दोनों में है- इसकी दो शाखायें हैं- कृष्ण एवं शुक्ल। कृष्ण यजुर्वेद में ब्राह्मण ग्रन्थों का आख्यान भी है। यही गद्य एवं पद्य दोनों में है। वाजसनेही संहिता शुक्ल यजुर्वेद की संहिता है। मैत्रेयी संहिता यजुर्वेद से संबंधित संहिता है। राजसूय से संबंधित अनुष्ठानों का वर्णन यजुर्वेद में मिलता है।

135. निम्नलिखित में से वैदिक साहित्य का सही क्रम कौन सा है?

(a) वैदिक संहितायें, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्
(b) वैदिक संहितायें, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण
(c) वैदिक संहितायें, आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद्
(d) वैदिक संहितायें, वेदांग, आरण्यक, स्मृतियाँ

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) I[st] Paper GS, 2014**

व्याख्या : दिये गये विकल्पों में वैदिक साहित्य का सही क्रम है– पहला–वैदिक संहितायें, दूसरा–ब्राह्मण, तीसरा–आरण्यक और चौथा उपनिषद्। ऋग्वेद, सामवेद व यजुर्वेद को वेदत्रयी के अर्न्तगत शामिल किया जाता है।

136. 'वेदत्रयी' के अन्तर्गत सम्मिलित है -

(a) ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद (b) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद
(c) ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद (d) सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

137. ''इतिहास'' शब्द का उल्लेख निम्न में से किस वेद में मिलता है?

(a) अथर्ववेद में (b) ऋग्वेद में
(c) यजुर्वेद में (d) सामवेद में

उत्तर-(a) **UPPSC AE-2011**
UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2009

व्याख्या : अथर्ववेद मे गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, समाज शास्त्र, कृषि विज्ञान के अलावा इतिहास का भी सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। इससे 'मोक्ष' के संबंध में जानकारी मिलती है। इसकी कुछ ऋचाएं ब्रह्म विद्या से सम्बन्धित होने के कारण इसे ब्रह्मवेद तथा पुरोहित वेद भी कहा जाता है। इससे 5977 मंत्र है। इसकी रचना अथर्वण और आंगिरस ऋषि ने किया। अथर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है। अयोध्या का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है।

138. 'आयुर्वेद' अर्थात् 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है–

(a) आरण्यक में (b) सामवेद में
(c) यजुर्वेद में (d) अथर्ववेद में

उत्तर-(d) **UPPSC Ayurvedacharya**
UPPCS (Pre) G.S. 1994

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

139. अयोध्या का उल्लेख सर्वप्रथम कहाँ मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद (c) रामायण (d) महाभारत

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

140. वैदिक साहित्य में सभा और समिति को किस देवता की दो पुत्रियाँ कहा गया है?

(a) इन्द्र (b) अग्नि (c) रुद्र (d) प्रजापति

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

141. शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेह माधव से सम्बन्धित ऋषि थे–

(a) ऋषि भारद्वाज (b) ऋषि वशिष्ठ
(c) ऋषि विश्वामित्र (d) ऋषि गौतम राहुगण

उत्तर-(d) **UP Lower (Pre) 2015**
UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2008
UPPSC Rajkeeya LT Grade Pravakta 2018

व्याख्या: शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध यजुर्वेद से है। सभी ब्राह्मणों में शतपथ ब्राह्मण सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण है। इसे लघु वेद की संज्ञा दी गई है। इसके रचयिता याज्ञवल्क्य वाजसनेय है। इसी में विदेह माधव कथा का उल्लेख है। गौतम राहुगण उनके पुरोहित है। ऋषि विश्वामित्र, भारद्वाज एवं वशिष्ट का सम्बन्ध ऋग्वेद से है। शतपथ ब्राह्मण में पुरूषमेध यज्ञ का उल्लेख हुआ है। जो संस्कृत भाषा शुद्ध रूप से नही बोल पाते थे उन्हें शतपथ ब्राह्मण में 'म्लेच्छ' कहा गया है।

142. ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार कहाँ के शासक सम्राट की उपाधि धारण करते थे?

(a) उत्तरकुरु (b) उत्तरमद्र (c) भोज (d) प्राच्य

उत्तर (d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001, 2006**

व्याख्या : प्राच्य का सन्दर्भ पूर्व दिशा से है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पूर्व दिशा (मगध, कलिंग एवं बंग आदि) के जो राजा हैं, उनका साम्राज्य के लिए अभिषेक होता है और वे 'सम्राट' कहलाते हैं। दक्षिण दिशा में जो सात्वत (यादव) राज्य है, वहाँ का शासन 'भोज्य' है और उनके शासक 'भोज' कहलाते हैं। पश्चिम दिशा (सौराष्ट्र, कच्छ, सौवीर, आदि) का शासन स्वराज है और उनके शासक स्वराष्ट्र कहलाते हैं। उत्तर दिशा में हिमालय के क्षेत्र में (उत्तर कुरु उत्तर मद्र आदि) जो राज्य हैं, वहाँ वैराज्य प्रणाली है और वहाँ के शासक 'विराट' कहलाते हैं। मध्य देश (कुरु, पंचाल कौशल आदि के राज्यों के शासक 'राजा' कहे जाते हैं। इस प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण में, साम्राज्य, भोज्य, स्वराज, वैराज्य और राज्य इन पांच प्रकार की प्रणालियों का उल्लेख है। सम्राट वे शासक थे जो वंशक्रमानुगत होते हुए अपनी शक्ति के विस्तार के लिए अन्य राज्यों का मूलोच्छेद करने को तत्पर रहते थे। जरासंध आदि मगध सम्राट इसी प्रकार के थे।

143. 'गोपथब्राह्मण' सम्बन्धित है–

(a) यजुर्वेद से (b) सामवेद से
(c) अथर्ववेद से (d) ऋग्वेद से

उत्तर-(c) **UPPSC RO/ARO (Pre) 2014**

व्याख्या : गोपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। ऐतरेय तथा कौषीतकी ब्राह्मण का सम्बन्ध ऋग्वेद से, शतपथ और तैत्तिरीय ब्राह्मण का सम्बन्ध यजुर्वेद से तथा ताण्ड्य, षडविंश और जैमिनीय ब्राह्मण का सम्बन्ध सामवेद से है।

144. निम्नलिखित में कौन उपनिषद् गद्य में लिखा गया है?

(a) ईश (b) कठ (c) बृहदारण्यक (d) श्वेताश्वर

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : भारतीय दर्शन का मुख्य आधार तथा वैदिक साहित्य का अन्तिम वर्ग उपनिषद हैं, इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है। वैदिक उपनिषदों की संख्या 108 है। इनमें से दो–ऐतरेय तथा कौषितकी का सम्बन्ध ऋग्वेद से है, दो–छान्दोग्य तथा केन का सम्बन्ध सामवेद से है, चार–तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वर तथा मैत्रायणी का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद से है, दो–बृहदारण्यक तथा ईश का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है, तथा तीन–मुण्डक, प्रश्न व माण्डूक्य का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। कठ, श्वेताश्वर, ईश तथा मुण्डक उपनिषद छन्दोबद्ध हैं, जबकि केन व प्रश्न उपनिषद का कुछ भाग छन्दोबद्ध है तथा कुछ गद्य में है। शेष सात उपनिषद गद्य में हैं। अतः बृहदारण्यक उपनिषद गद्य में है।

145. छान्दोग्य उपनिषद् का सम्बन्ध किस वेद शाखा से है?

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद (c) सामवेद (d) अथर्ववेद

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History, 1997**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

146. उद्दालक आरूणी और उनके पुत्र श्वेतकेतु के बीच ब्रह्म एवं आत्मा की अभिन्नता के विषय में प्रसिद्ध वार्तालाप किसमें वर्णित है?

(a) श्वेताश्वर उपनिषद् (b) केन उपनिषद्
(c) छान्दोग्य उपनिषद् (d) मुण्डक उपनिषद्

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**

व्याख्या : उद्दालक आरूणी और उनके पुत्र श्वेतकेतु के बीच ब्रह्म एवं आत्मा की अभिन्नता के विषय में प्रसिद्ध वार्तालाप छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित है। वासुदेव कृष्ण का भी सर्वप्रथम उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद में मिलता है।

147. 'सत्यमेव जयते' शब्द किस उपनिषद से लिये गये हैं?

(a) मुण्डकोपनिषद (b) कठोपनिषद
(c) छान्दोग्योपनिषद् (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) **UPPSC Kanoongo Exam., 2014**
UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2004
UPPCS (Pre) G.S. 1991

व्याख्या : 'सत्यमेव जयते' शब्द 'मुण्डकोपनिषद्' से लिया गया है। इस आदर्श शब्द का उल्लेख भारत के राष्ट्रीय चिन्ह 'अशोक की लाट' (सारनाथ से गृहीत) के साथ किया गया है। 'माण्डूक्य उपनिषद' सबसे छोटा उपनिषद है। 'कठोपनिषद्' में यम-नचिकेता आख्यान तथा 'छान्दोग्योपनिषद' में तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ) का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है। छान्दोग्योपनिषद से ही अद्वैतवाद का सिद्धान्त, बुद्ध के चार आर्य सत्य तथा महावीर के जियो और जीने दो का सिद्धान्त लिया गया है।

148. नचिकेता आख्यान किस उपनिषद में मिलता है?

(a) कठोपनिषद (b) केनोपनिषद
(c) छान्दोग्य उपनिषद (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UPPCS (Pre) G.S. 1999
UPPCS (Mains) G.S., I- Paper, 2006
UPPSC Ashram Paddhati 2012

Ans : (a) उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

149. निम्नलिखित में से किस एक वैदिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा मिलती है–

(a) ऋग्वेद (b) परवर्ती संहितायें
(c) ब्राह्मण (d) उपनिषद्

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) G.S. 2003**
UPPSC BEO GS 2006
UPPCS (Pre) G.S. 2002
UP Lower (Pre) 1998

व्याख्या : व्यक्ति के जीवन के अंतिम तथा चरम पुरुषार्थ मोक्ष की चर्चा उपनिषदों में मिलती है। व्यक्ति के जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष हैं। मोक्ष का प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में वर्णन मिलता है। चूँकि उपनिषद् वैदिक साहित्य के अंतिम भाग हैं इसलिए इन्हें वेदांत भी कहा जाता है। भारत का प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।

150. बृहदारण्यक उपनिषद् में जनक की सभा में याज्ञवल्क्य से दार्शनिक संवाद करते हुए निम्नलिखित में से किसका वर्णन हुआ है?

(a) गार्गी (b) कात्यायनी (c) मैत्रेयी (d) विश्ववारा

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**
UPPCS (Pre) Opt. History 2001

व्याख्याः बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार-विदेह के महाराज जनक ने एक बार यज्ञ किया। उसमें बहुत से विद्वान ब्राह्मण पधारे। जनक ने उनकी विद्वता परखना चाहा। उन्होंने एक हजार गायें खड़ी कर दीं, प्रत्येक गाय की दोनों सीगों में 10-10 स्वर्ण-पाद बाँध दिये तथा उपस्थित ब्राह्मणों से कहा कि आपमें जो सबसे श्रेष्ठ विद्वान हो, वह इन गायों को हाँक ले जाय। महान दार्शनिक याज्ञवल्क्य ने अपने एक शिष्य से उन्हें हाँक ले जाने को कहा। इस पर दूसरे ब्राह्मण बहुत क्रुद्ध हुए और याज्ञवल्क्य से प्रश्न करने लगे किन्तु याज्ञवल्क्य ने सबको निरुत्तर कर दिया। उनसे प्रश्न करने वालों में विदुषी गार्गी भी थी। वह सभा में उठ खड़ी हुई और याज्ञवल्क्य से दार्शनिक विवाद करने लगी।

151. निम्नलिखित में से किस एक उपनिषद् में पहली बार 'निराशावाद' के तत्व दिखाई देते हैं?

(a) मैत्रायणी (b) कौषीतकी
(c) बृहदारण्यक (d) केन

उत्तर-(a) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : मैत्रायणी उपनिषद में त्रिमूर्ति तथा चार आश्रमों के सिद्धान्त के उल्लेख के अतिरिक्त पहली बार निराशावाद के तत्व भी दिखाई देते हैं। इस आधार पर इसे उपनिषदों में सबसे बाद का माना जाता है।

152. उपनिषद्काल के राजा अश्वपति शासक थे–

(a) काशी के (b) कैकेय के
(c) पांचाल के (d) विदेह के

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1999**
UPPCS (Pre) Opt. History 2010, 2005
UPPCS (J) 2016

व्याख्या : उपनिषदों में कई राजाओं के नामों का उल्लेख मिलता है–

राज्य	–	राजा
कैकेय	–	अश्वपति
काशी	–	अजातशत्रु
विदेह	–	जनक
कुरु	–	उद्दालक आरुणि
पांचाल	–	प्रवाहण जैबालि

अश्वपति दार्शनिक थे। छान्दोग्य उपनिषद् में उल्लिखित है कि उद्दालक आरुणि, पंचाग्रि एवं वैश्वानर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कैकेय नरेश अश्वपति के पास गये थे।

153. ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द किस कृषि उत्पाद हेतु प्रयुक्त किया गया है?

(a) जौ (b) चना
(c) चावल (d) गेहूँ

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. I[st] Paper 2008**
UPPCS (Pre) G.S. 1993
UPPCS (Pre) Opt. History 1998

व्याख्या : कृषि वैदिककाल के आर्यों का व्यवसाय था। शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाओं - जुताई, बुआई, कटाई तथा मड़ाई का उल्लेख हुआ है। काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हलों का उल्लेख मिलता है। ब्रीहि (धान), यव, (जौ), माण (उड़द), मुदग (मूँग), गोधूम (गेहूँ), मसूर आदि अनाजों का वर्णन यजुर्वेद में मिलता है। यद्यपि ऋग्वैदिक काल के लोग जौ (यव) पैदा करते थे, परन्तु उत्तर वैदिक काल में उनकी मुख्य फसल धान और गेहूँ हो गयी। वैदिक काल में चर्षिणी शब्द कृषि उपकरण का द्योतक नहीं था।

154. प्राचीन भारत में 'निष्क नाम' से जाने जाते थे –

(a) स्वर्ण आभूषण (b) गायें
(c) ताँबे के सिक्के (d) चाँदी के सिक्के

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2005**
UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2007

व्याख्या : सिक्कों के नियमित प्रचलन से पूर्व, वैदिक काल से ही निष्क गले में पहनने वाला एक सोने का आभूषण होता था। कालान्तर में यह व्यापारिक लेन-देन में प्रयुक्त होने लगा। मौर्य युग तक आते-आते व्यापार-व्यवसाय में नियमित सिक्कों का प्रचलन हो चुका था, सिक्के सोने-चाँदी तथा ताँबे के बने होते थे। इन सिक्कों को 'निष्क' और 'सुवर्ण' कहा जाता था, चाँदी के सिक्के को कार्षापण या धरण कहा जाता था। ताँबे के सिक्के माषक कहलाते थे। छोटे-छोटे ताँबे के सिक्के 'काकणि' कहे जाते थे। इन पर स्वामित्व सूचक चिन्ह लगाये जाते थे। ज्ञातव्य है कि मौर्योत्तर काल से पूर्व 'पंचमार्क' सिक्कों का प्रचलन था। जिस पर केवल आकृतियां छपी होती थीं, लेखन नहीं।

155. ऋग्वेद में निम्नलिखित पशुओं में से किनका उल्लेख हुआ है?

1. गाय 2. अश्व 3. बकरी 4. भैंस

निम्नांकित कूट से अपना उत्तर निर्दिष्ट कीजिए :

(a) 1 एवं 4 (b) 1, 2 एवं 3
(c) 1 एवं 2 (d) 1, 2, 3 एवं 4

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**
UPPCS (Pre) Re-Exam. G.S. 2015
UPPCS (Pre) G.S. 2008, 2017
UP UDA/LDA Spl. (Pre) 2010

व्याख्या : पशुपालन ऋग्वैदिक कालीन आर्यों का एक मुख्य उद्यम था। पशु धन की वृद्धि के लिए देवताओं से प्रार्थना की जाती थी। गाय का सर्वाधिक महत्व था। वैदिक काल में गाय को मूल्यवान सम्पत्ति समझा जाता था तथा उसे 'अघन्या' माना जाता था। उसकी गणना आर्थिक स्रोत में की जाती थी। गायों के लेन-देन से वस्तुएँ खरीदी जाती थी। दूध, मांस और खाल के लिए भैंस भी पालतू पशु थी। ऋग्वेद में भैंस को गोवाल कहा गया है। भेंड़ और बकरी से भी आर्य लोग परिचित थे। घोड़ा आर्यों का परम उपयोगी पशु था जो उनके युद्ध के काम आता था। घोड़ा दान दक्षिणा में भी दिया जाता था और कदाचित उसका मांस भी खाया जाता था। हाथी का उपयोग भी आर्य लड़ाई में करते थे। गाड़ी और रथ खींचने के लिए घोड़ा और ऊँट के साथ बैलों का भी व्यवहार होता था। पालतू पशुओं में कुत्ता, सुअर, गदहा और हिरण भी प्रमुख थे।

156. 'कौसेय' शब्द का प्रयोग किया गया है–

(a) कपास के लिये (b) सन के लिये
(c) रेशम के लिये (d) ऊन के लिये

उत्तर-(c) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. I[st] Paper 2008**

व्याख्या : कौसेय शब्द का प्रयोग रेशम के लिए किया जाता था। इससे निर्मित उत्तरीय वस्त्र जिसे साधु या संन्यासी धारण करते थे उसे ''दुकूल'' ''कौसेय'' कहा जाता था। ऋग्वेद में हाँथी दाँत पर उत्कीर्णन शिल्प का उल्लेख नहीं है।

157. ऋग्वेद में निम्नलिखित में से किस शिल्प का उल्लेख नहीं है?

(a) हाथी दाँत पर उत्कीर्णन (b) मृद्भाण्ड संरचना
(c) बुनाई (d) बढ़ईगीरी

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) Opt. History 2003

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

158. ऋग्वेद में वशिष्ठ को किसके पुरोहित के रूप में प्रस्तुत किया गया है?

(a) पुरुओं के (b) भरतों के (c) क्रुवुओं के (d) तुर्वसुओ के

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Opt. History 2001

व्याख्या : भरतों के राजा सुदास के पुरोहित वशिष्ठ थे। इनके विरुद्ध दस राजाओं का एक संघ था जिसमें मुख्यतः पुरू, यदु, अनु, तुर्वस, द्रुह्यु पाँच जनों के अतिरिक्त पाँच लघु जनजातियों अनिल, पक्य, भलानस, शिव तथा विषाणिन के राजा सम्मिलित थे। ऋषि विश्वामित्र इस संघ के पुरोहित थे। यह युद्ध पश्चिमोत्तर प्रदेश में बसे हुए पूर्वकालीन तथा ब्रह्मावर्त के उत्तरकालीन आर्यों के बीच उत्तराधिकार के प्रश्न पर लड़ा गया था। इसमें 'भरत' जन के स्वामी सुदास ने रावी नदी के तट पर एक भीषण युद्ध में दस राजाओं के इस संघ को परास्त किया और इस प्रकार वह ऋग्वैदिक कालीन भारत का सर्वोपरि सम्राट बन गया। भरत जन के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत पड़ा। यह ऋग्वैदिक काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण जन था जो सरस्वती तथा यमुना नदियों के बीच के प्रदेशों में निवास करता था। ऋग्वेद के 7वें मंडल में दशराज्ञ युद्ध का वर्णन है।

159. दश-राजाओं के युद्ध में भरतों का पुरोहित कौन था?

(a) विश्वामित्र (b) वशिष्ठ (c) अत्रि (d) भृगु

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Opt. History 2009

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

160. ऋग्वेद में किसी मण्डल का प्रथम सूक्त प्रायः किस देवता के लिए है?

(a) अग्नि (b) इन्द्र (c) मित्र (d) कोई भी देवता

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) Opt. History 2010, 2005

व्याख्या : ऋग्वेद के सभी मण्डलों के प्रारम्भिक सूक्त प्रायः अग्नि देवता को समर्पित किए गये है। क्योंकि अग्निदेव को मनुष्यों और देवताओं के मध्यस्त की भूमिका के रूप में स्वीकार किया जाता था। इसीलिए प्रत्येक मण्डल के शुरुआत अग्निदेव की स्तुति से होती है। जिससे मनुष्यों द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाएँ देवताओं तक पहुँच जाये। ऋग्वैदिक धर्म मुख्यतया बहुदेववादी था। इसमें इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि आदि की पूजा होती थी। सौत्रामणि यज्ञ में मुख्यता पशु और सुरा की आहुति दी जाती थी।

161. ऋग्वैदिक धर्म था–

(a) बहुदेववादी (b) एकेश्वरवादी
(c) अद्वैतवादी (d) निवृत्तमार्गी

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) I[st] GS 2014

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

162. सुरा की आहुति का सम्बन्ध है-

(a) अश्वमेध से (b) राजसूय से
(c) वाजपेय से (d) सौत्रामणि से

उत्तर-(d) UPPCS (Pre) Opt. History 2003

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

163. यज्ञीय कर्मकाण्ड का निरीक्षण निम्नलिखित में से किस पुरोहित का कार्य था?

(a) अध्वर्यु (b) ब्रह्मा (c) होता (d) उद्गाता

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Opt. History 2005
UP RO/ARO (Mains) 2013

व्याख्या : वैदिक संहिताओं के अंतर्गत 4 वेद का वर्णन किया गया है। ऋक्, साम, यर्जु, अथर्ववेद इनके ज्ञाता पुरोहित को भी अलग-अलग संज्ञा दी गई है। ऋग्वेद के पुरोहित को होता, सामवेद के ज्ञाता पुरोहित को उद्गाता, यजुर्वेद के पुरोहित को अध्वर्यु अथर्ववेद के ज्ञाता को ब्रह्मा कहा गया है। अथर्ववेद में अनेक मायावादी शक्तियों एवं उनके बचाव का वर्णन है। **यज्ञ सम्पादन का निरीक्षण** अथर्ववेद का पुरोहित **ब्रह्मा** ही करता था ताकि किसी भी प्रकार की मायावी शक्तियाँ यज्ञ में व्यवधान उत्पन्न न कर सकें।

164. अध्वर्यु का अर्थ था-

(a) धार्मिक मामलों में राजा का सलाहकार
(b) यज्ञ करने वाला पुरोहित
(c) यज्ञ के अवसर पर ऋचा-पाठ करने वाला पुरोहित
(d) राजा का शिक्षक

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Opt. History 1993, 1998

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

165. निम्न में से किस नदी को ऋग्वेद में 'मातेतमा', 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' संबोधित किया गया है?

(a) सिन्धु (b) सरस्वती (c) वितस्ता (d) यमुना

उत्तर-(b) UPPCS (Mains) Spl. G.S. I[st] Paper 2008

व्याख्या : आर्यों का आरम्भिक विस्तार हिमालयी क्षेत्र के उत्तरी भाग में हुआ जिसे ब्रह्मावर्त कहा जाता था। ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती थी। ऋग्वेद में सरस्वती नदी को 'नदीतमा', 'देवीतमा', 'मातेतमा' आदि नामों से सम्बोधित किया गया है जबकि ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी सिन्धु थी जिसका वर्णन सर्वाधिक बार किया गया है। ऋग्वेद में नदियों की संख्या 25 बतायी गयी है।

166. आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है –

(a) सिंधु (b) शुतुद्री (c) सरस्वती (d) गंगा

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) G.S. 1999

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

167. निम्नलिखित वैदिक देवताओं में किसे उनका पुरोहित माना जाता था?

(a) अग्नि (b) वृहस्पति (c) द्यौस (d) इन्द्र

उत्तर-(b) UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2013, 2008
UPPCS (Mains) G.S. 2002

व्याख्या : वैदिक देवताओं में वृहस्पति को पुरोहित माना जाता था। इन्द्र को आंधी, तूफान, बिजली और वर्षा, युद्धों में विजय दिलाने वाला पराक्रमी देव माना गया है और द्यौस देवता आकाश से सम्बन्धित थे। वरूण को नैतिक व्यवस्था ऋृत के निरीक्षणकर्ता के रूप में जाना जाता था। सर्वाधिक ऋग्वैदिक सूक्त (250) इन्द्र को समर्पित है। इस काल में पूषण भी महत्वपूर्ण देवता थे जिनका रथ बकरे खिंचते थे।

168. नैतिक व्यवस्था ऋत के निरीक्षणकर्ता के रूप में किस वैदिक देवता का वर्णन हुआ है?

(a) इन्द्र (b) रुद्र (c) वरुण (d) विष्णु

उत्तर (c) UPPCS (Pre) Opt. History, 1997

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

169. ऋग्वेद में निम्नलिखित देवताओं में से किसके लिए वर्णन है कि उसका रथ बकरे खींचते थे?

(a) पूषन् (b) रुद्र (c) वरुण (d) यम

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

170. निम्नलिखित में से किसे ऋग्वेद में युद्ध-देवता समझा जाता है?

(a) अग्नि (b) इन्द्र (c) सूर्य (d) वरुण

उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) G.S. Ist 2011**

व्याख्या : उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

171. निम्नलिखित में से कौन-से वैदिक देवता बोगजकोई अभिलेख में उल्लिखित हैं?

(a) अग्नि, इन्द्र, मित्र एवं नासत्य
(b) मित्र, नासत्य, वरुण एवं यम
(c) नासत्य, वरुण, यम एवं अग्नि
(d) इन्द्र, मित्र, नासत्य एवं वरुण

उत्तर (d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**
UPPCS (Mains) G.S. 2016
UP UDA/LDA Spl. - 2006
UPPCS (Pre) G.S. 1996
UPPCS (J) 2015

व्याख्या : एशिया माइनर के बोगजकोई नामक स्थान से 1400 ई. पूर्व के अभिलेख मिले हैं। इस अभिलेख में वैदिक देवता इन्द्र, मित्र, नासत्य एवं वरुण का उल्लेख मिलता है। अनेक विद्वानों ने एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में आर्यों का मूल निवास स्थान स्वीकार किया है। मैक्समूलर महोदय आर्यों का आदि देश मध्य एशिया, रोड्स, बैक्ट्रिया तथा एडवर्ड मेयर पामीर को मानते हैं।

172. ऋग्वेद काल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थीं–

(a) मूर्तिपूजा (b) एकेश्वरवाद
(c) देवी पूजा (d) बलि एवं कर्मकाण्ड

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 1993**

व्याख्या : ऋग्वैदिक युग में बलि, यज्ञ-बलि के रूप में होती थी, इंद्र और अग्नि समस्त जन द्वारा दी गई बलि ग्रहण करने के लिए आहूत होते थे। साथ में स्तुतिपाठ समवेत किया जाता था, जिससे देवता प्रसन्न होकर उन्हें भौतिक सुख व युद्ध में विजय प्रदान करें। ऋग्वेद के वंश मंडल प्रायः अग्नि के मंत्र से आरम्भ होते है। वैदिक देवता वरूण, अवेस्ता के देवता अहुरमज्दा से सादृश्य रखते है। रूद्र एक महत्वपूर्ण देवता थे जिनके लिए 'शूलगव' यज्ञ किया जाता था।

173. 'शूलगव' यज्ञ किसके लिए किया जाता था?

(a) विष्णु (b) इन्द्र (c) रुद्र (d) वरुण

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

174. निम्नलिखित वैदिक देवताओं में से कौन अवेस्ता के देवता अहुरमज्दा से सादृश्य रखता है?

(a) इन्द्र (b) वरुण (c) रुद्र (d) विष्णु

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

175. उद्दालक आरुणि प्रसिद्ध दार्शनिक थे

(a) काशी के (b) कुरु-पंचाल के
(c) मद्र के (d) विदेह के

उत्तर-(b) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : ब्राह्मण श्वेतकेतु के पिता उद्दालक आरुणि जो पांचाल के प्रसिद्ध दार्शनिक हुए, वे पंचाग्नि विद्या के प्रवर्त्तक क्षत्रिय पांचाल-नरेश प्रवाहण जैवालि के पास ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से गये।

176. निम्नलिखित में से कौन-सी बात ऋग्वैदिक स्त्रियों के संदर्भ में सही नहीं है?

(a) वे सभा की कार्यवाही में भाग लेती थी
(b) वे यज्ञों का अनुष्ठान करती थी
(c) वे युद्धों में सक्रिय भाग लेती थी
(d) रजस्वला होने के पहले ही उनका विवाह हो जाता था

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की दशा अन्य काल की अपेक्षा अच्छी थी। वे सभा और समिति में भाग लेती थी। वयस्क होने पर ही उनका विवाह होता था। सती प्रथा व पर्दा प्रथा नहीं थी। नियोग प्रथा का प्रचलन था तथा वे यज्ञों में पति के साथ भाग ले सकती थीं।

177. वैदिक काल में ग्राम का मुखिया कौन था?

(a) विशपति (b) गृहपति
(c) गणपति (d) ग्रामणी

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : ऋग्वेद में पुरोहित, सेनानी तथा ग्रामणी इन तीन अधिकारियों का उल्लेख मिलता है। इसमें से पुरोहित राजा के साथ युद्ध भूमि में जाता था तथा वहाँ युद्ध में राजा के विजय के लिए प्रार्थना करता था। वह एक प्रकार से राजा का शिक्षक, पथ-प्रदर्शक तथा मित्र था। सेनानी सबसे प्रमुख पदाधिकारी था तथा युद्ध के अवसर पर राजा के आदेशानुसार युद्ध में कार्य करता था। शान्तिकाल में सम्भवतः सेनानी को नागरिक कार्यों को भी करना पड़ता था। 'ग्रामणी' ग्राम का मुखिया तथा प्रशासनिक तथा सैनिक कार्यों के लिए ग्राम का नेता होता था। वह ग्रामीण जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करता था।

178. वैदिक काल में अस्पृश्यता का आधार था

(a) अशुद्धता (b) व्यवसाय
(c) गरीबी (d) उपर्युक्त में से कोईनही

उत्तर-(b)

UPPSC Asst. Forest Conservator Exam. 2015

व्याख्या : ऋग्वैदिक समाज चार वर्णों में विभक्त था। ये वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। यह विभाजन व्यवसाय के आधार पर किया गया था। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुष सूक्त में चतुर्वर्णों का उल्लेख मिलता है। भारत में दास प्रथा का प्रचलन पूर्व वैदिक काल में हुआ था। ऋग्वेद में दास व दस्युओं का वर्णन मिलता है।

179. दास प्रथा प्रचलन में थी:

(a) पूर्व वैदिक काल में (b) उत्तर वैदिक काल में
(c) हड़प्पा काल में (d) इनमें से किसी में भी नहीं

उत्तर-(a) **UPPSC Tax Inspector Exam 1997**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

180. भारतीय संस्कृति के अनुसार 'संस्कारों' की संख्या कितनी है?

(a) छः (b) दस
(c) सोलह (d) चौबीस

उत्तर-(c) **UPPSC Asst. State Officer-2014**

व्याख्या : भारतीय संस्कृति के अनुसर हिन्दू-धर्म में सोलह संस्कारों (षोड्श संस्कार) का उल्लेख किया गया है, जो मानव के गर्भ में आने से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक किए जाते हैं। इसके अन्तर्गत गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण,

अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, केशान्त, समावर्तन, विवाह व अन्त्येष्टि संस्कार शामिल है।
स्मृति ग्रंथों में विवाह के 8 प्रकार का वर्णन मिलता है जिसमें आर्ष विवाह में कन्या के पिता द्वारा एक जोड़ी गाय (गोमिथुन) लेने की प्रथा थी।

181. निम्नलिखित में से किस विवाह प्रकार में कन्या के पिता द्वारा एक जोड़ी गाय (गोमिथुन) लेने की प्रथा थी?

(a) आर्ष (b) असुर (c) ब्राह्म (d) दैव

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History, 1997**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

182. प्राचीन समय में निम्नलिखित ब्राह्मण परिवारों में से किस परिवार ने समसामयिक शासकों को पराजित किया तथा अपना प्रभुत्व स्थापित किया?

(a) अंगिरस (b) अत्रि (c) भृगु (d) पुलस्त्य

UPPCS GDC 2017

Ans. (c) प्राचीन काल में भृगुवंशी ब्राह्मण परिवार ने समसामयिक शासकों को पराजित किया। पौराणिक मान्यता के अनुसार, महर्षि भृगु के पौत्र एवं ऋषि जमदग्नि के पुत्र महर्षि परशुराम ने क्षत्रिय शासक सहस्त्रार्जुन को पराजित किया। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, महर्षि परशुराम ने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियविहीन कर समस्त भूमि ब्राह्मणों को दान दे दिया।

183. ऋग्वेद में निम्नांकित किन नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों के सम्बन्ध का सूचक है?

(a) अस्किनी (b) परुष्णी
(c) कुभा, क्रमु (d) विपाश्, शतुद्रि

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 2010, 1999**
UP UDA/LDA Spl. - 2006

व्याख्या : ऋग्वैदिक काल में कुभा और क्रमु नदियाँ अफगानिस्तान में बहती थी जो सिन्धु की पश्चिमी सहायक नदियों में से एक हैं। क्रमु आज 'कुर्रम' के नाम से जानी जाती है। यह सुलेमान श्रेणी से निकल कर ''इशखेद'' (Ishakhed) के दक्षिण में सिन्धु नदी से मिलती है। जबकि कुभा अटक से थोड़ा ऊपर सिन्धु नदी में गिरती है। अस्किनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (व्यास) एवं शुतुद्रि (सतलज) नदियाँ है जो पाकिस्तान एवं भारत के पंजाब प्रान्त में बहती हैं। इनका अफगानिस्तान से सम्बंध नहीं है। सुवास्तु नदी की पहचान काबुल की सहायक नदी कुनार से की गई है।

184. उत्तर वैदिक काल में निम्नलिखित में से किनको आर्य संस्कृति की धुरी समझा जाता था?

(a) अंग, मगध (b) कोसल, विदेह
(c) कुरु, पंचाल (d) मत्स्य, शूरसेन

उत्तर-(c) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2007**

व्याख्या : भारतीय इतिहास में उस काल को जिसमें सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई, को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है। उत्तर वैदिक के अन्तिम दौर में 600 ई. पू. के आसपास आर्य लोग कोसल, विदेह एवं अंग राज्य से परिचित थे। मगध व अंग आर्य क्षेत्र के बाहर थे। पुरु एवं भरत मिलकर कुरु और तुर्वश एवं क्रिवि मिलकर पांचाल कहलाए।

185. निम्नलिखित में से कौन सा एक पदाधिकारी उत्तर वैदिक काल में रत्नियों की सूची में सम्मिलित नहीं था?

(a) ग्रामणी (b) महिषी
(c) स्थपति (d) सूत

उत्तर-(c) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : 12 रत्नियों के नाम इस प्रकार हैं– (1) पुरोहित (2) सेनानी (3) राजन्य (4) महिषि (5) सूत–यह राजा का सारथी भी होता था। (6) ग्रामणी (7) क्षत्री (प्रतिहास) (8) संग्रहीतृ (9) भागदुघ (10) अक्षवाप (11) गोविकर्तन (12) पालागल।

186. वैदिक काल में ' बलि' शब्द का क्या अर्थ है?

(a) बलिदान
(b) बैल
(c) आनुवांशिक
(d) प्रजा द्वारा शासक को दी गई भेंट

उत्तर (d) **UPPSC RO/ARO (Mains) GS I[st] 2016**

व्याख्या- वैदिक काल में 'बलि' शब्द का अर्थ प्रजा द्वारा शासक को दी गई भेंट से है।

187. निम्नलिखित में से किसने ऋग्वेद में वर्णित 'दाशराज्ञ युद्ध' में भाग नहीं लिया था?

(a) तुर्वस (b) पक्थ
(c) विषाणिन् (d) गंधारि

उत्तर-(d) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : दाशराज्ञ युद्ध में सुदास के विरुद्ध भाग लेने वाले राजाओं के नाम ऋग्वेद के अनुसार निम्नलिखित हैं–पुरु, यदु, तुर्वस, अनु, दुह्यु, अनिल, पक्थ, भलानस, विषाणिन और शिव। दशराज्ञ युद्ध पुरूष्णी नदी के तट पर हुआ था।

188. ऋग्वेद में उल्लिखित दस राजाओं का संग्राम किस नदी के तट पर हुआ था?

(a) वितस्ता (b) अस्किनी
(c) परुष्णी (d) विपासा

UPPSC AE- 2013
UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2008

Ans. (c) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

189. ऋग्वेद में यदुजन का अधिकतर किसके साथ युग्म बना है?

(a) अनु (b) द्रुह्यु (c) तुर्वसु (d) पुरु

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

190. उस जनजाति का नाम बतलाइये जो ऋग्वेदिक आर्यों के पंचजन से सम्बन्धित नहीं है?

(a) यदु (b) पुरु
(c) तुर्वस (d) किकट

उत्तर-(d) **UPPCS (J) 2015**

UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2009

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

191. निम्नलिखित में से किसने आर्कटिक क्षेत्र को आर्य भाषा-भाषियों के मूल स्थान होने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया?

(a) मैक्समूलर (b) एडवर्ड मेयर
(c) बाल गंगाधर तिलक (d) हर्जफील्ड

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र के आधार पर यह मत व्यक्त किया है कि आर्यों का आदि देश उत्तरी ध्रुव था। उनका मुख्य तर्क है कि ऋग्वेद में छः-छः मास तक चलने वाले रात और दिन तथा दीर्घकाल तक रहने वाली उषा का उल्लेख है। उनके अनुसार इस तरह की संभावना आर्कटिक क्षेत्र (उत्तरी ध्रुव) में ही है।
मैक्समूलर ने मध्य एशिया को तथा एडवर्ड मेयर ने पामीर के पठार को आर्यों का मूल निवास स्थान बताया है।

192. क्लासिकीय संस्कृत में 'आर्य' शब्द का अर्थ है–

(a) ईश्वर में विश्वासी
(b) एक वंशानुगत जाति
(c) किसी विशेष धर्म में विश्वास रखने वाला
(d) एक उत्तम व्यक्ति

उत्तर-(d) **UP Lower (Pre) 1998**

व्याख्या : क्लासिकीय संस्कृत में 'आर्य' शब्द का अर्थ है–एक उत्तम व्यक्ति। सैंधव संस्कृति के विनाश के पश्चात् भारत में जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ, उसे वैदिक अथवा आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है। आर्यों का इतिहास हमें मुख्यतः वेदों से ज्ञात होता है, जिसमें ऋग्वेद सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आर्य कई जनों में विभक्त थे। इनमें पाँच जनों के नाम प्रायः मिलते हैं- अनु, द्रुह्य, यदु, पुरू, तुर्वस। इन्हें 'पंचजन्य' कहा गया है।

193. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'वेदांग' नहीं है?

(a) कल्प (b) निरुक्त
(c) स्मृति (d) शिक्षा

UPPSC ACF/RFO 2021 Paper-I

Ans. (c) : वेदों को सही ढंग से समझने के लिए वेदांगों की रचना हुई। वेदांग की संख्या 6 है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष। स्मृति वेदांग के अन्तर्गत नहीं आता है। स्मृतियाँ हिन्दू धर्म के कानूनी ग्रंथ है। ये पद्य में लिखी गई है। सबसे प्राचीन स्मृति मनुस्मृति है। लगध मुनि वेदांग ज्योतिष के लेखक के रूप में विख्यात है।

194. निम्नलिखित में से कौन वेदांग ज्योतिष के लेखक के रूप में ख्यात हैं?

(a) आर्यभट्ट (b) ब्रह्मगुप्त
(c) लगध (d) लाटदेव

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

195. निम्नलिखित ग्रन्थों में से प्रमुखतः किसमें यज्ञ वेदियों के निर्माण का विवरण मिलता है?

(a) ब्रह्मसूत्र (b) धर्मसूत्र
(c) गृह्यसूत्र (d) शुल्वसूत्र

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001, 2008**
UPPSC Asst. Forest Conservator Exam. 2013

व्याख्या : कल्पसूत्र मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्वसूत्र। इनका विवरण निम्न है। श्रौतसूत्र से तात्पर्य श्रुति अथवा वेदों से सम्बन्धित यज्ञ भाग है, वेदों में वर्णित यज्ञ भागों का क्रमबद्ध विवरण हमें श्रौतसूत्रों में मिलता है। उनके अध्ययन से हम उस काल की धार्मिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। गृहसूत्र में गृहस्थाश्रम से सम्बन्धित धार्मिक अनुष्ठानों तथा कर्तव्यों का वर्णन मिलता है। गृहस्थाश्रम के संस्कारों यज्ञों आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन इसमें प्राप्त होता है। धर्मसूत्र में सामाजिक नियमों तथा आचार विचारों का विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है। शुल्वसूत्र में 'शुल्व' का अर्थ नापने की डोरी होता है। इसमें यज्ञीय वेदियों को नापने, उनके स्थान चयन तथा निर्माण आदि का वर्णन है। ये आर्यों के ज्यामितीय ज्ञान के परिचायक है। सामान्यतः सूत्रों का समय ई.पू. 600 से लेकर 300 ई.पू. तक माना जाता है।

196. अवेस्ता और ऋग्वेद में समानता है। अवेस्ता किस क्षेत्र से सम्बन्धित है?

(a) भारत से (b) ईरान से
(c) इजरायल से (d) मिस्र से

उत्तर-(b) **UP Lower (Pre) 2004**

व्याख्या : अवेस्ता और ऋग्वेद में काफी समानता है। अवेस्ता ईरान क्षेत्र से संबंधित है जबकि ऋग्वेद आर्यों से संबंधित भारतीय ग्रंथ है। ऋग्वेद की अनेक बातें अवेस्ता से मिलती हैं। अवेस्ता ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है।

197. मनुस्मृति में 'सरस्वती' और 'द्रुशद्वती' नदियों के बीच के प्रदेश को पुकारा जाता था–

(a) आर्यावर्त (b) सप्त सैन्धव
(c) ब्रह्मावर्त (d) ब्रह्मर्षिदेश

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003, 2005**
UP PSC ACF/RFO (Mains) 2019 Paper I
UPPCS (Pre) G.S. 2007
UPPCS (Pre) Opt. History 2008

व्याख्या : धर्मसूत्र साहित्य से कालान्तर में स्मृति साहित्य का विकास हुआ। स्मृतियों का निर्माण हिन्दू धर्म के चरम विकास को सूचित करता है। ये प्राचीन भारतीय सभ्यता पर विस्तृत प्रकाश डालती है। स्मृतियों को **'धर्मशास्त्र'** की संज्ञा प्रदान की जाती है। भारतीय इतिहास में ई.पू. द्वितीय शताब्दी से लेकर मध्यकाल तक विभिन्न स्मृति ग्रन्थों का प्रणयन हुआ। **'मनुस्मृति'** स्मृतियों में सबसे प्राचीन तथा प्रमाणित है। इसकी रचना शुंगकाल (ई.पू. द्वितीय शती) के लगभग मानी जाती है। अधिकांश स्मृतियाँ इसी को परिवर्तित करके लिखी गयी हैं। याज्ञवल्क्य, विष्णु, नारद, वृहस्पति में आर्य संस्कृति के विस्तार का वर्णन चार क्षेत्रों में ब्रह्मर्षि क्षेत्र, ब्रह्मावर्त,मध्य देश और आर्यावर्त मे प्राप्त हुआ है। सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच प्रदेश को ब्रह्मावर्त कहा गया है। सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश सबसे पवित्र समझा जाता था। मनुस्मृति मुख्यतः समाज व्यवस्था से संबंधित ग्रंथ हैं। मनुस्मृति के टीकाकार भारूचि, मेधातिधि व गोविन्दराज है।

198. भारोपीय भाषा परिवार की प्राचीनतम भाषा कौन-सी है?

(a) लैटिन (b) ईरानी
(c) ग्रीक (d) संस्कृत

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : भारोपीय परिवार में संस्कृत ही एकमात्र भाषा है जिसका रूप और इतिहास कम से कम 3500 वर्षों से अधिक का ज्ञात है।

04. धार्मिक आन्दोलन (Religious Movement)

जैन धर्म

199. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I (बौद्ध तीर्थ स्थल)	सूची-II (बुद्ध के जीवन की घटनायें)
A. गया	1. जन्म
B. कुशीनगर	2. ज्ञान प्राप्ति
C. लुम्बनी	3. प्रथम उपदेश
D. सारनाथ	4. निर्वाण

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	4	1	3
(c)	3	1	4	2
(d)	2	3	1	4

UP APO-2007

Ans: (b) सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I (बौद्ध तीर्थ स्थल)	सूची-II (बुद्ध के जीवन की घटनायें)
A. गया	2. ज्ञान प्राप्ति
B. कुशीनगर	4. निर्वाण
C. लुम्बिनी	1. जन्म
D. सारनाथ	3. प्रथम उपदेश

200. निम्नलिखित में से किसने जैन धर्म में 'ब्रह्मचर्य' के सिद्धान्त को जोड़ा ?

(a) पार्श्वनाथ (b) नेमिनाथ
(c) महावीर (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP APO-2015

Ans. (c) : पार्श्वनाथ ने भिक्षुओं के लिए केवल चार व्रतों का विधान किया था-अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) तथा अपरिग्रह (धन संचय का त्याग) परन्तु महावीर ने इसमें पाँचवा व्रत ब्रह्मचर्य जोड़ा और उसका पालन अनिवार्य बताया।

201. जैन सभा जिसमें पाँचवीं/छठी शताब्दी में जैन ग्रंथों का सार-संकलन करके लिपिबद्ध किया गया था, कहाँ पर आयोजित की गई थी?

(a) कुन्दपुरा में (b) नालन्दा में
(c) वल्लभी में (d) वैशाली में

UP APO-2011

Ans. (c) : वल्लभी में आयोजित पाँचवी/ छठी शताब्दी में जैन सभा की अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी जिसमें जैन ग्रंथों का सार- संकलन करके लिपिबद्ध किया गया था।

202. कथन (A): बौद्ध धर्म अन्ततः उन्हीं कर्मकाण्डों एवं धार्मिक अनुष्ठानों का वशीभूत हो जाता है, जिनकी प्रारम्भ में निन्दा करता था।

कारण (R): यह ब्राम्हण धर्म की बुराईयों का शिकार हो गया।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिये-

कूटः

(a) A और R दोनों सही है तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(b) A और R दोनों सही है लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) A सही है लेकिन R गलत है
(d) A गलत है लेकिन R सही है।

UPPCS (J) 2016

Ans. (a) : बौद्ध धर्म का उदय ब्राह्मण धर्म के कर्मकाण्डों के विरोध स्वरूप हुआ था किन्तु बौद्ध धर्म उन्हीं कर्मकाण्डों और धार्मिक अनुष्ठानों को अपनाकर वशीभूत हो जाता है जिनकी वह आलोचना कर रहा था। इस प्रकार कथन एवं कारण दोनों सही है। कारण कथन की सही व्याख्या भी कर रहा है।

203. निम्नलिखित खगोलविदों में से कौन अवन्ती का निवासी था?

(a) आर्यभट्ट (b) ब्रह्मगुप्त
(c) भास्कराचार्य II (d) वराहमिहिर

UPPCS (J) 2013

Ans. (d) : 'अवंति' प्राचीन समय में भारत के सोलह महाजनपदों में से एक था। यह जनपद उत्तर एवं दक्षिण दो भागों में विभक्त था। उत्तरी अवंती जिसकी राजधानी उज्जैयिनी तथा दक्षिणी अवन्ती की राजधानी माहिष्मती थी। वराहमिहिर उज्जैन (अवंति) के पांचवी-छठीं शताब्दी के भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री थे। इनका प्रमुख ग्रंथ ''पंचसिद्धांतिका'' था।

204. निम्नलिखित में से कौन-सा जैन ग्रन्थ जैन भिक्षुओं के लिए नियमों का वर्णन करता है?

(a) आचरांग-सूत्र (b) भगवती-सूत्र
(c) कालिका-पुराण (d) भद्रबाहुचरित

UPPCS (J) 2018

Ans. (a) : जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में मिलते हैं। जैन साहित्य, जिसे 'आगम' कहा जाता है इनकी संख्या 12 बतायी गयी है। इन 12 आगमों के 'आचरांग सूत्र' में जैन भिक्षुओं के विधि निषेधों एवं आचार-विचारों का विवरण एवं 'भगवती सूत्र' से महावीर स्वामी के जीवन शिक्षाओं के बारे में जानकारी मिलती है। जबकि कालिका पुराण, भद्रबादुचरित, आचारांग सूत्र से ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी मिलती है।

205. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

सूची-I	सूची-II
(A) वैशेषिक दर्शन	1. गौतम
(B) सांख्य दर्शन	2. पतंजलि
(C) योग दर्शन	3. कणाद
(D) न्याय दर्शन	4. कपिल

कूट:

	A	B	C	D
(a)	3	4	2	1
(b)	3	2	4	1
(c)	2	3	4	1
(d)	3	2	1	4

UPPCS (J) 2018

Ans. (a) : सही सुमेलन है–

वैशेषिक दर्शन	कणाद
सांख्य दर्शन	कपिल
योग दर्शन	पतंजलि
न्याय दर्शन	गौतम

206. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

	सूची-I (स्थल)		सूची-II (संबंधित तीर्थंकर)
A	श्रावस्ती	**1**	ऋषभनाथ
B	काकंदी	**2**	पद्मप्रभु
C	अयोध्या	**3**	सुविधानाथ
D	पभोसा	**4**	संभवनाथ

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	1	2	4	(b)	2	4	1	3
(c)	4	3	1	2	(d)	3	2	4	1

UPPSC RO/ARO (Mains) 2021
UPPCS (Pre) Opt. History 2006

Ans. (c) : सही सुमेल इस प्रकार है।

सूची-I/(स्थल)	सूची-II (संबंधित तीर्थंकर)
श्रावस्ती	संभवनाथ
काकंदी	सुविधा नाथ
अयोध्या	ऋषभनाथ
पभोसा	पद्मप्रभु
कौशाम्बी	पद्मनाथ
काशी	पार्श्वनाथ

207. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I (जैन तीर्थंकर)	सूची-II (पहचान)
A. शान्तिनाथ	1. मृग
B. मल्लिनाथ	2. सिंह
C. पार्श्वनाथ	3. सर्प
D. महावीर	4. जल-कलश

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	4	3	(b)	4	1	3	2
(c)	2	3	1	4	(d)	1	4	3	2

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**
UPPCS (Pre) G.S.-I[st] 2017

व्याख्या : सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है–

	जैन तीर्थंकर		पहचान
(A)	शांतिनाथ	–	मृग
(B)	मल्लिनाथ	–	जलकलश
(C)	पार्श्वनार्थ	–	सर्प
(D)	महावीर	–	सिंह
(E)	आदिनाथ	–	वृषभ
(F)	संभवनाथ	–	अश्व

208. निम्नलिखित तीर्थंकरों पर विचार कीजिए तथा उनको सही कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए :

1. अभिनंदन **2. विमल नाथ**
3. मुनिसुब्रत नाथ **4. पद्मप्रभु**

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

(a) 1, 4, 2 और 3 (b) 3, 1, 2 और 4
(c) 4, 3, 1 और 2 (d) 4, 1, 3 और 2

उत्तर–(a) **UPPSC RO/ARO (Mains) 2016**

व्याख्या : 24 जैन तीर्थंकारों की कालानुक्रम सूची निम्न है-

1. ऋषभदेव (आदिनाथ)	2. अजितनाथ	3. संभवनाथ
4. अभिनन्दन नाथ	5. सुमतिनाथ	6. पद्मप्रभु
7. सुपार्श्वनाथ	8. चन्द्रप्रभु	9. पुष्पदंत
10. शीतलनाथ	11. श्रेयांसनाथ	12. वासुपूज्य
13. विमलनाथ	14. अनंतनाथ	15. धर्मनाथ
16. शांतिनाथ	17. कुंथनाथ	18. अरहनाथ
19. मल्लिनाथ	20. मुनिसुव्रतनाथ	21. नमिनाथ
22. अरिष्टनेमि (नेमिनाथ)	23. पार्श्वनाथ	24. महावीर स्वामी

209. निम्नलिखित में से कौन-सा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है?

(तीर्थंकर)	(निर्वाण स्थल)
(a) ऋषभनाथ	- अष्टापद
(b) वासुपूज्य	- सम्मेदशिखर
(c) नेमिनाथ	- ऊर्जयन्त
(d) महावीर	- पावापुरी

उत्तर–(b) **UPPSC (Pre) 2021**

व्याख्या : सही सुमेलन है–

तीर्थकर	निर्वाण स्थल
ऋषभनाथ	अष्टापद
बासुपूज्य	चंपापुरी
नेमिनाथ	उर्जयन्त
महावीर	पावापुरी

210. भारत में आस्तिक तथा नास्तिक संप्रदायों में कौन सा विभेदक लक्षण है?

(a) ईश्वरी सत्ता में आस्था
(b) पुनर्जन्म के सिद्धान्त में आस्था
(c) वेदों की प्रामाणिकता में आस्था
(d) स्वर्ग तथा नरक की सत्ता में विश्वास

उत्तर-(c) **UPPCS (Mains) G.S. Ist, 2005**

व्याख्या : भारत में आस्तिक तथा नास्तिक सम्प्रदायों में वेदों की प्रामाणिकता में आस्था के आधार पर विभेद किया जाता है। भारतीय दर्शन की प्रमुख धाराएँ हैं–आस्तिकवादी (ईश्वरवादी) तथा नास्तिकवादी (अनीश्वरवादी)। इन्हें वैदिक तथा अवैदिक शाखाएँ भी कहा जाता है। वेदों में नास्तिक शब्द का प्रयोग वेदों के विरोधियों के लिए किया गया है। समग्र रूप में, आस्तिक व नास्तिक दर्शनों का वर्गीकरण करते हुए कहा जा सकता है कि वेदों को प्रामाणिक न मानने वाले चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शन नास्तिक तथा न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त आस्तिक दर्शन है।

211. पालि आगम के अनुसार निम्नलिखित में से किसका यह मत था कि मृत्यु के पश्चात् सब कुछ नष्ट हो जाता है, अतएव कर्म का कुछ भी फल नहीं हो सकता?

(a) अजित केशकम्बलिन (b) मक्खलि गोसाल
(c) निगंठ नातपुत्त (d) पूरण कस्सप

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**

व्याख्याः अजित केशकम्बलिन एक उच्छेदवादी थे। इनका मत था कि मृत्युपरांत सबकुछ नष्ट हो जाता है। इसलिए कर्मविधान जैसा कुछ भी नहीं होता। जो कुछ है वह यही जन्म होता है।

212. जैन धर्म के संस्थापक हैं –

(a) आर्य सुधर्मा (b) महावीर स्वामी
(c) पार्श्वनाथ (d) ऋषभ देव

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2010**

व्याख्या : जैन धर्म के संस्थापक ऋषभ देव थे। जैन परम्परा के अनुसार इस धर्म में 24 तीर्थंकर हुए जिसमें ऋषभ देव प्रथम तीर्थंकर थे। ऋषभ देव को आदिनाथ के नाम से भी जाना जाता है तथा इन्हें बाद की परम्परा में स्वयं भगवान विष्णु का अवतार भी कहा जाता है। वैदिक मंत्रों में केवल दो तीर्थंकरों ऋषभदेव तथा अरिष्टनेमी का उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण तथा भागवत पुराण में ऋषभ देव को नारायण के अवतार के रूप में चित्रित किया गया है। 24वें तीर्थकर एवं जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी माने जाते है। नाथमुनि जैन तीर्थंकर नहीं थे।

213. निम्नलिखित में से कौन एक जैन तीर्थंकर नहीं था?

(a) चन्द्रप्रभा (b) नाथमुनि (c) नेमि (d) संभव

उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. 2004**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

214. श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार निम्नलिखित तीर्थंकरों में कौन महिला तीर्थंकर थी?

(a) सुमतिनाथ (b) शान्तिनाथ
(c) मल्लिनाथ (d) अरिष्टनेमि

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थी जो उन्नीसवें तीर्थंकर थी। सुमतिनाथ पाँचवें, शांतिनाथ सोलहवें और नेमिनाथ बाइसवें तीर्थंकर थे। ये सभी पुरुष थे। इनके विषय में और विस्तृत जानकारी नहीं मिलती है। लेकिन दिगंबर जैन का मानना है कि महिलाए तीर्थंकर नहीं हो सकती है और मल्लिनाथ एक पुरुष थे। जैन परंपरा के अनुसार 22वें तीर्थांकर नेमिनाथ कृष्ण से संबंधित थे।

215. जैन परम्परा के अनुसार बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ किससे सम्बन्धित थे?

(a) परशुराम (b) कृष्ण (c) बिम्बिसार (d) उदयन

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

216. पार्श्वनाथ की शिक्षाएँ संगृहीत रूप से जानी जाती है :

(a) त्रिरत्न नाम से (b) पंच महाव्रत नाम से
(c) पंचशील नाम से (d) चातुर्याम नाम से

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 1997 2006,2009**
UP Lower (Pre) 2002
UPPCS (Mains) G.S. 2016
UPPCS (Pre) G.S. 2002

व्याख्या : पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे। उन्होंने भिक्षुओं के लिए केवल 4 व्रतों का विधान किया था-अहिंसा, सत्य, अस्तेय तथा अपरिग्रह। बाद में 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने इसमें एक पांचवा व्रत ब्रह्मचर्य भी जोड़ दिया तथा उसका पालन करना अनिवार्य बताया। पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी में हुआ था तथा इनको ज्ञान की प्राप्ति सम्मेद शिखर पर हुई थी। सम्मेद शिखर पर इनकी मृत्यु भी हुई थी। पार्श्वनाथ का प्रतीक सर्पफण है।

217. महावीर का प्रथम अनुयायी कौन बना?

(a) जामालि (b) यशोदा (c) आणोज्जा (d) त्रिशला

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2008, 2005**
UPPSC RO/ARO (Mains) 2017
UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2004

व्याख्या : महावीर का जन्म 599 ई. पू. के लगभग वैशाली के निकट कुण्डग्राम में हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे जो वज्जि संघ के एक प्रमुख सदस्य थे। उनकी माता त्रिशला अथवा विदेहदत्ता वैशाली के लिच्छवि कुल के प्रमुख चेटक की बहन थी। महावीर की शादी कौन्डिन्य गोत्र की कन्या यशोदा के साथ हुआ। उससे उन्हें अणोज्या (प्रियदर्शना) नाम की पुत्री पैदा हुई। उसका विवाह जामालि के साथ हुआ। जामालि महावीर का दामाद तथा प्रथम अनुयायी/शिष्य बना किन्तु जामालि ने ही जैन धर्म में प्रथम भेद उत्पन्न किया। महावीर स्वामी को 42वर्ष की आयु में जाम्भिक ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। महावीर की मृत्यु के बाद सुधर्मा जैन संघ का प्रमुख बना था।

218. महावीर की मृत्यु के उपरान्त निम्नलिखित में से किसके जैन संघ के प्रमुख बनने का वर्णन है?

(a) जम्बू (b) भद्रबाहु
(c) स्थूलभद्र (d) सुधर्मा

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

219. सत्य के अनेकान्त का सिद्धान्त किसका विशिष्ट लक्षण है?

(a) आजीवक (b) बौद्ध धर्म
(c) जैन धर्म (d) लोकायत

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**
UPPCS (Pre) G.S. 1993

व्याख्या : जैन धर्म के अंतर्गत ज्ञान का सिद्धान्त स्याद्वाद कहलाता है। तत्वमीमांसा की दृष्टि से इसे **अनेकान्तवाद** भी कहा जाता है, जिसके अंतर्गत इस बात की चर्चा की जाती है कि सत्य के अनेक पहलू है। इसमें किसी भी वस्तु के सम्बन्ध में सात परामर्श दिये जाने की बात की जाती है। स्याद्वाद जिसे सप्तभंगीनय भी कहा जाता है ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है। इसके अलावा जैन धर्म त्रिरत्न सिद्धांत (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र) में भी विश्वास करता है। जैन धर्म का आधारभूत बिन्दु अहिंसा है। जैनों के अनुसार 'काल' एक बहुदेशव्यापी अस्तिकाय द्रव्य अपवाद है।

220. त्रिरत्न सिद्धान्त (Doctrine of three jewels) – सम्यक् धारणा, सम्यक् चरित्र, सम्यक् ज्ञान जिस धर्म की महिमा है, वह है –

(a) बौद्ध धर्म (b) ईसाई धर्म
(c) जैन धर्म (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 2004**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

221. जैनों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन एक बहु देशव्यापी अस्तिकाय द्रव्य अपवाद है?

(a) जीव (b) पुद्गल
(c) आकाश (d) काल

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 1998**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

222. जैन धर्म में 'सल्लेखना' से तात्पर्य है :

(a) लेखन पद्धति (b) उपवास द्वारा प्राण-त्याग
(c) तीर्थंकरों की जीवनी (d) भित्ति चित्र

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Opt. History 2006, 2009

व्याख्या : जैन धर्म में 'सल्लेखना' (संथारा) से तात्पर्य उपवास द्वारा प्राणत्याग से हैं। मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य अपने जीवन के अंतिम दिनों में जैन हो गये थे। उनके शासन काल के अन्त में मगध में 12 वर्षों का अकाल पड़ा। अकाल की स्थिति से निपटने में असफल होकर चन्द्रगुप्त मौर्य अपने पुत्र के पक्ष में सिंहासन त्याग कर भद्रबाहु के साथ श्रवण बेलगोला (मैसूर) में तपस्या करने चले गये। इसी स्थान पर उसने सल्लेखना विधि से अपने प्राण त्यागे।

223. किस धर्म को राष्ट्रकूटों का संरक्षण प्राप्त था?

(a) बौद्ध धर्म (b) जैन धर्म
(c) शैव धर्म (d) शाक्त धर्म

उत्तर-(b) UPPCS (J) 2018
UP UDA/LDA (Pre) 2010

व्याख्या : राष्ट्रकूटों ने अपने शासन काल में जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया। इन्होंने हिन्दू धर्म के अतिरिक्त जैन धर्म को अपना राज्य धर्म बनाया। अमोघवर्ष प्रथम, इन्द्र चतुर्थ, कृष्ण द्वितीय तथा इन्द्र तृतीय जैन धर्म के समर्थक थे। अमोघवर्ष प्रथम के राजदरबार में प्रसिद्ध जैन विद्वान तथा आदिपुराण के लेखक जिनसेन निवास करते थे। राष्ट्रकूटों के अतिरिक्त कलिंग शासक खारवेल ने भी जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया था।

224. निम्नलिखित राजाओं में से कौन जैनधर्म का संरक्षक था?

(a) अशोक (b) हर्ष
(c) पुलकेशिन द्वितीय (d) खारवेल

उत्तर-(d) UPPSC Kanoongo Exam., 2014

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

225. निम्नलिखित में से कौन जैन धर्म के 'अनंत-चतुष्टय' में सम्मिलित नहीं किया गया है?

(a) अनंत शांति (b) अनंत ज्ञान
(c) अनंत दर्शन (d) अनंत वीर्य

उत्तर (a) UPPCS (J) 2016
UPPSC Asst. Forest Conservator Officer 2015

व्याख्या : अष्ट प्रातिहार्यों से युक्त तीर्थकर अनन्त चतुष्यों से मण्डित होते है। अनन्त काल, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य-अर्हनत भगवान के अनन्त चतुष्टय है। जैन धर्म विश्व विनाशकारी प्रलय की अवधारणा में विश्वास नहीं करता है। जैन धर्म में कर्म परमाणुओं के पूर्ण विनाश को सूचित करने वाली अवस्था को निर्जरा कहते हैं।

226. जैन धर्म के कर्म परमाणुओं के पूर्ण विनाश को सूचित करने वाली अवस्था को कहा जाता है-

(a) अजीव (b) आस्रव
(c) जीव (d) निर्जरा

उत्तर-(d) UPPCS (Pre) Opt. History, 1997
UPPCS (Pre) I[st] GS, 2014

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

227. जैन धार्मिक ग्रन्थ अंगों का संकलन सर्वप्रथम किस संगीति के अन्तर्गत किया गया था?

(a) वल्लभी (b) पाटलिपुत्र (c) वैशाली (d) मथुरा

उत्तर (b) UPPCS (Pre) Opt. History 2003

व्याख्या : प्रथम जैन संगीति अथवा प्रथम जैन महासभा का आयोजन 300 ई. पू. हुआ था। यह संगीति मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में हुई थी।

⇒ यह जैन सभा पाटलिपुत्र में हुयी थी।
⇒ इस महासभा के अध्यक्ष स्थूल भद्र थे।
⇒ प्रथम जैन संगीति में जैन धर्म में प्रधान भाग 12 अंगों का संपादन हुआ।
⇒ इस सभा में जैन धर्म दिगंबर एवं श्वेताम्बर दो भागों में बाँटा गया।

228. प्रारंभिक जैन साहित्य निम्नलिखित में से किस भाषा में लिखा गया था?

(a) अर्ध-मागधी (b) पालि (c) प्राकृत (d) संस्कृत

उत्तर-(a) UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2006
UPPCS (Pre) Opt. History 2003

व्याख्या : प्रारम्भिक जैन साहित्य अर्द्ध-मागधी भाषा में लिखा गया था। आरम्भ में जैनों ने मुख्यतः ब्राह्मणों द्वारा सम्पोषित संस्कृत भाषा का परित्याग किया और अपने धर्मोपदेश के लिए आम लोगों की बोलचाल की प्राकृत भाषा को अपनाया। उनके धार्मिक ग्रंथ अर्द्धमागधी भाषा में लिखे गये और ये ग्रंथ ईसा की छठी सदी में गुजरात में बल्लभी नामक स्थान में, जो एक महान विद्या केन्द्र था अंतिम रूप से संकलित किये गये। प्रारम्भिक जैन धर्म का इतिहास कल्पसूत्र में मिलता है।

229. कूर्चक एक सम्प्रदाय था–

(a) वैष्णव धर्म का (b) शैव धर्म का
(c) जैन धर्म का (d) बौद्ध धर्म का

उत्तर-(c) UPPCS (Pre) Opt. History 2008

व्याख्या : दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय जैन धर्म के दो मुख्य सम्प्रदाय थे। इसके अलावा 148 ई. में एक श्वेताम्बर मुनि श्री कलश द्वारा यापनीय सम्प्रदाय की स्थापना की गई थी। कदम्ब शासकों के अभिलेखों में श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय सम्प्रदायों के अलावा कूर्चक और श्वेतपट्ट जैन सम्प्रदायों का उल्लेख प्राप्त होता है।

230. यापनीय संघ किसके सम्बन्धित है-

(a) जैन (b) बौद्ध
(c) वैष्णव (d) शैव

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) G.S. 2010

उत्तर- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

231. श्रवणबेलगोला स्थित है-

(a) तमिलनाडु में (b) गुजरात में
(c) कर्नाटक में (d) आन्ध्र प्रदेश में

उत्तर (c) UPPCS (Pre) Opt. History 1998

व्याख्या : श्रवणबेलगोला कर्नाटक में अवस्थित है। यह जैनियों का प्रसिद्ध केन्द्र है। यहाँ पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन आचार्य भद्रबाहु के साथ तपस्या की तथा अन्त में जैन पद्धति सल्लेखना द्वारा अपने प्राणों को त्याग दिया था। प्रभासगिरि उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी में स्थित जैन तीर्थस्थल है।

232. प्रभासगिरि जिनका तीर्थ-स्थल है, वे हैं -

(a) बौद्ध (b) जैन
(c) शैव (d) वैष्णव

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2008

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

233. श्रवण बेलगोला में गोमतेश्वर की विशाल प्रतिमा किसने स्थापित की थी?

(a) चामुण्डराय (b) कृष्ण प्रथम
(c) कुमारपाल (d) तेजपाल

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**
UP Lower (Pre) 2009

व्याख्या : गंग राजा राजमल्ल चतुर्थ के मंत्री चामुण्डराय ने मैसूर स्थित श्रवण बेलगोला में प्रथम तीर्थंकर के पुत्र गोमतेश्वर की विशाल प्रतिमा की स्थापना करवायी थी। यह मूर्ति 17 मीटर ऊँची है। चामुण्ड राय ने गोमेतेश्वर की प्रतिमा की स्थापना छठीं सदी के विभव वर्ष में चैत्र शुक्ल पंचमी 13 मार्च , 981 ई. को की थी। यह मूर्ति कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ी है। यह चट्टान को काटकर विंध्यगिरि पर्वत पर बनायी गयी सबसे विशाल मूर्ति है।

बौद्ध धर्म

234. बौद्ध साहित्य में 'थेरीगाथा' निम्नलिखित में से किस निकाय से सम्बन्धित है?

(a) मज्झिम-निकाय
(b) अंगुत्तर-निकाय
(c) संयुक्त-निकाय
(d) खुद्दक-निकाय

UPPCS (J) 2022 (12-02-2023)

Ans. (d) : बौद्ध साहित्य में 'थेरीगाथा' खुद्दक - निकाय से सम्बन्धित स्थविर भिक्षुणियो के गीतों का संग्रह हैं। खुद्दक निकाय 15 लघु ग्रंथों का संग्रह है, जिसमें मुख्यतः खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुन्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, बुद्धवंश, जातक, निद्देश्य, पतिसम्मिद्रमग्ग, अपादान तथा चरियापिटक शामिल हैं।

नोटः-

1. मज्जिम निकाय - बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों के व्याख्यान, वार्तालाप तथा कथानक इसमें शामिल है। बुद्ध का मानवीय तथा दैवीय शक्ति के रूप चित्रण प्राप्त होता है।

2. अंगुत्तर निकाय - इसके सुत्त 11 निपातों में संगठित है। इसमें 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।

3. संयुक्त निकाय - यह सुत्त के वर्गो का समुच्चय है। इसमें धर्म चक्र प्रवर्तन सुत के बारे में वर्णन प्राप्त होता है।

235. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I (चिन्ह)	**सूची-II (अर्थ)**
A. जन्म	1. बोधि वृक्ष
B. प्रथम प्रवचन	2. धर्म चक्र
C. महाबोधि	3. घोड़ा
D. त्याग	4. कमल

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	4	3	2	1
(c)	3	4	1	2	(d)	4	2	1	3

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) G.S. Ist 2005**

व्याख्या : महात्मा बुद्ध के जीवन की पाँच घटनायें बौद्ध धर्म की प्रतीक चिन्ह मानी जाती हैं- (A) **जन्म -** कमल व सांड, (B) **गृहत्याग-**अश्व (घोड़ा), (C) **महाबोधि -** बोधिवृक्ष, (D) **प्रथम उपदेश**-धर्म चक्र प्रवर्तन, (E) **परिनिर्वाण-**पद चिन्ह और स्तूप।

236. बोधि प्राप्त करने के पूर्व ज्ञान की खोज में सिद्धार्थ गौतम किन आचार्यों के पास गये थे?

1. आलार कालाम 2. उद्रक रामपुत्र
3. मक्खलि गोसाल 4. निगंठ नातपुत्त

निम्नांकित कूट से अपना उत्तर निर्दिष्ट कीजिए :

(a) 1 और 4 (b) 4 और 2
(c) 2 और 3 (d) 1 और 2

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : गृह त्याग के पश्चात् बुद्ध ज्ञान की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए सर्वप्रथम वैशाली के समीप आलार कालाम नामक संन्यासी के आश्रम में गये। यहाँ उन्होंने तपस्या की किन्तु उन्हें शांति नहीं मिली। यहाँ से वे उद्रकरामपुत्र नामक एक-दूसरे धर्माचार्य के समीप पहुँचे, जो राजगृह के समीप आश्रम में निवास करता था। यहाँ भी उनके अशान्त मन को शान्ति नहीं मिल सकी। खिन्न होकर उन्होंने उनका भी साथ छोड़ दिया और उरुबेला (बोधगया) नामक स्थान में अकेले ही तपस्या करने का निश्चय किया। यही उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

237. बौद्ध धर्म के विस्तार के कारणों में सम्मिलित थे-

1. धर्म की सादगी 2. दलितों के लिये विशेष अपील
3. धर्म की मिशनरी भावना 4. स्थानीय भाषा का प्रयोग
5. दार्शनिकों द्वारा वैदिक भावना की सुदृढ़ता

नीचे दिये कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

कूट :

(a) 1, 2, और 3 (b) 2, 3, और 4
(c) 1, 2, 3 और 4 (d) 2, 3, 4 और 5

उत्तर- (c) **UPPCS (Pre) G.S. 2009**

व्याख्या : नास्तिक संप्रदाय के आचार्यों में महात्मा बुद्ध का नाम सर्वप्रमुख है। उन्होंने जिस धर्म का प्रवर्तन किया वह कालान्तर में अंतर्राष्ट्रीय धर्म बनाया। बौद्ध धर्म के विस्तार के कारणों में निम्न को सम्मिलित किया जाता है – 1. धर्म की सादगी, 2. दलितों के लिए विशेष अपील, 3. धर्म की मिशनरी भावना, 4. स्थानीय भाषा का प्रयोग।

238. भगवान बुद्ध ने निम्नलिखित चार आर्य सत्यों का प्रतिपादन किया। नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करके उन्हें सही क्रम में रखिए –

A. दुःख है। B. दुःख का निरोध है।
C. दुःख निरोध का मार्ग है। D. दुःख का कारण है।

कूट :

(a) A D B C (b) A D C B
(c) A C B D (d) A B C D

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2006**

व्याख्या : गौतम बुद्ध के उपदेशों में सबसे महत्वपूर्ण चार आर्य सत्य जिनमें पूरे बौद्ध धर्म का सार निहित हैं- 1. **दुःख-** संसार मे सर्वत्र दुःख ही दुःख है। 2. **दुःख समुदय** - दुःख उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं जिनके मूल में तृष्णा। 3. **दुःख निरोध** – दुःख का निवारण संभव है। इसके लिए तृष्णा का उन्मूलन आवश्यक है। 4. **दुःख-निरोध गामिनी प्रतिपदा-** दुःख के मूल अविद्या के विनाश के उपाय अष्टांगिक मार्ग है। अष्टांगिक मार्ग - सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति एवं सम्यक समाधि।

239. गौतम बुद्ध के बारे में निम्न में से क्या सत्य है–

1. वे कर्म में विश्वास करते थे
2. आत्मा का शरीर में परिवर्तन मानते थे
3. निर्वाण प्राप्ति में विश्वास करते थे
4. ईश्वर की सत्ता में विश्वास करते थे

निम्न कूटों में से सही उत्तर चुनिये–

(a) केवल 1, 2, 3 सही है (b) 1, 2 सही है
(c) केवल 1 सही है (d) सभी चारों सही हैं

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1992**

व्याख्या : महात्मा बुद्ध कर्म में विश्वास करते थे, वे आत्मा में विश्वास न करते हुए भी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। निर्वाण प्राप्ति तो बौद्ध धर्म का अंतिम परम लक्ष्य है।

240. बौद्ध धर्म के विषय में कौन-से कथन सही हैं?

1. उसने वर्ण एवं जाति को अस्वीकार नहीं किया
2. उसने ब्राह्मण वर्ग की सर्वोच्च सामाजिक कोटि को चुनौती दी
3. उसने कुछ शिल्पों को निम्न माना

कूट :

(a) 1 तथा 2 (b) 2 तथा 3
(c) 1, 2 तथा 3 (d) उपरोक्त में कोई नहीं

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1998**

व्याख्या : (1) गौतम बुद्ध ने मध्यम मार्ग का उपदेश दिया। वे मोक्ष के लिए कठोर साधना एवं कायाक्लेश में विश्वास नहीं करते थे। (2) बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है।, (3) बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण इस जीवन में भी प्राप्त हो सकता। (4) गौतम बुद्ध ने जाति-पांति जैसी सामाजिक कुरीतियों, का प्रबल विरोध किया, और ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को मानने से इन्कार किया।

241. बौद्ध दर्शन के अनुसार विचार कीजिए –

कथन (A) : पुनर्जन्म नहीं होता है।
कारण (R) : आत्मा की सत्ता नहीं है।

निम्नलिखित कूट से अपना उत्तर चुनिए –

कूट :

(a) A तथा R दोनों सही हैं तथा R सही व्याख्या है A की
(b) A तथा R दोनों सही हैं किन्तु R सही व्याख्या नहीं है A की
(c) A सही है किन्तु R गलत है
(d) A गलत है किन्तु R सही है

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 2006**
UPPCS (Pre) Opt. History, 1997

व्याख्या : बौद्ध दर्शन पुर्नजन्म में विश्वास करता है क्योंकि बौद्ध धर्म में मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है–निर्वाण प्राप्ति। निर्वाण का अर्थ है दीपक का बुझ जाना अर्थात जीवन मरण के चक्र से मुक्त हो जाना यह निर्वाण इसी जन्म से प्राप्त हो सकता है, किन्तु महापरिनिर्वाण मृत्यु के बाद ही सम्भव है। अतः वह पुनर्जन्म को माना, परन्तु आत्मा की सत्ता नहीं माना क्योंकि आत्मा अमर होती है। किन्तु आत्मा की सत्ता (अमरता) एवं ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता। ज्ञातव्य है कि बौद् धर्म पर 'सांख्य दर्शन' का प्रभाव है।

242. निम्नलिखित वक्तव्यों पर विचार करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें –

कथन (A) : कुशीनगर मल्ल गणराज्य की राजधानी थी।
कारण (R) : महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण कुशीनगर में हुआ था।

कूट :

(a) (A) एवं (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) (A) एवं (R) दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, परन्तु (R) सही है।

उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. 2004**
UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2004
UPPCS (Pre) G.S. 2003

व्याख्या : गौतम बुद्ध धर्म का प्रचार करते मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे। यहाँ चुन्द नामक लुहार की आम्रवाटिका में ठहरे। उसने बुद्ध को भोजन कराया जिससे उन्हें रक्तातिसार हो गया और भयानक पीड़ा उत्पन्न हुई। इसी वेदना को सहन करते हुए वे कुशीनारा पहुँचे। यहीं 483 ईसा पूर्व में 80 वर्ष की आयु में उन्होंने शरीर त्याग दिया। इसे बौद्ध ग्रन्थों में 'महापरिनिर्वाण' कहा गया है। मल्लों ने अत्यंत सम्मानपूर्वक उनका अंत्येष्टि संस्कार किया। मल्लों की दूसरी राजधानी पावापुरी भी थी।

243. निम्नलिखित वक्तव्यों पर विचार कीजिए तथा नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

कथन (A) : सर्वाधिक वर्षा वासों में गौतम बुद्ध श्रावस्ती में रहे।
कारण (R) : श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित गौतम बुद्ध की आयु के थे।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, किन्तु (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है
(c) (A) सही है, किन्तु (R) गलत है
(d) (A) गलत है, किन्तु (R) सही है

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : बौद्ध धर्म का सबसे अधिक प्रचार कोशल राज्य में हुआ। यहाँ बुद्ध ने 21 वर्षा वास किये। यहाँ अनाथपिण्डक नामक एक अत्यन्त धनी व्यापारी ने उनकी शिष्यता ग्रहण की तथा संघ के लिए जेतवन विहार को, 18 करोड़ स्वर्ण मुद्राओं में राजकुमार जेत से खरीदकर प्रदान किया है।

कोशल नरेश प्रसेनजित एवं अवन्ती नरेश प्रद्योत गौतमबुद्ध के समकालीन थे। प्रसेनजित ने अपने परिवार के साथ बुद्ध की शिष्यता ग्रहण की थी तथा संघ के लिए 'पुब्बाराम' नामक विहार बनवाया था। कोशल राज्य में बुद्ध के सर्वाधिक अनुयायी बन गये थे। अतः दोनों कथन सही हैं किन्तु कथन A की व्याख्या R नहीं है।

244. बुद्ध का जन्म हुआ था-

(a) वैशाली में (b) लुम्बिनी में
(c) कपिलवस्तु में (d) पाटलिपुत्र में

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2002**

व्याख्या : ईसा पूर्व छठी शताब्दी के नास्तिक सम्प्रदाय के आचार्यों में महात्मा गौतम बुद्ध का नाम सर्वप्रमुख है। इनका जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी वन (आधुनिक रुम्मिनदेई) में हुआ था। इसका समर्थन अशोक के अभिलेख से होता है। उनके पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान थे। उनकी माता का नाम महामाया था जो कोलिय गणराज्य की कन्या थी तथा इनका लालन-पालन करने वाली विमाता प्रजापति गौतमी थी।

245. गौतम बुद्ध की माँ किस वंश से सम्बन्धित थी?

(a) शाक्य वंश (b) माया वंश
(c) लिच्छवि वंश (d) कोलिय वंश

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

246. लुम्बिनी गौतम बुद्ध का जन्म स्थान था, इसका समर्थन किसके एक अभिलेख से होता है?

(a) अशोक (b) कनिष्क
(c) हर्ष (d) धर्मपाल

उत्तर-(a) **UPPCS (Main) G.S. I[st] 2007**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

247. बुद्ध की मृत्यु जहाँ हुई थी वह स्थान अब कहाँ है?

(a) मध्य प्रदेश (b) हिमांचल प्रदेश
(c) बिहार (d) उत्तर प्रदेश

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) I[st] GS, 2015**
UPPCS (Pre) G.S. 2011

व्याख्या : गौतम बुद्ध की मृत्यु उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले से 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कुशीनगर में हुई थी। इस स्थान को कुशीनारा और कुशावती नाम से भी जानते हैं। यहाँ कुशीनारा के मल्लों का राज्य था। गौतम बुद्ध की मृत्यु 483 ई. पू. में 80 वर्ष की अवस्था में हुई थी। अशोक ने इस पवित्र स्थान की यात्रा भी की थी तथा यहीं पर उसने एक स्तूप का निर्माण भी करवाया था। यह आज भी बौद्ध तीर्थयात्रियों के एक प्रसिद्ध केंद्र के रूप में विख्यात है। बिहार के बोधगया में बुद्ध ने अपने ज्ञान की प्राप्ति की थी जबकि मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के साँची तथा सतना जिले के भरहुत में उनकी मृत्यु से प्राप्त कुछ अवशेषों पर दो स्तूपों का निर्माण करवाया गया था।

248. महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण किसके गणतंत्र में हुआ था?

(a) मल्लों के (b) लिच्छवियों के
(c) शाक्यों के (d) पालों के

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2005**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

249. बुद्ध के महापरिनिर्वाण की तिथि लगभग थी–

(a) 370 ई.पू. (b) 400 ई.पू.
(c) 483 ई.पू. (d) 563 ई.पू.

उत्तर-(c) **UPPSC Asst. Forest Conservator Exam. 2013**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

250. सारनाथ में अपना प्रथम प्रवचन किसने दिया–

(a) महावीर (b) शंकराचार्य
(c) महात्मा बुद्ध (d) गुरु नानक

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1993**
UPPCS (Mains) G.S. Ist 2004
UP Lower (Pre) 2015
UP Lower (Pre) Spl. 2008

व्याख्या : बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध का जन्म लुम्बिनी में हुआ था। पालन-पोषण मौसी प्रजापति गौतमी ने किया था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इन्होंने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग (महाभिनिष्क्रमण) दिया। बैशाख पूर्णिमा के दिन इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था। बुद्ध ने पहला उपदेश ऋषिपत्तनम् (सारनाथ) में दिया है। इसे धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है। भारतीय कला में बुद्ध के प्रथम उपदेश को 'मृग सहित चक्र' के द्वारा चित्रण हुआ है। बुद्ध के उपदेश मुख्यतया आचरण की शुद्धता व पवित्रता से संबंधित है।

251. बुद्ध के जीवन की किस घटना को 'महाभिनिष्क्रमण' के रूप में जाना जाता है?

(a) उनका महापरिनिर्वाण (b) उनका जन्म
(c) उनका गृहत्याग (d) उनका प्रबोधन

उत्तर-**(c)** **UPPCS (Pre) I[st] GS, 2014**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

252. बुद्ध के उपदेश किससे सम्बन्धित हैं–

(a) आत्मा सम्बन्धी विवाद (b) ब्रह्मचर्य
(c) धार्मिक कर्मकाण्ड (d) आचरण की शुद्धता व पवित्रता

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 1991**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

253. भारतीय कला में बुद्ध के जीवन की किस घटना का चित्रण 'मृग सहित चक्र' द्वारा हुआ है?

(a) महाभिनिष्क्रमण (b) संबोधि
(c) प्रथम उपदेश (d) निर्वाण

उत्तर-(c) **UPPCS (Mains) G.S. 2002**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

254. बुद्ध ने अपना अन्तिम उपदेश निम्नलिखित में से किस शिष्य को दिया?

(a) आनन्द (b) सारिपुत्र (c) सुभद्र (d) उपालि

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**
UPPCS (Pre) G.S. 2013, 2011
UPPSC RO/ARO (Pre) Exam., 2016
UPPCS (J) 2015

व्याख्या : 80 वर्ष की जर्जरित अवस्था में हिरण्यवती नदी पार करके बुद्ध कुशीनारा पहुँचे। जहाँ अस्वस्थता की स्थिति में उन्होंने आनंद से कहा कि ''आओ मेरे लिए उत्तर की ओर सिर करके मंच तैयार करो, मैं क्लांत हूँ, लेटूँगा।'' भिक्षु उपवाण ने पंखा झलना शुरू किया। उसी समय बुद्ध ने आनन्द से कहा कि वे कुशीनारा के मल्लों को हमारे अंतिम समय की सूचना दें। सूचना मिलते ही वहाँ मल्ल लोग इकट्ठा होने लगे। उसी समय कुशीनारा के श्रमण सुभद्र ने बुद्ध द्वारा अभिसिक्त होकर अंतिम उपदेश प्राप्त किया। महात्मा बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश (21) श्रावस्ती में दिया था।

255. बोधगया में महात्मा बुद्ध ने दो बनजारों को उपदेश देकर अपना उपासक बना लिया था। निम्नलिखित में से वे दो बनजारे कौन थे?

(a) मल्लिक और तपस्सु (b) मल्लिक और देवदास
(c) तपस्सु और शूलक (d) शूलक और देवदास

उत्तर-(a) **UP UDA/LDA Spl.-2006**

व्याख्या : बोध-प्राप्ति का स्थान होने के कारण गया 'बोध गया' के नाम से जाना गया तथा जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ वह 'बोधिवृक्ष' कहा गया। यहीं उन्होंने विभिन्न कष्टों और दुःखों से पीड़ित जनता को ज्ञान और सत्य की शिक्षा देने का निश्चय किया। गया में उन्होंने तपस्सु और मल्लिक नामक निम्न जातीय दो बंजारों को उपदेश देकर अपना अनुयायी बना लिया।

256. बौद्ध संघ में भिक्षुणी के रूप में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति बुद्ध द्वारा दी गयी थी

(a) श्रावस्ती में (b) वैशाली में (c) राजगृह में (d) कुशीनगर में

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**
UPPCS (Pre) Opt. History 2001, 2003
UPPCS (Pre) G.S. 2010

व्याख्याः गौतम बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर वैशाली में स्त्रियों को बौद्ध संघ में भिक्षुणी के रूप में प्रवेश की अनुमति प्रदान की थी। बौद्ध संघ में सर्वप्रथम शामिल होने वाली स्त्री महाप्रजापति गौतमी थी।

257. निम्नलिखित में से कौन बुद्ध के जीवनकाल में ही संघ प्रमुख होना चाहता था?

(a) देवदत्त (b) महाकस्सप
(c) उपालि (d) आनन्द

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1999**

व्याख्या : देवदत्त महात्मा बुद्ध के जीवन काल में ही संघ प्रमुख बनना चाहता था। जनश्रुतियों एवं अन्य साक्ष्यों के अनुसार देवदत्त महात्मा बुद्ध का चचेरा भाई था। वह पहले से ही बुद्ध से ईर्ष्या रखता था। उपालि तथा आनन्द तो बुद्ध के प्रिय शिष्य थे। महाकस्सप ने प्रथम बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की थी। आनन्द के आग्रह पर ही बुद्ध ने संघ में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति दी।

258. निम्नलिखित में से कौन सा बौद्ध पवित्र स्थल निरंजना नदी पर स्थित था?

(a) बोध गया (b) कुशीनगर
(c) लुम्बिनी (d) ऋषिपत्तन

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2012**
UP APO (2011)

व्याख्या : उरुवेला में सिद्धार्थ को कौण्डिन्य, वप्पा, भादिया, महानामा एवं अस्सागी नामक पाँच साधक मिले। बिना अन्न-जल ग्रहण किए हुए 6 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख की पूर्णिमा की रात को बोधगया में निरंजना नदी के किनारे, पीपल के वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान-प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ बुद्ध के नाम से जाने गए। वह स्थान बोधगया कहलाया। बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपतनम्) में दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में धर्मचक्रप्रवर्त्तन कहा गया है। बौद्ध धर्म का पवित्र स्थल बोध गया निरंजना नदी के किनारे अवस्थित था।

259. निम्नलिखित में से किसे 'एशिया के ज्योति पुंज' के तौर पर जाना जाता है?

(a) गौतम बुद्ध को (b) महात्मा गाँधी को
(c) महावीर स्वामी को (d) स्वामी विवेकानन्द को

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2010**

व्याख्या : एशिया के ज्योतिपुंज (Light of Asia) के रूप में महात्मा बुद्ध का नाम लिया जाता है। ये बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। इन्होंने एक महान धर्म की स्थापना की जिसे बौद्ध धर्म कहा जाता है। जिसका प्रचार-प्रसार भारत वर्ष में ही नहीं अपितु दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में हुआ। इनके धर्म की प्रसार की महत्ता को देखते हुए इन्हें पाश्चात्य विद्वानों ने 'लाइट ऑफ एशिया' कहा है। बुद्ध अपने जीवन काल में उज्जयिनी कभी नहीं जा सके। बुद्ध कौशाम्बी में उदयन के काल में गए थे। बुद्ध के समान आयु का शासक कोशल का प्रसेनजीत था।

260. निम्नलिखित में से किस स्थान की यात्रा बुद्ध ने नहीं की थी?

(a) वैशाली (b) कपिलवस्तु
(c) कौशाम्बी (d) उज्जयिनी

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

261. निम्नलिखित समकालीन राजाओं में गौतम बुद्ध की समान आयु का कौन था?

(a) बिम्बसार (b) प्रद्योत
(c) प्रसेनजित (d) उदयन

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

262. बुद्ध, कौशाम्बी किसके राज्य-काल में आए थे?

(a) शतानीक (b) उदयन (c) बोधि (d) निकक्षु

उत्तर-(b) **UP UDA/LDA (Pre) 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

263. गौतम बुद्ध के समय का प्रसिद्ध वैद्य जीवक किसके दरबार से सम्बन्धित था?

(a) बिम्बिसार (b) चण्ड प्रद्योत (c) प्रसेनजित (d) उदयन

उत्तर-(a) **UP UDA/LDA (Pre) 2006**

व्याख्या : गौतम बुद्ध के समय का प्रसिद्ध वैद्य जीवक बिम्बिसार के दरबार में था। जीवक सलावती नामक गणिका का पुत्र था। ज्ञातव्य है कि मगध का प्रथम राजवंश हर्यंक कुल के शासन से आरम्भ होता है। इस वंश का प्रथम ज्ञात शासक बिम्बिसार था। अवन्तिराज चंड प्रद्योत से उसका युद्ध हुआ था लेकिन बाद में मैत्री सम्बन्ध हो जाने से उसने अपने राजवैद्य जीवक को चंड प्रद्योत के राज्य में चिकित्सार्थ भेजा था।

264. 'संसार अस्थिर और क्षणिक है' का निम्न में किससे संबंध है–

(a) बौद्ध (b) जैन (c) गीता (d) वेदान्त

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1992**

व्याख्या : सर्वप्रथम महात्मा बुद्ध ने संसार को अस्थिर और क्षणिक कहा था। जिसे क्षणभंगवाद के नाम से जाना जाता है। प्रतीत्य समुत्पाद ही बुद्ध के उपदेशों का सार एवं उनकी सम्पूर्ण शिक्षाओं का आधार स्तम्भ है। प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है कि संसार की सभी वस्तुयें कार्य और कारण पर निर्भर करती हैं। प्रतीत्य (किसी वस्तु के होने पर) समुत्पाद (किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति), प्रतीत्यसमुत्पाद का यही दर्शन है। बौद्ध धर्म के 4 आर्य सत्यों में द्वितीय आर्य सत्य प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत की व्याख्या करता है। चतुर्थ आर्य सत्य के अन्तर्गत अण्टांगिक मार्ग की व्यवस्था की गयी है जिसे बौद्ध दर्शन में कल्याण मित्र कहा गया है।

265. बौद्ध दर्शन में कल्याण मित्र क्या है?

(a) प्रबन्धन (b) धर्मचक्र (c) अष्टांगिक मार्ग (d) त्रिरत्न

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

266. बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्यों में से कौन एक 'प्रतीत्य समुत्पाद' के सिद्धान्त की व्याख्या करता है?

(a) प्रथम (b) द्वितीय (c) तृतीय (d) चतुर्थ

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

267. महायान बौद्ध धर्म में किसको भावी बुद्ध माना गया है?

(a) क्रकुचन्द (b) अमिताभ (c) मैत्रेय (d) कनक मुनि

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : पालि साहित्य में 'मैत्रेय' नामक बोधिसत्व को भावी बुद्ध कहा गया है। इस स्तर पर पहुँचने वाला साधक ज्ञान प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा रखता है। इस अवस्था का साधक सर्वदा दूसरों का कल्याण करने तथा दूसरों के दुःख दूर करने के लिए तत्पर रहता है। वह अनेक जन्मों में अर्जित पुण्य और ज्ञान के

माध्यम से अपना परमभविक रूप-काम प्राप्त करता है तथा सम्यक संबुद्ध होकर अपने विशिष्ट ज्ञान बल, महाकरुणा आदि द्वारा 'अर्हता और 'प्रत्येक बुद्ध' से पूर्णतः विलग होता है। अतः मैत्रेय नामक बोधिसत्व की अवस्था साधक की उच्चतम एवं अन्यतम अवस्था है जहाँ पहुँचकर वह परहित की भावना के ओत-प्रोत होता है। महायान सम्प्रदाय के साधक ही इस अवस्था तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करते हैं जिन्हें अन्त में 'बुद्धत्व' की प्राप्ति होती है।

268. निम्नलिखित में से कौन माध्यमिक दर्शन का प्रतिपादक था?

(a) अश्वघोष (b) वसुमित्र
(c) मोग्गलिपुत्त तिस्स (d) नागार्जुन

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006, 1997**
UPPCS (Pre) G.S. 1998

व्याख्या : माध्यमिक (शून्यवाद) दर्शन के प्रवर्तक नागार्जुन थे जिनकी प्रसिद्ध रचना 'माध्यमिक कारिका' है। इसे सापेक्षवाद भी कहा जाता है। जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु किसी न किसी कारण से उत्पन्न हुई है और वह उस पर निर्भर है। कनिष्क के समकालीन अश्वघोष एक प्रतिभासम्पन्न कवि, नाटककार, संगीतकार, विद्वान एवं तर्कशास्त्री थे। उन्होंने बुद्ध के जीवन चरित्र का वर्णन करने वाले प्रथम ग्रंथ 'बुद्धचरित' की एक महाकाव्य के रुप में रचना की। उन्होंने बुद्ध का यशगान करते एवं वीणा बजाते हुए देश के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों की यात्रा की एवं बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

269. निम्न विद्वानों में से किसने तिब्बत में बौद्ध धर्म के वज्रयान सम्प्रदाय की स्थापना की?

(a) शान्तरक्षित (b) पद्मसम्भव
(c) धर्मरक्ष (d) कुमारजीव

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006, 2003**

व्याख्या : तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रवेश चौथी सदी में हुआ था। 8वीं सदी में तिब्बत नरेश ने शांतरक्षित नामक भारतीय आचार्य को तिब्बत आने का निमंत्रण दिया। आचार्य पद्मसंभव के सहयोग से शान्तरक्षित ने तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। शान्तरक्षित सर्वास्तिवादी सम्प्रदाय के आचार्य थे। उन्होंने अपने सहयोग के लिए 12 अन्य पण्डितों को भारत से बुलाया और इनके प्रयत्न से तिब्बती लोग बौद्ध भिक्षु बनने लगे। पद्मसंभव तांत्रिक अनुष्ठानों में विश्वास करता था, उसके प्रयत्नों से तिब्बत में व्रजयान का प्रवेश हुआ। वज्रयान बौद्ध धर्म में बोधिसत्व की पत्नी को तारा के नाम से जाना जाता है।

270. बौद्ध धर्म में ''त्रिरत्न'' क्या इंगित करता है?

(a) सत्य, अहिंसा, दया
(b) प्रेम, करुणा, क्षमा
(c) बुद्ध, धम्म, संघ
(d) विनय पिटक, सुत्त पिटक, अभिधम्म पिटक

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. Spl. 2004**
UPPSC RO/ARO (Pre) 2017

व्याख्या : त्रिरत्न (तीन रत्न) बौद्ध धर्म के सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इन त्रिरत्नों पर ही बौद्ध धर्म आधारित है। त्रिरत्न – बुद्ध, धम्म, संघ बुद्ध- बुद्ध का अर्थ है जागृत एवं अनंत ज्ञानी मनुष्य, जिसने खुद के प्रयासों से बुद्धत्व प्राप्त किया। बुद्ध शाक्यमुनि तथागत गौतम बुद्ध है। धम्म- बुद्ध की शिक्षाओं को धम्म कहते हैं। संपूर्ण बौद्ध धर्म 'धम्म' पर आधारित हैं। संघ-बौद्ध धर्म में बौद्ध भिक्षुओं और उपासकों के संघटन को संघ कहते हैं। धम्म प्रचार के लिए संघ का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

271. प्रथम बौद्ध समिति का आयोजन हुआ था –

(a) अनिरुद्ध के शासनकाल में (b) अजातशत्रु के शासनकाल में
(c) बिम्बिसार के शासनकाल में (d) उदयभद्र के शासनकाल में

उत्तर-(b) **UP RO/ARO (Pre) 2014**
UP RO/ARO (Mains) 2014
UP UDA/LDA (Mains) 2010
UPPCS (Mains) G.S. I[st] Paper 2010
UP Lower (Pre) 2002
UPPCS (Pre) G.S. 2000
UPPCS (Pre) Opt. History 2009, 2001, 1998, 1997

व्याख्या : प्रथम बौद्ध संगीति : स्थान - राजगृह (सप्तपर्णी गुफा), समय - 483 ई. पू., अध्यक्ष - महाकस्सप, शासनकाल - अजातशत्रु (हर्यंक वंश), उद्देश्य - बुद्ध के उपदेशों को दो पिटकों विनय पिटक तथा सुत्त पिटक में संकलित किया गया। **द्वितीय बौद्ध संगीति :** स्थान - वैशाली, समय - 383 ई.पू., अध्यक्ष - सब्बकामी (सर्वकामनी), शासनकाल-कालाशोक (शिशुनाग वंश), उद्देश्य - अनुशासन को लेकर मतभेद के समाधान के लिए बौद्ध धर्म स्थाविर एवं महासंघिक दो भागों में बँट गया। **तृतीय बौद्ध संगीति :** स्थान - पाटलिपुत्र, समय - 251 ई.पू, अध्यक्ष - मोग्गलिपुत्ततिस्स, शासनकाल - अशोक (मौर्यवंश), उद्देश्य - संघ भेद के विरुद्ध कठोर नियमों का प्रतिपादन करके बौद्ध धर्म को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयत्न किया गया। धर्म ग्रन्थों का अंतिम रूप से सम्पादन किया गया तथा तीसरा पिटक अभिधम्मपिटक जोड़ा गया। **चतुर्थ बौद्ध संगीति :** स्थान - कश्मीर के कुण्डलवन, समय - लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी, अध्यक्ष - वसुमित्र एवं अश्वघोष (उपाध्यक्ष), शासनकाल - कनिष्क (कुषाण वंश), उद्देश्य – बौद्ध धर्म का दो सम्प्रदायों हीनयान तथा महायान में विभाजन।

272. महावंश के अनुसार तृतीय बौद्ध संगीति के पश्चात् हिमालय क्षेत्र में कौन गया था?

(a) मज्झिम (b) रक्षित (c) धर्मरक्षित (d) महादेव

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : सिंहली अनुश्रुतियों दीपवंश तथा महावंश के अनुसार अशोक के राज्य-काल में पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की तृतीय संगीति हुई। इसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्ततिस्य ने की थी। इस संगीति के पश्चात् भिन्न-भिन्न देशों में बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ भिक्षु भेजे गये जिनके नाम महावंश में इस प्रकार प्राप्त होते हैं-

धर्म प्रचारक	देश
1. मज्झन्तिक	1. कश्मीर तथा गांधार
2. महारक्षित	2. यवन देश
3. मज्झिम	3. हिमालय देश
4. धर्म रक्षित	4. अपरान्तक
5. महाधर्मरक्षित	5. महाराष्ट्र
6. महादेव	6. महिषमण्डल (मैसूर या मान्धाता)
7. रक्षित	7. बनवासी (उत्तरी कन्नड़)
8. सोन तथा उत्तर	8. सुवर्ण भूमि
9. महेन्द्र तथा संघमित्रा	9. लंका

273. निम्नलिखित में से किस स्रोत में अशोक के राज्यकाल में तृतीय बौद्ध संगीति होने का उल्लेख मिलता है?

1. अशोक के अभिलेख 2. दीपवंश
3. महावंश 4. दिव्यावदान

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–

(a) 1 एवं 2 (b) 2 एवं 3
(c) 3 एवं 4 (d) 1 एवं 4

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1999**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

274.निम्नलिखित में से किस बौद्ध ग्रन्थ में संघ जीवन के नियम प्राप्त होते हैं?

(a) दीघ निकाय (b) विनय पिटक
(c) अभिधम्म पिटक (d) विभाशा शास्त्र

उत्तर-(b) **UP Lower (Pre) 2003-04**
UPPCS (Pre) Opt. History, 1997
UPPCS (Pre) G.S. 1996

व्याख्या : बौद्ध धर्म का साहित्य तीन पिटारियों अथवा पिटकों में प्राप्त होने के कारण 'त्रिपिटक' कहा जाता है। यह **पालि भाषा** में रचित है। यह तीनों पिटक हैं-(1) **विनय पिटक,** (2) **सुत्त पिटक,** तथा (3) **अभिधम्म पिटक**। इनका संकलन विभिन्न बौद्ध संगतियों में हुआ है। विनय पिटक में संघ सम्बन्धी नियम तथा दैनिक जीवन सम्बन्धी आचार-विचारों, विधिनिषेधों आदि का संग्रह है। इसके निम्न भाग हैं-(i) पातिमोक्ख (प्रतिभोक्ष), (ii) सुत्तविभङ्ग, (iii) खुद्दक, तथा (iv) परिवार। अभिधम्म पिटक में दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह है। सुत्त पिटक में बौद्धधर्म के सिद्धान्त तथा उपदेशों का संग्रह है।

275.मिलिन्दपन्हो–

(a) संस्कृत नाटक है (b) जैन वृतान्त है
(c) पालि ग्रन्थ है (d) फारसी महाकाव्य है

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1996**
UP Lower (Pre) 2002

व्याख्या : 'मिलिन्दपन्हो' एक पालि ग्रन्थ है। इस ग्रंथ में यूनानी शासक **मिनान्डर एवं प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु नागसेन** के बीच वार्तालाप वर्णित है। इस ग्रन्थ में महान बौद्ध भिक्षु नागसेन राजा मिलिन्द (मिनान्डर) के अनेक गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर देते हैं तथा अंततोगत्वा वह उनके प्रभाव से बौद्ध हो जाता है। यह कहा जाता है कि मिनान्डर अपने पुत्र के पक्ष में सिंहासन त्याग कर न केवल भिक्षु अपितु 'अर्हत' बन गया है। इस पालि ग्रंथ में ईसा की प्रथम दो शताब्दियों के भारतीय जनजीवन के विषय में जानकारी मिलती है। बौद्ध ग्रंथ ललित विस्तर में अनेक प्राचीन लिपियों की सूची प्राप्त होती है। बावेरू जातक, दशरथ जातक, शिवि जातक बौद्ध रचना है, जबकि यवन जातक बौद्ध रचना नहीं है।

276.निम्नलिखित में से कौन सी बौद्ध रचना नहीं है?

(a) बावेरु जातक (b) दशरथ जातक
(c) शिबि जातक (d) यवन जातक

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

277.निम्नलिखित बौद्ध ग्रंथों में से किसमें अनेक प्राचीन लिपियों की सूची प्राप्त होती है?

(a) दिव्यावदान (b) ललित विस्तर
(c) महावंश (d) मिलिन्दपन्हो

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

278. 'विसुद्दिमग्ग' नामक पुस्तक किस सम्प्रदाय से सम्बन्धित है?

(a) हीनयान (b) महायान
(c) वज्रयान (d) दिगम्बर

उत्तर-(a) **(UP UDA/LDA Spl. - 2006)**

व्याख्या : यह हीनयान सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसकी रचना प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक बुद्धघोष ने की थी यह बौद्ध सिद्धान्तों (त्रिपिटकोत्तर साहित्य) पर आधारित एक अत्यन्त प्रमाणिक दार्शनिक ग्रन्थ है।

279. निम्नलिखित युग्मों में कौन सही सुमेलित नहीं है?

(a) शाक्य — कपिलवस्तु (b) कोलिय — रामग्राम
(c) कालाम — अलकप्प (d) मल्ल — कुशीनगर

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : बुद्ध काल में गंगाघाटी में कई गणराज्यों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं– (1) कपिलवस्तु के शाक्य, (2) सुमसुमार पर्वत के भग्ग, (3) अलकप्प के बुलि, (4) केसपुत्त के कलाम, (5) रामग्राम के कोलिय, (6) कुशीनारा के मल्ल, (7) पावा के मल्ल, (8) पिप्पलिवन के मोरिय, (9) वैशाली के लिच्छवि, (10) मिथिला के विदेह।

280.बौद्ध तथा जैन दोनों ही धर्म विश्वास करते हैं कि –

(a) कर्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त सही हैं
(b) मृत्यु के पश्चात् ही मोक्ष सम्भव है
(c) स्त्री तथा पुरुष दोनों ही मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं
(d) जीवन में मध्यम मार्ग सर्वश्रेष्ठ है

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1996**

व्याख्या : जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही कर्म तथा पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। इसके अलावा बौद्ध धर्म मध्यम मार्ग का उपदेश देता है तो जैन धर्म मोक्ष के लिए घोर तपस्या तथा शरीर त्याग का आदेश देता है। बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता था वही महावीर आत्मा में विश्वास करते थे। कर्मवाद तथा मोक्ष सम्बन्धी दोनों धर्मों के विचार भिन्न–भिन्न हैं। जैन धर्म कर्म को एक भौतिक तत्व के रूप में मानता है जबकि बौद्ध धर्म इच्छा द्वारा किये गये कार्य को ही कर्म कहता है। इसी प्रकार जैन मत के अनुसार मोक्ष का अर्थ शरीर विनाश है जबकि बौद्ध मत के अनुसार निर्वाण इस जीवन में भी प्राप्त हो सकता है। स्वयं बुद्ध का जीवन इसका प्रमाण है। गौतम बुद्ध ने जाति–पाँति जैसी सामाजिक कुरीतियों का जितने प्रबल शब्दों में खण्डन किया, महावीर ने नहीं किया। सामाजिक विषयों में महावीर के विचार ब्राह्मणों से बहुत मिलते–जुलते थे। इस प्रकार देखा जाय तो ये दोनों धर्म वैदिक धर्म के सुधारवादी स्वरूप थे। उत्तर प्रदेश में बौद्ध और जैनियों दोनों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल कौशाम्बी है।

281.उत्तर प्रदेश में बौद्ध एवं जैनियों दोनों की प्रसिद्ध तीर्थस्थली है -

(a) सारनाथ (b) कौशाम्बी (c) कुशीनगर (d) देवीपाटन

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

282.बुद्ध की खड़ी प्रतिमा निम्न में से किस काल में बनाई गई–

(a) गुप्तकाल (b) कुषाणकाल
(c) मौर्यकाल (d) गुप्तोत्तर काल

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1992**

व्याख्या : कुषाण युग में ही मथुरा से बुद्ध एवं बोधिसत्व की खड़ी व बैठी मुद्रा में बनी हुई मूर्तियाँ मिलती है। अफगानिस्तान का बामियान भी कुछ समय पूर्व तक सर्वाधिक ऊँची बुद्ध प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध था। देश में संभवतः मूर्ति पूजा की नींव बौद्ध धर्म ने रखी थी।

283.अफगानिस्तान का बामियान प्रसिद्ध था –

(a) हिन्दू मंदिर के कारण (b) हाथी दाँत के काम हेतु
(c) स्वर्ण सिक्कों के टंकण हेतु (d) बुद्ध प्रतिमा के लिये

उत्तर-(d) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. I[st] Paper 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

284. देश में निम्न में से किसने मूर्ति-पूजा की नींव रखी थी?

(a) जैन धर्म ने (b) बौद्ध धर्म ने
(c) आजीविका ने (d) वैदिक धर्म ने

उत्तर-(b) **UP Lower (Pre) Spl. 2008**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

285. निम्नांकित कथनों पर विचार करें एवं 'चैत्य तथा विहार' में क्या अंतर है, इसे चुनें –

(a) विहार पूजास्थल होता है जबकि चैत्य बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है।
(b) चैत्य पूजा स्थल होता है जबकि विहार निवास स्थान होता है।
(c) दोनों में विशेषतः कोई अंतर नहीं है।
(d) विहार एवं चैत्य दोनों ही निवास स्थान के रूप में प्रयोग हो सकते हैं।

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2003**

व्याख्या : चैत्यगृहों के समीप ही भिक्षुओं के रहने के लिए आवास बनाये जाते थे जिन्हें 'विहार' कहा जाता था। चैत्यगृह वस्तुतः पूजास्थल होते थे। जबकि बिहार भिक्षुओं के निवास के लिए बनाए गए मठ या संघाराम होते थे।

286. कहाँ के स्तूप के उत्खनन में सारिपुत्र के अवशेष प्राप्त हुए थे?

(a) राजगृह (b) कुशीनगर (c) सांची (d) सारनाथ

उत्तर-(c) **UP UDA/LDA Spl. – 2006**
UPPCS (J) 2003

व्याख्या : साँची की पहाड़ी से प्राप्त तीन स्तूपों में क्रमशः प्रथम विशाल स्तूप या महास्तूप में भगवान बुद्ध के, द्वितीय से अशोक कालीन धर्म प्रचारकों के तथा तृतीय स्तूप में बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों सारिपुत्र तथा महामोदग्लायन के धातु अवशेष सुरक्षित हैं। सांची स्तूप स्थल का संबंध बुद्ध के जीवन के किसी घटना से नहीं रहा है। बुद्ध के पूर्व जीवन कथाओं का सर्वप्रथम अंकन भरहुत स्तूप में किया गया है।

287. वह स्तूप-स्थल, जिसका सम्बन्ध भगवान बुद्ध के जीवन की किसी घटना से नहीं रहा है, हैं-

(a) सारनाथ (b) सांची (c) बोधगया (d) कुशीनारा

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Spl. G.S. 2008**
UPPCS (Mains) G.S. Ist 2011
UPPCS (J) 2015

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

288. गौतम बुद्ध की पूर्व जीवन कथाओं का सर्वप्रथम अंकन कहाँ की कला में किया गया था?

(a) अशोक का सारनाथ स्तम्भ (b) भरहुत स्तूप
(c) अजन्ता की गुफायें (d) एलोरा की गुफायें

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

289. किस उत्खनन ने कपिलवस्तु के समीकरण का साक्ष्य प्रस्तुत किया है?

(a) अयोध्या (b) लुम्बिनी
(c) पिपरहवा (d) सोहगौरा

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर जिले में बर्डपुर कस्बे के पास एक गाँव है यहाँ नेपाल की सीमा से लगा हुआ पिपरहवा प्राचीन बौद्ध स्थल है। यहाँ से एक प्राचीनतम बौद्ध स्तूप तथा उसके भीतर रखी हुई बुद्ध काल की अस्थियों की मंजूषा मिली है यह पाषाण की है। ब्राह्मी लिपि में एक लेख पर जो उत्कीर्ण है उससे पता चलता है कि इसका निर्माण शाक्यों ने करवाया था। पिपरहवा बौद्ध स्तूप उन आठ मौलिक स्तूपों में से एक है जिसका निर्माण बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद करवाया गया था। शाक्यों ने उनकी शरीर धातु का एक भाग प्राप्त कर इसे बनवाया था। सम्प्रति स्तूप के अवशेष तथा मंजूषा लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित हैं कुछ विद्वानों के अनुसार मौर्य गणराज्य की राजधानी पिप्पलिवन भी इसी स्थान में स्थित है। आज कल इस स्थान को पिपरिया कहा जाता है।

290. निम्नलिखित में से किस राज-परिवार में महिलायें बौद्ध धर्म को प्रश्रय देती थी जबकि पुरुष प्रायः वैदिक धर्म का पालन करते थे?

(a) सातवाहन (b) इक्ष्वाकु
(c) गुप्त (d) वाकाटक

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**

व्याख्या : इक्ष्वाकु राजवंश में महिलाएँ बौद्ध धर्म को प्रश्रय देती थीं, जबकि पुरुष प्रायः वैदिक धर्म का पालन करते थे। इक्ष्वाकु राजवंश की महिलाओं ने बौद्ध धर्म की कई कलाकृतियाँ, स्तूप आदि का निर्माण कराया। नागार्जुनीकोण्डा का स्तूप इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण है।

291. तिब्बत में बौद्ध धर्म के सुधार में महती भूमिका निभाने वाले उपाध्याय अतीश किस विहार के प्रसिद्ध विद्वान थे?

(a) नालन्दा (b) विक्रमशिला
(c) सोमपुर (d) वल्लभी

उत्तर-(b) **UP UDA/LDA Spl. - 2006**

व्याख्या : तिब्बत में बौद्ध धर्म के सुधार हेतु एक प्रतिनिधि मण्डल भारत से आठवीं सदी में तिब्बत गया था, जिसका नेतृत्व विक्रमशिला विश्वविद्यालय के आचार्य अतीश ने किया था। उन्हें दीपंकर श्रीज्ञान के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार-प्रसार किया।

भगवत संप्रदाय एवं ब्राह्मण धर्म

292. 'भगवत गीता, मूलतः, महाभारत के किस पर्व का अंश हैं?

(a) अनुशासन पर्व (b) शान्ति पर्व
(c) भीष्म पर्व (d) द्रोण पर्व

UPPCS (J) 2022 (12-02-2023)

Ans. (c) : भगवत गीता मूलतः महाभारत के छठवें पर्व भीष्म पर्व का भाग है। यह महाभारत के युद्ध के समय भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश है। इसमें 18 अध्याय तथा 700 छन्द है। इसका प्रथम अंग्रेजी अनुवाद चार्ल्स विल्किंस ने 1785 ई. में लंदन में किया था। इसकी प्रस्तावना गवर्नर - जनरल वारेन हेस्टिंग ने लिखा था। गाँधी जी ने इसे 'विश्वमाता' कहकर सम्बोधित किया है। सर्वप्रथम इसी में अवतारवाद का विवरण प्राप्त होता है। इसमें ज्ञानयोग, भक्तियोग तथा कर्मयोग का अद्भुत समन्वय मिलता हैं।

293. भारतीय दर्शन की प्रारम्भिक शाखा कौन है–

(a) सांख्य (b) मीमांसा
(c) वैशेषिक (d) चार्वाक

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 2009, 2005, 2002, 1998**
UPPCS (Pre) G.S., 1994, 1991,
UP Lower (Pre) Spl, 2002
UPPCS (Mains) G.S. Ist 2010, 2005

व्याख्याः भारतीय दर्शन की प्रारम्भिक शाखा सांख्य थी। इसके प्रतिपादक कपिल थे। सांख्य दर्शन के अनुसार जगत की उत्पत्ति ईश्वर से नहीं हुई बल्कि प्रकृति से हुई है। चौथी शताब्दी के बाद इस दर्शन में सृष्टि का कारण प्रकृति और पुरुष दोनों को माना जाने लगा। यह दर्शन पहले भौतिकवादी था बाद में अध्यात्म की ओर मुड़ गया। इस दर्शन के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति यथार्थ ज्ञान से ही हो सकती है। अन्य दर्शनों के प्रतिपादक इस प्रकार हैं–

मीमांसा	–	जैमिनी
वैशेषिक	–	कणाद
योग	–	पतंजलि
न्याय	–	गौतम
वेदान्त	–	बादरायण

294. कर्म का सिद्धान्त सम्बन्धित है–

(a) न्याय से (b) मीमांसा से (c) वेदान्त से (d) वैशेषिक से

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या : कर्म का सिद्धांत मीमांसा से संबंधित है। वेद के दो भाग है- कर्मकांड तथा ज्ञानकांड। ब्राह्मण ग्रंथों में वैदिक कर्मकांडों का विशिष्ट विवरण है तथा उपनिषदों में ज्ञानकांड का प्रतिपादन हैं मीमांसा जिसे पूर्व मीमांसा भी कहा जाता है, का उद्देश्य वैदिक कर्मकांडों के संबंध में निर्णय देना है तथा उनकी दार्शनिक महत्ता का प्रतिपादन करना है।

295. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूची के नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची- I (दर्शन)		सूची-II (मोक्ष प्राप्त करने के तरीके)	
A.	न्याय दर्शन	1.	वास्तविक ज्ञान का अभिग्रहण
B.	मीमांसा दर्शन	2.	आत्मज्ञान
C.	सांख्य दर्शन	3.	वैदिक अनुष्ठान करना
D.	वेदान्त दर्शन	4.	तार्किक चिन्त

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	2	4	1	3	(b)	4	3	1	2
(c)	1	4	2	3	(d)	3	4	1	2

UPPSC BEO (Pre) 2019

Ans. (b) : सही सुमेलित है –

दर्शन	मोक्ष प्राप्त करने के तरीके
न्याय दर्शन	तार्किक चिंतन
मीमांसा दर्शन	वैदिक अनुष्ठान करना
सांख्य दर्शन	वास्तविक ज्ञान का अभिग्रहण
वेदांत दर्शन	आत्मज्ञान

296. आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ कहाँ स्थित है?

(a) श्रृंगेरी, द्वारका, जोशीमठ, प्रयाग
(b) द्वारका, जोशीमठ, प्रयाग, काँची
(c) जोशीमठ, द्वारका, पुरी, श्रृंगेरी
(d) पुरी, श्रृंगेरी, द्वारका, वाराणसी

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 2006**

व्याख्या : आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठ-

बद्रीनाथ (उत्तराखण्ड)	ज्योतिष्पीठ
पुरी (उड़ीसा)	गोवर्धनपीठ
द्वारका (गुजरात)	शारदापीठ
मैसूर (कर्नाटक)	श्रृंगेरीपीठ
कांची (तमिलनाडु)	कामकोटि पीठ (विवादास्पद)

नोट–कुछ इतिहासकारों का मत है कि कामकोटि पीठ (कांची) की स्थापना आदि शंकराचार्य ने ही की परन्तु यह मत विवादास्पद लगता है।

297. निम्नलिखित में से कौन विशिष्टाद्वैत से सम्बन्धित था?

(a) शंकर (b) माधव
(c) चैतन्य (d) रामानुज

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : भारतीय दार्शनिकों में शंकर के बाद रामानुज का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिन्होंने अपने विचारों के माध्यम से अद्वैतवाद का वैयक्तिक भक्तिवाद के साथ समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। उनका जन्म 1017 में हुआ तथा वे 120 वर्षों तक जीवित रहे। वे यामुनाचार्य के शिष्य थे। रामानुज उपनिषदों में अन्तर्निहित दार्शनिक विचारों की व्याख्या अपने ढंग से करते हैं तथा बताते हैं कि यद्यपि ईश्वर ही एकमात्र पारमार्थिक सत्ता है तथापि वह अचेतन प्रकृति तथा चेतन आत्मा से विशिष्ट अथवा समन्वित है। इस कारण उनका मत विशिष्टाद्वैत कहा जाता है। वैष्णव धर्म के सनक सम्प्रदाय का आचार्य निम्बार्क थे।

298. निम्नलिखित में से कौन वैष्णव धर्म के सनक सम्प्रदाय का आचार्य था?

(a) चैतन्य (b) निम्बार्क
(c) रामानुज (d) विट्ठल

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

299. निम्नलिखित में से किस देवता को कला में हल लिए प्रदर्शित किया गया है?

(a) कृष्ण (b) बलराम
(c) कार्तिकेय (d) मैत्रेय

उत्तर-(b) **UPPCS (Mains) G.S. Ist Paper 2007**

व्याख्या : बलराम को कला में हल लिए प्रदर्शित किया गया है। जैनों के मत में उनका सम्बन्ध तीर्थकर नेमिनाथ से है।

300. रामायण के किस कांड में राम और हनुमान की पहली भेंट का वर्णन है?

(a) किष्किन्धा कांड (b) सुंदर कांड
(c) बाल कांड (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर-(a) **UPPCS (Mains) G.S. Ist Paper 2004**

व्याख्या : आदिकवि महर्षि बाल्मीकि द्वारा विरचित 'रामायण' महाकाव्य में कुल सात कांड हैं, जिसमें सबसे बड़ा लंकाकाण्ड है। (1) बालकाण्ड, (2) अयोध्या काण्ड, (3) अरण्य काण्ड, (4) किष्किन्धा काण्ड, (5) सुन्दर काण्ड, (6) लंका काण्ड, (7) उत्तर काण्ड। रामायण को चर्तुविंशति साहस्त्री संहिता भी कहते हैं, क्योंकि इसमें 24 हजार श्लोक हैं। रामायण के **'किष्किन्धा काण्ड'** में भगवान राम तथा भक्त हनुमान की पहली भेंट होती है।

301. देवकी पुत्र कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख कहाँ मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद
(c) शतपथ ब्राह्मण (d) छान्दोग्य उपनिषद्

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008**

व्याख्या : भागवत धर्म के प्रवर्तक वृष्णी वंशी कृष्ण थे जिन्हें वसुदेव का पुत्र होने के कारण वासुदेव कृष्ण कहा जाता है। वे मूलतः मथुरा के निवासी थे। छान्दोग्य उपनिषद में उन्हें देवकी पुत्र कहा गया है तथा घोर अंगिरस का शिष्य कहा गया है। कृष्ण के अनुयायी उन्हें भगवत (पूज्य) कहते थे। महाभारत काल में कृष्ण का समीकरण विष्णु से किया गया। अतः वैष्णव धर्म से इनका जुड़ाव हो गया जो गुप्तकाल में सर्वाधिक पल्लवित हुआ। गुप्तों ने इसे अपना राजधर्म बनाया। भागवत सम्प्रदाय में भक्ति के 9 प्रकार बताए गए हैं।

302. वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम किसने प्रारम्भ की?

(a) भागवतों ने (b) वैदिक आर्यों ने
(c) तमिलों ने (d) आभीरों ने

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

303. भागवत् धर्म के प्रवर्तक कृष्ण के गुरू थे?

(a) घोर अंगिरस (b) वसुदेव
(c) संकर्षण (d) प्रद्युम्न

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2003**

व्याख्या : भागवत धर्म के प्रवर्तक कृष्ण के गुरु घोर अंगिरस थे।

304. भागवत सम्प्रदाय में भक्ति के प्रकारों की संख्या है

(a) 7 (b) 8 (c) 9 (d) 10

उत्तर-(c) **UP UDA/LDA (Pre) 2010**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

305. तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं' यह निम्न में से किस ग्रन्थ में कहा गया है–

(a) अष्टाध्यायी (b) महाभाष्य
(c) गीता (d) महाभारत

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1992**
UPPCS (Mains) G.S. Ist Paper, 2005

व्याख्या : गीता में यह कहा गया है कि ''कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन'' अर्थात् कर्म पर ही अधिकार है, कर्म फल पर नहीं। गीता महाभारत के भीष्मपर्व का अंश है। भगवत गीता में ही अवतारवाद की चर्चा की गयी है तथा मोक्ष के साधन के रूप में ज्ञान, कर्म व भक्ति को समान महत्व दिया गया है। भगवत गीता में ही अवतारवाद की चर्चा की गयी है तथा मोक्ष के साधन के रूप में ज्ञान, कर्म व भक्ति को समान महत्व दिया गया है।

306. निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ में 'अवतारवाद' की चर्चा है?

(a) ऐतरेय ब्राह्मण (b) कौशीतकी उपनिषद्
(c) मनुस्मृति (d) भगवद्गीता

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

307. हेलियोडोरस के बेसनगर अभिलेख में निम्नांकित का उल्लेख है–

(a) संकर्षण एवं वासुदेव (b) संकर्षण प्रद्युम्न एवं वासुदेव
(c) केवल वासुदेव (d) सभी पंचवीर

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1998**
UPPCS (Pre) Opt. History 2007
UPPCS (Mains) Spl. G.S. I[st] Paper 2008
UPPCS (Pre) Opt. History 2005, 1998, 1997

व्याख्या : शुंग शासक भागभद्र के शासनकाल के 14वें वर्ष तक्षशिला के यवन नरेश एन्टियालकीड्स का राजदूत हेलियोडोरस उसके विदिशा स्थित दरबार में उपस्थित हुआ था। उसने भागवत धर्म ग्रहण कर लिया तथा विदिशा (बेसनगर) में ई.पू. लगभग दूसरी सदी के मध्य कृष्ण (वासुदेव) की आराधना के लिए वेत्रवती नदी के तट पर एक स्तम्भ बनवाया। यह भागवत धर्म का ज्ञात सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है। मोरा अभिलेख में वृष्णी वंश के पाँच वीरों का उल्लेख हुआ है।

308. वृष्णी वंश के पाँच वीरों का उल्लेख निम्न में से किस अभिलेख में हुआ है?

(a) मोरा अभिलेख (b) धुसुण्डी अभिलेख
(c) हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख
(d) नयनिका का नानाघाट अभिलेख

उत्तर (a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

309. किसके सिक्कों पर संकर्षण एवं वासुदेव दोनों अंकित हैं?

(a) अगाथोक्लीज (b) हुविष्क
(c) चन्द्रगुप्त द्वितीय (d) भागभद्र

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 1998**
UPPCS (Mains) G.S.-I[st] 2017

व्याख्या : कृष्ण एवं बलराम का अंकन अगाथोक्लीज के सिक्के में मिलता है। कुषाण शासक हुविष्क ने ढेर सारे स्वर्ण एवं ताम्र सिक्कों का प्रचलन कराया। हुविष्क के सिक्कों में बुद्ध, शिव, वासुदेव विशाख, उमा आदि का अंकन है। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सोने, रजत, ताम्र मुद्रायें चलवायी, चन्द्रगुप्त II ने स्वर्ण मुद्राओं में, धनुर्धारी प्रकार, छत्रधारी प्रकार, पर्यङ्क प्रकार, सिंह निहन्ता प्रकार, अश्वारोही प्रकार की मुद्राओं का प्रचलन करवाया, इसके चाँदी के सिक्कों पर मुख भाग में राजा की आकृति एवं पृष्ठ भाग में गरुड़ की आकृति मिलती है।

310. निम्नलिखित में कौन एक अलवार सन्त थे?

(a) कल्लट (b) कुलशेखर (c) रामानुज (d) श्रीकण्ठ

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008**
UPPCS (Pre) Opt. History 1998

व्याख्या : दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म के सन्तों को 'अलवार' कहा जाता था। इनकी संख्या 12 बताई गई है। केरल के राजा कुलशेखर भी एक प्रमुख अलवार संत थे, इनके अलावा शेष 11 अलवार संत थे- (1) पोरगे अलवार, (2) भूत, (3) पेय, (4) पेरियालवार, (5) तिरुमलाई, (6) तिरुमंगई, (7) तिरुप्परण, (8) तोंडार, (9) नाम्मालवार, (10) मधुरकवि, (11) आंडाल या कोदई (एकमात्र महिला अलवार संत)

311. निम्नलिखित में कौन एक स्त्री अलवार सन्त है?

(a) तिरुपान (b) पेरुमाल (c) मधुर कवि (d) आण्डाल

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006, 1997**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

312. अर्द्धनारीश्वर मूर्ति में आधा शिव तथा आधा पार्वती प्रतीक हैः

(a) पुरुष और नारी का योग
(b) देवता और देवी का योग
(c) देव और उसकी शक्ति का योग
(d) उपरोक्त में से किसी का भी नहीं

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या : अर्द्धनारीश्वर के रूप में भी शिव की कल्पना की गई है तथा यह शिव और पार्वती के परस्पर तादात्म्य पर आधारित थी। हरिहर के रूप में शिव और विष्णु को साथ दर्शाया गया जो वैष्णव व शैव धर्म के समन्वय का प्रमाण था। ये गुप्तकालीन नयी साधना पद्धति के रूप थे।

313. पाशुपत सम्प्रदाय के प्रवर्तक लकुलीश कहाँ पैदा हुए थे?

(a) राजस्थान में (b) मध्य प्रदेश में
(c) गुजरात में (d) उत्तर प्रदेश में

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**
UPPCS (Pre) Opt. History 2006, 2003, 1997

व्याख्या: पाशुपत शैवों का सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है जिसकी उत्पत्ति ई.पूर्व. दूसरी शताब्दी में हुई थी। पुराणों के अनुसार इस सम्प्रदाय की स्थापना लकुलीश अथवा लकुली नामक ब्रह्मचारी ने की थी। इस सम्प्रदाय के अनुयायी लकुलीश को शिव का अवतार मानते हैं। लकुलीश का जन्म गुजरात में कायावरोहण नामक स्थान पर हुआ था। इन्होंने ईसा पूर्व दूसरी सदी में पाशुपत सम्प्रदाय की स्थापना की थी। इस सम्प्रदाय के लोग अपने हाथ में एक लकुट या दण्ड धारण करते थे, जिन्हें शिव का प्रतीक माना जाता था। इसका प्राचीनतम अंकन कुषाण शासक हुविष्क की एक मुद्रा पर मिलता है। शैव धर्म के मुख्यतया 4 सम्प्रदाय है– शैव,पाशुपत, कापालिक व कालमुख। दक्षिण भारत में शैव के अनुयायियों को नयनार कहा जाता है।

314. निम्नलिखित में से कौन शैव सम्प्रदाय है?

1. पाशुपत 2. जंगम 3. सात्वत 4. कापालिक

नीचे दिये गये कूट में से सही उत्तर का चयन करें :

कूट :

(a) 1,3,4 (b) 2,3,4 (c) 1, 2,4 (d) 1,2,3

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

315. 'नयनार' कौन थे?

(a) वैष्णव धर्मानुयायी (b) शैव धर्मानुयायी
(c) शाक्त (d) सूर्योपासक

उत्तर-(b) **UP RO/ARO (Pre) 2014**
UP UDA/LDA (Pre) 2006
UPPCS (Pre) Opt. History 2003

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

316. निम्नलिखित में से कौन वीरशैव सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में ख्यात है?

(a) बसव (b) लकुलीबा (c) निम्बार्क (d) शंकराचार्य

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2008, 1997**

व्याख्या : वीरशैव या लिंगायत सम्प्रदाय की स्थापना अल्लभप्रभु तथा उनके शिष्य बसव ने की थी। ये वर्णव्यवस्था के विपरीत व्यवहार करते थे तथा अपने गले में चाँदी का शिवलिंग धारण करते थे। इस सम्प्रदाय के 5 महापुरुष माने जाते हैं—रेणुकाचार्य, दारुकाचार्य, एकोरामाचार्य, पंडिताराध्य और विश्वाराध्य। इस मत में निष्काम कर्म को प्रधानता दी गई है।

317. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (आचार्य)	सूची-II (सिद्धान्त)
A. लकुलीश	1. आजीवक
B. नागार्जुन	2. शून्यवाद
C. भद्रबाहु	3. पाशुपत
D. गोसाल	4. जैन

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	2	3	4	1	(b)	3	2	4	1
(c)	1	2	3	4	(d)	3	1	4	2

उत्तर–(b) **UPPSC RO/ARO (Pre) 2017**

व्याख्या– सही सुमेल इस प्रकार है-

सूची-I (आचार्य)	सूची-II (सिद्धान्त)
लकुलीश	पाशुपत
नागार्जुन	शून्यवाद
भद्रबाहु	जैन
गोसाल	आजीवक

318. बौद्ध धर्म की आलोचना एवं वैदिक परम्परा के समर्थन करने के लिये विख्यात है?

(a) आर्यदेव (b) धर्म कीर्ति
(c) कुमारिल (d) उमास्वामी

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : दक्षिण भारत के दार्शनिक कुमारिल भट्ट पूर्व मीमांसा दर्शन के महत्त्वपूर्ण दार्शनिक थे। इन्होंने हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान के लिए कार्य किया तथा बौद्ध धर्म की जमकर आलोचना की। मीमांसा जिसे पूर्व मीमांसा कहा जाता है का उद्देश्य वैदिक कर्मकाण्डों के सम्बन्ध में निर्णय देना तथा उनकी दार्शनिक महत्ता को प्रतिपादित करना है। यह मत वेद को अपौरुषेय मानता है तथा अनेक प्रकार की युक्तियों द्वारा वेदों की प्रमाणिकता सिद्ध करने का प्रयत्न करता है। उपनिषद तथा वेदान्त उत्तरमीमांसा कहे जाते हैं क्योंकि इनमें कर्मकाण्डों के स्थान पर ज्ञान का विवेचन मिलता है। पूर्वमीमांसा के प्रणेता जैमिनी हैं। जिनका ग्रन्थ 'मीमांसा सूत्र' इस दर्शन का सूत्र है। कुमारिल भट्ट तथा प्रभाकर इनके अन्य दार्शनिक हैं जिनके नाम पर मीमांसा के दो स्वतन्त्र सम्प्रदायों का प्रचलन हो गया। मीमांसा का प्रधान विषय धर्म बताया गया हैं इसके अनुसार वेद ही धर्म के मूल हैं।

319. निम्नलिखित में से कौन अलवार सन्त नहीं था?

(a) पोयगई (b) तिरुज्ञान
(c) पूडम (d) तिरुमंगई

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 2013**

व्याख्या : छठी शताब्दी ई. में भक्ति आंदोलन का प्रारम्भ तमिल क्षेत्र से हुआ जो कर्नाटक और महाराष्ट्र में फैल गया। भक्ति आंदोलन का विकास बारह अलवार वैष्णव संतों और तिरसठ नयनार शैव संतों ने किया। प्रश्नानुसार अलवार संत पोयगई, पूडम तथा तिरुमंगई है तथा तिरुज्ञान प्रसिद्ध नयनार संत थे।

320.''आजीवक'' सम्प्रदाय के संस्थापक थे–

(a) आनन्द (b) राहुलोभद्र
(c) मक्खलि गोशाल (d) उपालि

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1996**
UPPCS (Pre) Opt. History 1998

व्याख्या : मक्खलि गोशाल महावीर के समकालीन थे, जिन्होंने बाद में **'आजीवक'** नामक स्वतंत्र सम्प्रदाय स्थापित किया। **आजीवक सम्प्रदाय** लगभग 1002 ई. तक बना रहा। इनका मत नियतिवाद (भाग्यवाद) कहा जाता है जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियन्त्रित एवं संचालित होती है। मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। महावीर के समान गोशाल भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे तथा जीव और पदार्थ को अलग–अलग तत्व मानते थे।

321. निम्नांकित में से कौन-सा प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित नहीं है?

(a) भागवत (b) भगवद्गीता
(c) ब्रह्मसूत्र (d) उपनिषद्

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) G.S. 1997**

व्याख्या : भागवत प्रस्थानत्रयी में शामिल नहीं है। वेदान्त दर्शन के तीन आधार हैं–उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता। इन्हें वेदान्त दर्शन की प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। इन्हें क्रमशः श्रुतिप्रस्थान, न्याय प्रस्थान और स्मृति प्रस्थान कहा जाता है। प्रस्थानत्रयी के भाष्यकारों में शंकराचार्य, रामानुज, मध्व, निम्बार्क और बल्लभ आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं व इनके दार्शनिक सिद्धान्तों को क्रमशः अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद और शुद्धाद्वैतवाद कहा जाता है।

05. मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire)

322. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही सुमेलित नहीं है?

(a) बरीद-संदेशवाहक (b) मुकद्दम-ग्राम का मुखिया
(c) सदका-दान (d) सरखेल-पैदल सेना का प्रमुख

UPPCS (J) 2022 (12-02-2023)

Ans. (d) : निम्नलिखित का सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है :-
बरीद - संदेशवाहक, मुकद्दम - ग्राम का मुखिया
सदका - दान, सरखेल - नौसेना का प्रमुख
सर-ए-नौबत - पैदल सेना का प्रमुख
नोट :- मराठा प्रशासन में पैदल सेना का गठन-
1. नायक - 9 सैनिक (पाइक)
2. हवलदार - 5 नायक
3. जुमलादार - 2 या 3 हवलदार
4. एक हजारी - 10 जुमलादार
5. एक पंचहजारी - 5 एक हजारी
6. एक सप्तहजारी - 7 हजारी

323. मौर्यकाल में सदैव राजा के पास रहने वाले विष परीक्षक वैद्य को, निम्नलिखित में से क्या कहा जाता था ?

(a) जांगलिविद (b) आतवर्शिक
(c) दौवारिक (d) विविताध्यक्ष

UPPSC Ayuvedacharya-2022

Ans. (a) : मौर्यकाल में सदैव राजा के पास रहने वाले विष परीक्षक वैद्य को 'जांगलविद' कहा जाता है।

324. अशोक के द्वितीय शिलालेख में निम्नलिखित में से किसका उल्लेख नहीं हुआ है?

(a) चोल (b) पाण्ड्य
(c) सातवाहन (d) सतियपुतो

UP APO (Spl.)-2007

Ans. (c) द्वितीय शिलालेख में अशोक अपनी दक्षिणी सीमा पर स्थित चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्र, केरल पुत्त तथा ताम्रपर्णि के नाम बताता है। ये सभी तमिल राज्य थे तथा उसके साम्राज्य के बाहर थे।

325. अफगानिस्तान के कम से कम कुछ हिस्से निम्नांकित के राज्य में सम्मिलित थे

(a) महापद्मनन्द (b) अशोक
(c) समुद्रगुप्त (d) हर्ष

UP APO-2006

Ans. (b) : सेल्यूकस ने मौर्य राजवंश के प्रथम शासक चन्द्रगुप्त मौर्य को आरकोसिया (कान्धार) और पेरोपनिसडाई (काबुल) के प्रान्त तथा एरिया (हेरात) एवं जेडोसिया के कुछ भाग दिये थे। ये भूभाग अशोक की साम्राज्य सीमा में बने रहे।

326. मौर्य प्रशासन में ''रूपदर्शक'' नामक पदाधिकारी उत्तरदायी था

(a) अन्तःपुर की व्यवस्था के लिए
(b) धर्म प्रचार के लिए
(c) मुद्राओं (coins) के परीक्षण के लिए
(d) कारीगरों के निरीक्षण के लिए **UP APO-2006**

Ans. (c) : मौर्य प्रशासन में रूपदर्शक नामक पदाधिकारी मुद्राओं के परीक्षण के लिए उत्तरदायी था। अन्तर्वेदिक अन्तःपुर का रक्षाधिकारी था। धर्म महामात्र धर्म प्रचार एवं उद्दण्ड क्रिया-कलापों को नियंत्रित करने के लिए उत्तरदायी था।

327. चाणक्य का अन्य नाम था–

(a) भट्ट स्वामी (b) राजशेखर
(c) विष्णुदत्त (d) विशाखदत्त

UP APO-2002

Ans: (c) चाणक्य के तीन नाम थे—चाणक्य, विष्णुगुप्त और कौटिल्य। ये चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार के प्रमुख थे। कौटिल्य अर्थशास्त्र नामक पुस्तक के लेखक हैं। यह पुस्तक राजनीति से सम्बन्धित है। इसमें मौर्य के शासन व्यवस्था का उल्लेख है।

328. निम्नांकित में से कौन-सा शासक मौर्य राजवंश से सम्बन्धित नहीं है?

(a) चन्द्रगुप्त मौर्य (b) बिम्बिसार
(c) अशोक (d) बृहद्रथ

UP APO 2018

Ans. (b) : बिम्बिसार (544–492 ई.पू.) हर्यंक वंश का संस्थापक था। उसे मगध साम्राज्य की महत्ता का वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है। इसके अतिरिक्त चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक तथा बृहद्रथ मौर्य राजवंश से संबंधित थे।

329. निम्नलिखित में से अशोक का कौन सा शिलालेख पाँच यवन राज्यों में धर्म प्रचारकों के भेजने का वर्णन करता है?

(a) शिलालेख III (b) शिलालेख VIII
(c) शिलालेख X (d) शिलालेख XIII

UP APO-2011

Ans. (d) : अशोक के 13वें शिलालेख में पाँच यवन राज्यों में धर्म प्रचारकों के भेजने का वर्णन मिलता है जिसमें तुलामाया (मिस्र का टॉलमी द्वितीय फिलाडेल्फस), अंतेकिन (मकदूनिया का एण्टिगोनस गोनेटस), मक (साइरीन का मैगास), आलिक्य सुंदर या आलिक्य शुदल (एपिरस का अलेक्जेण्डर), और अन्तियोक नामक यवन राजा राज्य करते थे।

330. सिकंदर के आक्रमण के समय किस भारतीय राज्य में द्वैध-राज्य प्रथा थी?

(a) पाटल (b) फेगेला
(c) गन्दारिस (d) सिबोई

UPPCS (J) 2015

Ans. (a) : सिकन्दर के आक्रमण के समय 'पाटल' भारतीय राज्य में द्वैध राज्य प्रथा थी। सिकन्दर मैसीडोनिया के क्षत्रप फिलिप द्वितीय का पुत्र था। इन्होंने 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण किया। वितस्ता (झेलम) का युद्ध सिकन्दर एवं पोरस के मध्य हुआ। 323 ई.पू. में इसकी मृत्यु हो गयी।

331. निम्नलिखित में से किस राजवंश के शासकों के सीरिया एवं मिस्त्र जैसे सुदूर देशों से राजनायिक सम्बन्ध थे?

(a) मौर्य (b) गुप्त
(c) पल्लव (d) चोल

UPPCS (J) 2013

Ans. (a) : मौर्य राजवंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी। मौर्य वंशीय शासक अशोक के उसके समकालीन विदेशी राजाओं के साथ राजनायिक संबंध थे। जैसे- सीरिया के राजा एंटीयोकस द्वितीय थियोस, मिस्त्र के राजा टॉलमी फिलाडेल्फस, मकदूनिया के राजा एंटिगानेस आदि। इन देशों के राजाओं से उनका राजनायिक संबंध था।

332. 'धर्महामात्र' की नियुक्ति सर्वप्रथम किस भारतीय शासक के द्वारा की गई?

(a) चन्द्रगुप्त मौर्य (b) समुद्रगुप्त
(c) हर्षवर्धन (d) अशोक

UPPCS (J) 2018

Ans. (d) : सम्राट अशोक मौर्य शासक बिन्दुसार का पुत्र था दक्षिण भारत से प्राप्त मॉस्की एवं गुर्जरा अभिलेखों में उसका नाम अशोक तथा पुराणों में 'अशोक वर्द्धन' मिलता है। अभिलेखों में अशोक को 'देवानामप्रिय' तथा 'देवनाम प्रियदर्शी' उपाधियों से विभूषित किया गया। धम्म महामात्र/'धर्म महामात्र' सम्राट अशोक के वे उच्च अधिकारी थे जो अशोक द्वारा प्रचारित धर्म सम्बन्धी मामलों और कार्यों की देखभाल करते थे।

333. कथन (A): फाह्यान ने उल्लेख किया है कि भारत का कोई भी सम्मानित व्यक्ति माँस नहीं खाता था।

कारण (R): अशोक का युग शाकाहार के विकास की दृष्टि से मील का पत्थर था।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिये-

कूटः

(a) A और R दोनों सही है तथा R A की सही व्याख्या करता है।
(b) A और R दोनों सही है लेकिन R A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) A सही है R गलत है
(d) A गलत है R सही है

UPPCS (J) 2016

Ans. (c) : चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार भारत में सम्मानित व्यक्ति मांस, मदिरा, प्याज एवं लहसुन का सेवन नहीं करते थे। कथन सही है। अशोक का युग शाकाहार के विकास की दृष्टि से मील का पत्थर था, सही नहीं है क्योंकि अशोक के लाख प्रयासों के बाद भी लोगों द्वारा जीवों का शिकार किया जाता था। अशोक के पाकशाला में भी कुछ पशुओं का वध किया जाता था। अतः अशोक का युग शाकाहार के विकास की दृष्टि से मील का पत्थर नहीं माना जा सकता।

334. निम्न में से किस एक इतिहासकार ने अशोक का इतिहास केवल अभिलेखों के आधार पर लिखा है?

(a) भण्डारकर (b) राजबलि पाण्डेय
(c) आर. सी. मजूमदार (d) एन. एन. घोष

UPPCS (J) 2006

Ans. (a) : इतिहासकार डी.आर. भण्डारकर ने अशोक का इतिहास केवल अभिलेखों के आधार पर लिखने का प्रयास किया है। जार्ज टर्नर ने सर्वप्रथम प्रियदर्शी की पहचान सम्राट अशोक से की। बीडल महोदय ने सर्वप्रथम मास्की लघु शिलालेख में अशोक का नाम पढ़ा।

335. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए –

सूची-I	सूची-II
A. चन्द्रगुप्त	1. प्रियदर्शी
B. बिन्दुसार	2. सेन्ड्रोकोट्टस
C. अशोक	3. अमित्रघात
D. चाणक्य	4. विष्णुगुप्त

कूट :

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	2	3	4	1	(b)	1	3	2	4
(c)	2	3	1	4	(d)	3	4	2	1

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 2003**

व्याख्या : यूनानी लेखकों ने मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य को 'एंड्रोकोटस', 'सेंड्रोकोटस' आदि नामों से अभिहित किया है। बिन्दुसार (298 ईसा पूर्व से 273 ईसा पूर्व तक) चन्द्रगुप्त के मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा। यूनानी लेखकों ने उसे 'अमित्रोकेडीज' कहा है जिसका संस्कृत रूपांतर 'अमित्रघात' (शत्रुओं को नष्ट करने वाला) होता है। अशोक (273-232 ईसा पूर्व) - बिन्दुसार की मृत्यु के बाद से मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। उसके अभिलेखों में सर्वत्र उसे 'देवानांप्रियम्', 'देवानांपियदसि', 'राजा' तथा प्रियदर्शी के रूप में सम्बोधित किया गया है। मास्की, गुर्जरा, नेत्तुर तथा उदेगोलम में उसका नाम अशोक मिलता है। चाणक्य - चन्द्रगुप्त तथा बिन्दुसार का प्रधानमंत्री था। अर्थशास्त्र के लेखक चाणक्य का नाम विष्णुगुप्त भी था वह तक्षशिला का ब्राह्मण था।

336. निम्नलिखित में से किस स्त्रोत/स्त्रोतों से विदित होता है कि कलिंग में अशोक ने घमासान युद्ध किया?

1. अशोक का पृथक कलिंग शिलालेख
2. अशोक का तेरहवां शिलालेख
3. दीपवंश
4. दिव्यावदान

नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1, 2 एवं 3 (d) 1, 2, 3 एवं 4

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

व्याख्या : कलिंग युद्ध तथा इसके परिणामों के विषय में अशोक के **तेरहवें शिलालेख** से विस्तृत सूचना प्राप्त होती है। विजयोपरांत कलिंग में दो अधीनस्थ प्रशासनिक केंद्र स्थापित किये गये–(1) उत्तरी केन्द्र (राजधानी तोसलि) तथा (2) दक्षिणी केंद्र (राजधानी-जौगढ़)। कलिंग का प्राचीन राज्य वर्तमान दक्षिणी उड़ीसा में स्थित था। कलिंग अशोक इस राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाने में सफल रहा। दुर्भाग्यवश किसी भी साक्ष्य से हमें कलिंग के शासक का नाम ज्ञात नहीं होता है। तेरहवें शिलालेख में इस युद्ध के भयानक परिणामों का इस प्रकार उल्लेख हुआ है – इसमें एक लाख 50 हजार व्यक्ति बन्दी बनाकर निर्वासित कर दिये गये, एक लाख लोगों की हत्या की गयी तथा इससे भी कई गुना अधिक मर गये। युद्ध में भाग न लेने वाले ब्राह्मणों, श्रमिकों तथा गृहस्थों को अपने सम्बन्धियों के मारे जाने से महान कष्ट हुआ। सम्राट ने इस भारी नरसंहार को स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

337. तीर्थयात्रा के समय सम्राट अशोक निम्नलिखित स्थानों पर गए। उन्होंने किस मार्ग से अनुगमन किया?

1. गया 2. कपिलवस्तु 3. कुशीनगर
4. लुम्बिनी 5. सारनाथ 6. श्रावस्ती

कूट :

(a) 1, 2, 3, 4, 5 तथा 6 (b) 1, 3, 4, 2, 5 तथा 6
(c) 4, 5, 6, 3, 2 तथा 1 (d) 4, 2, 1,5,6 तथा 3

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) G.S. 1999**

व्याख्या : अशोक ने विहार यात्रा के स्थान पर धम्म यात्राएं प्रारम्भ की। अशोक की धम्म यात्राओं का क्रम बौद्ध ग्रंथ दिब्यवदान में दिया गया है जिसका क्रम है- लुम्बिनी, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ, श्रावस्ती और कुशीनगर।

338. 'देवानांप्रिय' की उपाधि धारण की थी :

1. अशोक ने 2. दशरथ ने
3. सम्प्रति ने 4. बृहद्रथ ने

नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) केवल 1 (b) 1 एवं 2

(c) 1 एवं 3 (d) 1, 2, 3 एवं 4

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2006**

व्याख्या : मौर्य सम्राट अशोक, 273 ई. पू. के लगभग मगध के राजसिंहासन पर बैठा। उसके अभिलेखों में सर्वत्र उसे 'देवानांप्रिय', देवानांप्रियदसि तथा राजा आदि की उपाधियों से सम्बोधित किया गया है। अशोक के उत्तराधिकारियों में दशरथ भी अशोक की तरह 'देवानांप्रिय' की उपाधि धारण करता था।

339. ईस्वी सन् के पूर्व की कुछ शताब्दियों में निम्नलिखित में से किन शासकों ने गिरनार क्षेत्र में जल संसाधन व्यवस्था की ओर ध्यान दिया?

1. महापद्म नन्द 2. चन्द्रगुप्त मौर्य

3. अशोक 4. रुद्रदामन

नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) 1, 2 (b) 2, 3

(c) 3, 4 (d) 2, 3, 4

उत्तर-(b) **UP UDA/LDA (Pre) 2006**

UPPCS (Mains) G.S.2002

UPPCS (Mains) G.S. I[st]2002

व्याख्या : ईस्वी सन् के पूर्व की कुछ शताब्दियों में चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक ने गिरनार क्षेत्र में जल संसाधन व्यवस्था की ओर ध्यान दिया था। ईस्वी सन् के पश्चात् शक शासक रुद्रदामन ने भी सुदर्शन झील की मरम्मत कराई तथा गिरनार क्षेत्र में जल संसाधन व्यवस्था पर ध्यान दिया। आगे स्कंदगुप्त ने भी सौराष्ट्र (गिरनार) में जल संसाधन व्यवस्था पर पर्याप्त धन दिया।

340. निम्नलिखित में से किन राजाओं ने सौराष्ट्र अंचल में जल संसाधन व्यवस्था पर पर्याप्त धन दिया?

1. चन्द्रगुप्त मौर्य 2. अशोक

3. रुद्रदामन 4. स्कन्दगुप्त

नीचे के कूट से सही उत्तर निर्दिष्ट कीजिए–

(a) 1 एवं 2 (b) 3 एवं 4

(c) 2, 3 एवं 4 (d) 1, 2, 3 एवं 4

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 2005**

UPPCS (Pre) G.S.2014

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

341. कथन (A) : अशोक ने कलिंग को मौर्य साम्राज्य में जोड़ लिया था।

कारण (R) : कलिंग दक्षिण भारत को आने वाले स्थलीय एवं समुद्री मार्गों को नियंत्रित करता था।

कूट :

(a) A और R दोनों सही हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है

(b) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही स्पष्टीकरण नहीं है

(c) A is true, but R is false/A सही है, परन्तु R गलत है

(d) A गलत है, परन्तु R सही है

उत्तर-(a) **UP Lower (Pre) 2002**

व्याख्या : कलिंग विजय मगध तथा भारतवर्ष के इतिहास में एक सीमा चिह्न है। यह विजय तथा साम्राज्यवादी विस्तार की उस नीति का अंत करती है, जिसका आरम्भ बिम्बिसार ने अंग देश पर विजय प्राप्त करके किया था। अशोक ने अपने अभिषेक के आठवें वर्ष (261 ई. पू.) में कलिंग पर चढ़ाई की थी। अशोक के 13वें वृहद् शिलालेख में कलिंग युद्ध और वहां के विनाश का वर्णन है। कलिंग उस समय एक प्रबल एवं शक्तिशाली राज्य था, जो अशोक के समय एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित था। प्राचीन भारत में कलिंग का महत्त्व भौगोलिक एवं सामुद्रिक मार्ग की दृष्टि से अत्यधिक था। इसी कारण अशोक के कलिंग अभियान का उद्देश्य स्थलीय एवं समुद्री व्यापार मार्ग पर अधिकार करना था। उसने कलिंग को विजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया था।

342. कथन (A) : मौर्यकालीन शासकों ने धार्मिक आधार पर भू-अनुदान नहीं दिया था।

कारण (R) : भू-अनुदान के विरुद्ध कृषकों ने विद्रोह किया।

सही उत्तर का चयन नीचे दिये कूट की सहायता कीजिए–

(a) A या R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है

(b) A या R दोनों सही है, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है

(c) A सही है, परन्तु R गलत है

(d) A गलत है, परन्तु R सही है

उत्तर-(c) **UPPCS (Mains) Spl. G.S. 2004**

व्याख्या : मौर्यकालीन शासकों ने धार्मिक आधार पर भू-अनुदान नहीं दिया था। सर्वप्रथम ब्राह्मणों को भूमि अनुदान की प्रथा का आरम्भ सातवाहन वंश (आन्ध्र वंश) के शासकों ने किया था। भूमि अनुदान के विरुद्ध कृषक विद्रोह का विवरण इतिहास में नहीं मिलता। अतः कथन (a) सही है और कारण (R) गलत है।

343. कथन (A) : मौर्य साम्राज्य का पतन अशोक के बाद प्रारम्भ हो गया।

कारण (R) : अशोक ने धम्म-विजय की नीति का अनुसरण किया और अपनी सेना विघटित कर दी।

उपरोक्त वक्तव्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) तथा (R) दोनों सही हैं किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सही है, किन्तु (R) गलत है।

(d) (R) सही है किन्तु (A) गलत है।

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : मौर्य साम्राज्य का पतन अशोक की मृत्यु के पश्चात् आरम्भ हो गया। इसका मुख्य कारण योग्य उत्तराधिकारियों का अभाव, प्रशासन का अधिकाधिक केन्द्रीकरण, आर्थिक एवं सांस्कृतिक असमानता, पदाधिकारियों द्वारा जनता पर अत्याचार आदि था। अशोक ने धम्म विजय का अनुसरण किया तथा इसके प्रचार-प्रसार के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी। लेकिन यह तथ्य सही नहीं है कि उसने बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अपनी सारी सेना को भंग कर दिया। क्योंकि अभिलेखों में इस बात की जानकारी मिलती है कि उसकी सैन्य शक्ति पूर्व की भांति विद्यमान थी। अतः प्रश्न का कथन तो सही है, लेकिन कारण असत्य है।

344. अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों में से कौन सही नहीं है–

(a) यह राजा के कर्त्तव्यों को निर्दिष्ट करता है

(b) यह देश के उस समय के आर्थिक जीवन का वर्णन करता है

(c) यह राजनीति के सिद्धान्त स्थापित करता है

(d) यह वित्तीय सुधारों की आवश्यकता पर बल देता है

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1994**

UPPCS (Mains) G.S. I[st] 2012

व्याख्या : अर्थशास्त्र मूलतः राजनीतिशास्त्र की पुस्तक है। इसके प्रमुख प्रतिपाद्य विषय - राजा, राज्य व राजनीतिक व्यवस्था इत्यादि हैं। इसमें राज्य के आर्थिक स्रोतों के बारे में तो चर्चा है, परन्तु यह तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था का वर्णन नहीं करता। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' की तुलना मैकियावली के 'प्रिंस' से प्रायः की जाती है।

345. निम्नांकित में से किसकी तुलना मैकियावेली के 'प्रिंस' से की जा सकती है–

(a) कालिदास का 'मालविकाग्निमित्रम्'
(b) कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र'
(c) वात्स्यायन का 'कामसूत्र'
(d) तिरुवल्लुवर का 'तिरुक्कुरल'

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) G.S. 1994**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

346. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ उल्लेख करता है कि अशोक श्रीनगर (कश्मीर) का संस्थापक था?

(a) दिव्यावदान (b) महावंश
(c) दीपवंश (d) राजतरंगिणी

उत्तर-(d) **UPPCS (Pre) Opt. History 1998**

व्याख्या : अशोक एक महान निर्माता था। बौद्ध परम्परा के अनुसार उसने 84 हजार स्तूपों का निर्माण कराया, बराबर की गुफाओं में आजीवकों के लिये गुफाओं का निर्माण कराया। कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार उसने कश्मीर में श्रीनगर तथा नेपाल में देवपाटन नामक नगर बसाया था। दिव्यावदान बौद्ध ग्रन्थ है जिसमें अशोक की माँ का नाम सुभ्रदांगी मिलता है। सिंहली अनुश्रुतियों दीपवंश- महावंश के अनुसार अशोक को उसके शासन के चौथे वर्ष में निग्रोध नामक भिक्षु ने बौद्धमत में दीक्षित किया।

347. वह यूनानी शासक जिसको चन्द्रगुप्त मौर्य ने पराजित किया था कहाँ से शासन कर रहा था?

(a) मिस्र (b) सीरिया (c) मकदूनिया (d) एथेन्स

उत्तर-(b) **UPPCS (Pre) Opt. History 2007**

व्याख्या : यूनानी शासक सेल्युकस, चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित हुआ, जो सीरिया का शासक था। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् उसके पूर्वी प्रदेशों का उत्तराधिकारी सेल्युकस था। सेल्युकस ने बेबीलोन तथा बैक्ट्रिया को जीतकर पर्याप्त शक्ति अर्जित कर ली थी। उधर चन्द्रगुप्त मौर्य अपने साम्राज्य निर्माण में व्यस्त था। 305 ई. पू. के आस-पास सेल्युकस जो इस समय सीरिया से शासन कर रहा था, अपने पूर्वी अभियान के क्रम में सिन्धु नदी को पार कर चन्द्रगुप्त से आ टकराया। लेकिन दोनों के बीच सन्धि तथा वैवाहिक सम्बन्धों की स्थापना का उल्लेख मिलता है। इस विवरण से यही स्पष्ट होता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्युकस को पराजित किया था।

348. चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्युकस को किस वर्ष में पराजित किया था?

(a) 317 ई.पू. (b) 315 ई.पू. (c) 305 ई.पू. (d) 300 ई.पू.

उत्तर-(c) **UPPSC RO/ARO (Mains) 2014**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

349. निम्नलिखित में से किसने यह कहा कि, चन्द्रगुप्त मौर्य ने छः लाख सैनिकों की सहायता से सम्पूर्ण भारत पर आक्रमण और अधिकार किया?

(a) जस्टिन (b) स्टैबो (c) प्लूटार्क (d) डिमैकस

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2010**

व्याख्या : मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त को नन्द वंश के उन्मूलन तथा पंजाब सिन्ध में विदेशी शासन का अंत करने का ही श्रेय नहीं है वरन् उसने भारत के अधिकांश भाग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। प्लूटार्क ने लिखा है कि चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सेना लेकर समूचे भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था। जस्टिन के अनुसार सारा भारत उसके कब्जे में था। यूनानी रोमन साहित्य में चन्द्रगुप्त को सैन्ड्रोकोटस कहा गया है जिसका समीकरण चन्द्रगुप्त से विलियम जोन्स ने स्थापित किया।

350. यूनानी रोमन साहित्य के 'सैन्ड्रो कोट्टस' का समीकरण किसने चन्द्रगुप्त मौर्य से किया?

(a) डी.आर. भण्डारकर (b) अलेक्जेण्डर कनिंघम
(c) आर.पी. चन्दा (d) विलियम जोन्स

उत्तर-(d) **UPPSC AE- 2007 (I)**
UPPCS (Pre) Opt. History 2009

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

351. अभिलेख जिससे यह प्रमाणित होता है कि चन्द्रगुप्त का प्रभाव पश्चिम भारत पर था, है–

(a) कलिंग अभिलेख (b) अशोक का गिरनार अभिलेख
(c) रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख
(d) अशोक का टोपरा शिलालेख

उत्तर-(c) **UPPCS (Pre) G.S. 1996**

व्याख्या : चन्द्रगुप्त मौर्य का पश्चिम में अधिकार था इसका प्रमाण उसके किसी अभिलेख में नहीं है बल्कि **रुद्रदामन का जूनागढ़** शिलालेख से हमें पता चला है। जूनागढ़ शिलालेख से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने पश्चिमी प्रान्त के गवर्नर **पुष्यगुप्त वैश्य** को सौराष्ट्र प्रान्त में एक झील का निर्माण करने की आज्ञा दी थी। यही झील सुदर्शन झील के नाम से इतिहास में विख्यात है। इस झील का निर्माण कार्य सम्राट **अशोक** के काल में उसके गर्वनर तुशास्प के समय में हुआ जब यहां से नहर निकाली गयी थी। रुद्रदामन के समय में इसका बांध टूट गया था जिसकी मरम्मत रुद्रदामन ने अपने राज्यपाल सुविशाख से करवाया। **स्कन्दगुप्त** ने भी इस बांध का मरम्मत कार्य किया था।

352. चन्द्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र का राज्यपाल कौन था?

(a) बिन्दुसार (b) अशोक
(c) वैश्य पुष्यगुप्त (d) यवनराज तुषाष्य

उत्तर (c) **UPPCS (Pre) Opt. History 2001**

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

353. निम्नलिखित में से किस अभिलेख में चन्द्रगुप्त और अशोक दोनों का उल्लेख किया गया है?

(a) गौतमीपुत्र सातकर्णि की नासिक प्रशस्ति
(b) महाक्षत्रप रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
(c) अशोक का गिरनार अभिलेख
(d) स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख

उत्तर-(b) **UP Lower (Pre) 2004**
UPPCS (Pre) Spl. Opt. History 2008
UPPCS (Mains) G.S. 2016

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

354. निम्नलिखित में से किस राजवंश के शासक सीरिया जैसे पश्चिम में दूर के देशों के साथ राजनय सम्बन्ध रखते थे?

(a) मौर्य (b) गुप्त (c) पल्लव (d) चोल

उत्तर-(a) **UPPCS (Pre) Opt. History 2009**

व्याख्या : मौर्य राजवंश के शासक सीरिया जैसे पश्चिम में दूर के देशों के साथ राजनय सम्बन्ध रखते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय **सीरिया के शासक सेल्युकस** ने अपना राजदूत मेगस्थनीज मौर्य दरबार में भेजा था। स्ट्रेबो के अनुसार सीरिया नरेश एन्टियोकस ने डाइमेकस नामक एक राजदूत बिन्दुसार की राजसभा में भेजा था। यह मेगस्थनीज के स्थान पर आया था। एथेनियस नामक एक अन्य यूनानी लेखक ने बिन्दुसार और सीरिया के राजा एन्टियोकस प्रथम के बीच एक मैत्रीपूर्ण पत्र-व्यवहार का विवरण दिया है। अशोक के अभिलेखों में भी एन्टियोकस नामक सीरियाई नरेश का उल्लेख मिलता है।